✻ श्री सीतारामाभ्यां नमः ✻

# जन्मोत्सव बधाई पदावली

गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमा कंद।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर वृन्द ॥

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

।। श्री सीतारामाभ्यां नमः ।।

# जन्मोत्सव बधाई पदावली

## आचार्य पीठ श्री लक्ष्मण किला

श्री अयोध्या जी, फैजाबाद

Scanned by CamScanner

- जन्मोत्सव बधाई पदावली
  श्रीराम नवमी वर्ष, 2010

- प्रति - 2000

- प्राप्ति स्थल :
  कार्यालय श्री लक्ष्मणकिला
  श्री अयोध्या, फैजाबाद
  मो. : 9415062831

- प्रकाशक :
  स्वामी सीतारामशरण सेवा संस्थान
  श्री हनुमान धाम, श्रीकृष्ण बलराम हॉल,
  आशियाना मेन रोड, पटना - 800025
  दूरभाष : 0612-3584648

- मूल्य : 30/- (तीस रुपये)

- मुद्रक : दीपक प्रेस, तारागंज पुल,
  लश्कर,ग्वालियर फोन : 0751-2438668


Scanned by CamScanner

।। श्री रसिकेन्द्र विहारिणे नमः ।।

# भूमिका

श्री सीतारामचरणानुरागी श्रीवैष्णवों के लिए नाम–रूप–लीला और धाम का अहर्निश सेवन ही परमधर्म है। इष्ट के चरित्र का अनुस्मरण, उत्सव–समैया के माध्यम से प्रभु लीलाओं में प्रवेश की साधना आचार्यों की परम्परा रही है। इसी क्रम में उपासना निरत पूर्वाचार्यों ने प्रभु श्री राघवेन्द्र की जन्मलीला का दर्शन किया है और तत्सम्बन्धी विशिष्ट साहित्य की रचना की है। पूज्यपाद गोस्वामी जी महाराज, श्रीकृपानिवास जी, स्वामी श्री करुणा सिन्धु जी महाराज, श्री युगलप्रिया जी महाराज, पूज्य स्वामी श्री यगुलान्यशरण जी महाराज, पं. श्री जानकीवरशरण जी महाराज तथा श्री सियाअलीजी प्रभृति अनेक भावुक संत इस रीति से उपासना करते रहे हैं। पूज्य आचार्यों की यह महावाणी वैष्णव सम्प्रदाय की महत्तर सम्पत्ति है। साधक इन पदों का गान करते हुए भाव–समाधि द्वारा अपने देश–काल को विस्मृत कर प्रभु–सन्निधि के आस्वाद में डूबे रहते हैं। जन्मोत्सव बधाई के पदों का गान करते हुए मन्दिरों में जन्म महोत्सव सम्पन्न होता है। श्रीराम जी, श्री किशोरी, श्री हनुमान जी व अन्य पूवाचार्यों की बधाई युक्त यह पदावली पूर्वकाल से ही प्रकाशित होती आ रही है। इसी का यह नया संस्करण है। अनुरागीजन इससे पदों का गान करते हुए प्रभु जन्मोत्सव के उस आनन्द–सरोवर में निमज्जन कर सकेंगे जिसकी फलश्रुति बताते हुए श्री गोस्वामीपाद ने कहा है –

**भरत राम रिपुदवन लखन के चरित सहित अन्हवैया।**
**'तुलसी' तब के से अजहुँ ज़ानिबे रघुबर नगर बसैया ।।**

इस संस्करण के प्रकाशन में जिनका श्रम–सहयोग सन्निहित है। उन सभी के लिए मंगलकामन ।

**श्री रामनवमी 2010** **– मैथिलीरमण शरण**

Scanned by CamScanner

# अकरादि क्रम से पद सूची


पद पृष्ठ

## अ

अवध आजु आगमी एक............8
अखिल लोक श्री उदय भई .....40
अवधपुर मंगल धुनि..............59
अब मोहि चन्द्रकलाजू की.......83
अब मोहि चारुशिलाजू की ......87
अंजनि छोना हो तेरो युग ........97
अंजनी नन्दन तुम पर..........107
अंजनी प्रातः समय आनन्द...105
अंजनी सुवन जाय .............113
अंजनी माई तेरो सुत...........114
अंजनि लालन गोद.............115
अति सुखद रूप अनूप.........136

## आ

आजु सुदिन सुभ घरी सुहाई ......1
आजु महामंगल कोसलपुर.........5
आजु महारानी सों झगरत .......10
आजु अवधपुर मंगल घर–घर..13
आजु नगारे की धुनि.............17
आज उनमादियाँ वे बधैया.......19
आँगने में बधैया बाजे ............32
आई–आई छठी दिन आज .....33
आजु महामंगल मिथिलापुर .....40

पद पृष्ठ

आज जनक नृप राजसदन ......41
आज सखी एक बात नगर .......45
आजु जनकपुर बजत बधाई.....46
आजु जयन्ती श्री चन्द्रकला.....74
आजु बधाई रंग भरि बाजी ......86
आजु सुभ जन्म श्रीमानसर......89
आवो–आवो सखी समुदाई.....97
आज परम मंगल जग माई .......98
आरति हनुमत पवन कुँवर..... 106
आजु केशरी भवन भयो ......109
आजु केशरी भवन बधाई ......109
आज परम मंगल द्विजवर...... 118
आजु बधाई श्री सतगुरु........120
आचारज को जन्म .............121
आज महामंगल रसिक.........139

## उ, ए

उर उमगि बधाई बाजे ............29
एक दिवस आनन्द भयो .........77

## क

कौशिल्या के सुवन भयो.........11
कौशिल्या रानी तुम सम .........25
कौशिल्या मैया चिरजीवो........26
कोई खेल खिलौना ल्योरी.......63


Scanned by CamScanner

पद पृष्ठ

करु मन चारुशिला पद ..........86
करु मन चारुशिला पद ध्यान...87
किलोलत श्री अंजनि के गोद 102
कातिक मास असित तिथि ...108
कपि केशरीनन्दन जन्म .......114

## ख, ग

खेलत मोरी लाडिली झुन. ......63
गावैं बिबुध विमल वर वानी ........6
गावत मंगल मिथिलापुर की .....44
गावो–गावो सहित अनुराग......60
गावो री बधाइयाँ ..................79
गावो री सहेली मंगलचार ........85
गावो–गावो सहेली आज ........98

## घ

घर–घर मंगलचार जनकपुर ....79
घर–घर मंगलचार सोहावन ..109

## च

चलो सखि हरषतावल में ........20
चुपरि उबटि अन्हवाइ कै .........22
चलायो रानी परमेश्वर पर .......25
चलो री सखो देखि आवैं.........31
चलन सिखावैं मातु ललन.......35
चन्दा माँगें रामलला .............36

पद पृष्ठ

चलो री सब देखि आवैं...........37
चरणगति चलति हैं प्यारी........57
चलीं छाँड़ि सकल गृह काज.....59
चिरजीवो हमारी दुलारी..........62
चन्द्रकलाजू के नवल कुञ्ज में ..71
चन्द्रभानुजी के कुँवरि प्रगट ....73
चन्द्रकलाजू की बरष गाँठ .......73
चन्द्रप्रभाजू कि सुकृत सुवेली ...81
चन्द्रप्रभाजू के द्वारे................81
चिरजीवौ सदा चन्द्रभानु.........83
चलीं गजगामिनी सजके .........88
चली सरि देव धुनि धारा .........90
चलो घर केशरी कपि के .......111
चलो री आज सज धज के.....126
चलो सखि सोहिलो गावैं ......141
चलो री सब देखि आवैं ........142

## छ, ज

छोटी–छोटी गोड़ियाँ अंगु. ......24
जा दिन नहाय बैठों राम..........26
जा दिन सीता जनम भयो........41
जनकराय के कुँवरि प्रगट .......47
जय जय जय श्री स्वामिनि ......51
जनकराय के मोद बढ़ायो........52
जनकसुता भइ आज काज......55


Scanned by CamScanner

| पद | पृष्ठ |
|---|---|
| जनकललीजू को सोहिलो | 58 |
| जै जै श्री चन्द्रकला सिय | 68 |
| जा दिन चन्द्रकला अलि | 72 |
| जै श्री चन्द्रकला अलबेली | 78 |
| जब लहि बाल बरन दुति | 79 |
| जै श्री चन्द्रकला सुखदाई | 80 |
| जै श्रीचन्द्रकले | 83 |
| जै सर्वेश्वरी चन्द्रकला जू | 83 |
| जय जय वाशिष्ठी हरिहर | 91 |
| जेठ पूर्णिमा मंजु महासुख | 92 |
| जियै सुत तेरो केशारि | 116 |
| जनम सुनि अंजनि सुत | 101 |
| जानकी राम कृपा की | 102 |
| जुग-जुग जीवै तेरो लाल | 112 |
| जियो-जियो महरानी | 115 |
| जनम दिन आजु लखु | 126 |
| जै जैकार श्रीसतगुरु | 128 |
| जयति-जयति हेमलते | 143 |
| **ठ, ड, ढ** | |
| ठुमुकि-ठुमुकि पग चाल | 36 |
| डगर-डगर बिच मिथिला | 58 |
| ढाढिनि निमिवंशिन की | 18 |
| ढाढिनि रघुवंशिन की आई | 53 |
| **त** | |
| तेरी लली चिरजीवो री | 62 |

| पद | पृष्ठ |
|---|---|
| **द, न** | |
| दशरथ मन्दिर राम जनम | 10 |
| दृग लागो अंजनि को | 105 |
| देखि चरित मोहि अचरज | 110 |
| दिवस यह परम सुहावन | 141 |
| नृप दशरथ के पुत्र भयो | 9 |
| न लैहौं महारानीजू कर | 30 |
| नृप आँगन में खेलत रामलला | 31 |
| नगर-बगर में धूम सुघर घर | 43 |
| नमो-नमो श्रीजनकललीजू | 46 |
| नाचे-नाचे नवेली नारि | 60 |
| नगर की नीकी-नीकी लुगाइयाँ | 64 |
| **प** | |
| पगनि कब चलिहौ चारो | 23 |
| पलना नीको बनो री माई | 27 |
| प्रियपुर चहुँ ओर बाजे | 28 |
| पगन कब चलिहौ मेरी | 61 |
| प्रगटी सखी चन्द्रकला | 82 |
| प्रगटी लली मिथिलापति | 61 |
| परम सोहाई बजत बधाई | 99 |
| पवन-सुवन मन भावन | 100 |
| पालने झूलें रंग सो अंजनि | 107 |
| प्रगट भये जा दिन सतगुरु | 123 |
| **ब** | |


Scanned by CamScanner

| पद | पृष्ठ | पद | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| बाजत आजु आनन्द बधाई | 12 | बधाई सुर वधू गाई | 90 |
| बधाई अवधेश के बाजै | 20 | बधाई आज छवि छाई | 90 |
| बधाई प्यारी बाजे नीकी | 27 | बधाई बाजि रही मन भाई | 91 |
| बधाई बाजि रही हेरी हेरी. | 28 | बधाई प्रान मनहरनी | 93 |
| बधाई मौजमयी बाजे | 28 | बधैया बाजे मुदमय आजै | 94 |
| बधाई देन चली वारी–वारी | 30 | बधैया बाजे सरयू केरी | 94 |
| बाजत अवध बधैया हो | 30 | बजत बधाई सुर सदनन | 95 |
| बाजत आनन्द बधैया हो | 31 | बधाई रस भरी गावो | 96 |
| बधाई बाजि रही घनघोर | 32 | बाजै बाजै बधाई आज | 98 |
| बाजत आनन्द बधइया हो | 33 | बजत बधाई आज मन | 101 |
| बन्दनवार बाँधो री | 38 | बरसत आनन्द रस | 102 |
| बीन लिए नारद | 38 | बजे आज नौबतें गाढ़ी | 110 |
| बजत बधाई आजु जनकपुर | 49 | बधाई मारुती गावैं | 111 |
| बाजे–बाजे बधाई आजु | 59 | बधाई वायु लालन की | 112 |
| बाजे–बाजे बधाई वाह | 60 | बरस गाँठ शुभ मारुतसुत | 113 |
| बढ़ैया पलना लै कर आयो | 65 | बढ़न लगे लालन | 114 |
| बाजै दुन्दुभी वे नृप | 66 | बालकेलि करत आसुग | 115 |
| बधाई सीय सखि केरी | 70 | बधाई गाइये प्यारी | 119 |
| बधाई मिथिलापुरी बाजै | 71 | बलिहारी अली श्री सतगुरु | 120 |
| बजत बधाई आज महल में | 76 | बधाई बाजती रस भीनी | 121 |
| बजत बधाई आजु मन भाई | 76 | बजत बधाई रसिक सुगुरु | 122 |
| बधइयाँ गुइयाँ हिलमिल | 84 | बन्दौं चरण कमल गुरुवर | 124 |
| बजत बधाई रसिकन के | 85 | बधाई गाइयो नीकी | 125 |
| बाजत बहुविधि विशद | 86 | बधाई गुरुदेव की गावो | 126 |
| बधाई बाजै हो मनहरनी | 87 | | |


Scanned by CamScanner

| पद | पृष्ठ |
|---|---|


## भ, म

भले दिन वर्षगाँठ आज ........101
भोजन करत प्रभंजन...........105
भजो मन श्रीसत्गुरु सुख. ....122
भावनि सो छानी छमा..........132
मंगलमय प्रभु जनम समय .......17
मातु सन माँगत ससि.............22
महाराजा अवधेश के सुनु........26
मलिनियाँ बाँधोरी बाँधोरी .......37
माँ आनन्द मंगल गावो री........38
मंगल गावो री हेली ...............39
मैया मैं आई बड़ी दूर से ..........62
मेरी सिया प्यारी पालन .........65
माधव मास पूर्ण तिथि के.........84
मानस नन्दिनि बरष गाँठ ........92
मंगलमूरति मारुत नन्दन........95
मंगल धाम काम छवि ..........102
मिथिलापुर बजत बधाई .........68
महामरुत को मूल ..............116
मंगल गावति चौक..............104
मनमोद बढ्यो सब रसि........105
मारुति वदन छवि देखि........107
मारुति नन्दन भवभय .........108
मंगल मास माघ सुखदाई......118
माई विशद बधाई लाई.........143

## य, र

या सिसु के गुन नाम बड़ाई.........7
राम जनम आनन्द बधाई ..........8
रघुलाल पालने झूलैं..............21
रघुवर की बधाई गावो ............28
राम जनम सुनि के ढाढ़िनिया ...29
रघुकुल मणि श्रीराम..............34
रसिकन के मनमोद बढ़ावन .....75
रंग भीनी बधाई बाजै री ..........82

## ल, व

ललन लोने लेरुआ बलि.........23
ललित सुतहि लालति सचु......24
लाल को देखन चलो .............27
लैहों नेग मैं कर को................29
लखि-लखि बारे ललनवाँ ......32
लखो री आज निमिराजें .........56
लै लै बन्दनवारे आई .............64
ललित मनि पलना झूलें .........66
लड़ैती तेरो पलना बना ..........66
लखो री मिथिला मोदभरी.......84
ललना को अंजना दुलराती .....97
लगत सुहाई माई रस की ......103
वर्ष गाँठ प्रिय लाल को ...........16
बारी सुखदाई मन ..............103


Scanned by CamScanner

पद पृष्ठ

## श, स

शुभ दिन सुकल पक्ष तिथि.......42
श्रीमिथिलापुर बजत बधाई......50
शीरध्वज कुशध्वज बैठे..........67
श्रीमिथिलापुर बजत बधाई......68
श्री चन्द्र प्रभा जू...................77
श्रीचन्द्रप्रभाजू की मनोरथ ......80
श्री सद्गुरु सुख सागर ........122
श्री गुरुवरजू के वरषगाँठ.......124
श्री गुरुदेव ही ते ज्ञान ..........130
श्री गुरु प्रगटाने छवि रस.......127
श्रवण सुखदाई बजत ..........142
सब मिलि आवो री सजनी.........1
सहेली सुनु सोहिलो रे..............3
सुभग सेज सोभित कौसल्या......7
सरयू के पनिघट पै हेली..........17
सुनो री नौबतें बाजें................21
सदा शुभ होवे जनम की .........32
सखी री श्रीमहलन के बीच ......33
सब मोद मनावें मन में ...........34
सियजू सुहेलो गाय ...............44
सुहाई आज की रजनी ...........56
सुकृत मिथिलेश के जागे.........57
सुनैना रानी बजत बधाई.........58

पद पृष्ठ

सुनैना माई धनि धनि ............61
सुनो मिथिलेश महाराजा ........68
सहेली सीय की प्यारी............70
सिय की प्यारी अली जाई .......74
सहेली आनन्द मंगल आज......88
सरयू सरि वेद बुध बरनी.........90
सब मिलि आवो...................95
सुनो सुहेलो सुख मंगल........103
सुघर सलोना अंजनी को......103
सुख सागर नागरि मगन........104
सुवन सुचि अंजना जायो......111
सोहत बालरूप श्रीहनुमत.....113
साधूनां प्रथमो विभाति ........130

## ह

हलवा जोतैते राजा जनकन.....55
हमारी लाडिली गुसइयाँ .........62
हनुमत देव दिवाकर उये री......99
हरषि बधाई गावो आज ........104
हरिजन गावो जु मंगल. ........104
हनुमत रंग रसाल झूलत.......107
हेमलता गुन आगरि ............140

Scanned by CamScanner

# परिशिष्ट सूची


पद पृष्ठ

## अ

87–अंजनीनन्दन तुम पर ... 188
88–अंजनिनन्दन असुर..... 188
98–अंजनी लालन गोद...... 189

## आ

1–आजु पुर प्रगटे हैं........... 144
3–आजु नृपति उर सुख...... 145
4–आजु दशरथ के आँगन.... 145
5–आज अनूठी बजी बधाई.. 145
6–आइहौं सुनि सुख.......... 146
42–आँगन फिरत घुटुरुवनि 168
44–आज जनकपुर मंगल ... 169
45–आजु रंगीली बजत ...... 170
46–आजु उमग्यौ आनन्द ... 170
47–आजु बधाई आनन्द..... 170
48–आजु तौ बधाई बाजै .... 171
82–आज बजत कहँ आनन्द 186
83–आजु जन्म श्रीहनुमत जी 186
84–आवो आवो री बधाई.... 187
85–आजु तौ बधाई माई..... 187
86–आजु मुदित नरदेव...... 188

## क, ख, ग, घ

8–क्या अनूठी रसभरी ....... 146
9–क्या मजा मुझको .......... 147
10–खेलावत आज नृप ...... 147
2–गावो री हिलिमिलि ........ 144
11–घर घर अवध बधावने .. 148

## च, ज

90–चलो नाचो री ............ 189
49–जनक भवन की शोभा .. 171
50–जनक नृप रानि .......... 172
51–जंनकपुर बाजत रंग ..... 172
52–जनकदुलारी पालने..... 172
53–जनमी जानकी जग...... 173
54–जुग जुग जीवें साहेब..... 173
55–जुग-जुग जीवै तैरो ..... 173


Scanned by CamScanner

पद पृष्ठ पद पृष्ठ

## ढ, द

12–ढाढ़ी मिथिलापुर ........150
56–ढाढ़ी आयो द्वार..........174
13–देखो द्वार आजु ..........150
14–देखिये आज क्या छठी . 152

## ध, न

5–धनि जननी जिन...........152
16–धनि धनि चैत महि. .....152
17–निज कर से पियको .....153
18–नृप द्वार दुन्दुभी..........153
57–नित–नित नई आनन्द . 175
58–नौमी तिथि दिन .........175
91–नौबत नगर नये नये .....189

## प, फ

19–प्रेम रस भीनी बधाई.....154
59–परी यह नौबत की .......176
60–पालने झूलति जनक.... 177
21–फूले फिरत अयोध्या.... 155
61–फूलमाला लै मालिन.... 177

## ब

20–बढ़ैया पाल्यो मोर .......154
22–बधाई अवधेश के........155
23–बधाई प्यारी बाजै........156
24–बाजती वर विशद........156
25–बाजे अवध नृपद्वार......156
26–बाजे बाजे बधाई .........158
27–बाजै बाजै री बधाई......158
27–बजत बधाई आजु.......177
62–बरष गाँठ सियजू की ....178
64–बधाई माई आज री......178
65–बधाई नृप सदन बजन .. 178

## भ, म

66–भले दिन जन्म लियो.... 179
29–मेरे रघुवर परमदयाल... 161
67–माधव मुकुता शुभ .......179
68–मातु सुनयना भाग्य...... 180
69–मालिनी आई रावरे...... 181

Scanned by CamScanner

| पद | पृष्ठ |
|---|---|

## र

30-रघुपति बालकेलि .......162
31-रघुबर बालछवि कहौ ...162
32-रघुकुल प्रगटे हैं..........163
33-रामजनम रवि उदय.....163
34-राम बधाई सुनि..........164
70-रावल रंग बधाई..........181

## ल, व

35-लखि सुत नृपति.........165
36-ले आई सजि सुमन .....165
71-लली चिरजीवनी ........182
72-लखोरिनि खूब...........182
28-विविध विनोद प्रमोद....160

## श, स

43-श्री जानकी जन्म ........170
92-श्री हनुमत अवतार......190
37-सजनी सहेली रसभरी..165
38-सुन्दर राम पालने .......166
39-सुवन कौशल्या गोद.....166
73-सहेलिनि गावो बधाई ...182
74-सिय छबि प्यारी .........183
75-सुनैना रानी गोद .........183
76-सुनयना माई सिय.......183
77-सुनैना माई धनि-धनि .184
78-सुनैना माई लाड़िली ....184
79-सुनो री बधाई............184

## ह

40-हरित बधाई रंग भरी ....167
41-हुई अब मेहर .............167
80-हरषी मिथिलापुर........185
81-हो मेरी रूप सलोनी .....185
93-हनुमत झूले पलनवाँ....191
94-हिय उमगि उमगि........191


Scanned by CamScanner

॥ श्री सीतारामाभ्यां नमः ॥
॥ श्रीमते रामानन्दाय नमः ॥
॥ श्रीमते युगलानन्यशरणाय नमः ॥

# जन्मोत्सव बधाई पदावली

## मङ्गल पद – 1

सब मिलि आवो री सजनी, मंगल गाइये ॥
रानी कौसल्या के भये सुत, बेगि बधावो जाइये ॥
आजु कैसो दिवस सजनी, बड़े भागन पाइये ॥

घसि चारु चन्दन लीपि आँगन, मोतिन चौक पुराइये ।
सात सींक सँवारि सखियाँ, बन्दनवार बँधाइये ॥

लालन मुख लखि लेउँ बलैयाँ, नैनन हियो सिराइये ।
प्राण सर्वस वारने करि, फुली अंगन माइये ॥

हिय हुती सो दृगन देखी, भयो सबन्हि मन भाइये ।
'हित' अनूप हमार जीवन, विधना तूँ चिर जाइये ॥

## राग आसावरी पद – 2

आजु सुदिन सुभ घरी सुहाई।
रूप सील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई ॥ 1

अति पुनीत मधुमास नखत ग्रह वार योग समुदाई ।
हरषवन्त चर-अचर भूमिसुर, तनरुह पुलक जनाई ॥ 2

Scanned by CamScanner

बरसहिं बिबुध निकर कुसुमावलि, नभ दुंदुभी बजाई।
कौसल्यादि मातु मन हरषित, यह सुख बरनि न जाई।। 3

सुनि दसरथ सुत जनम लिए सब, गुरुजन बिप्र बोलाई।
वेद विहित करि क्रिया परम सुचि, आनन्द उर न समाई।। 4

सदन वेद धुनि करत मधुर मुनि, बहुविधि बाज बधाई।
पुरवासिन्ह प्रियनाथ हेतु निज, निज सम्पदा लुटाई।। 5

मनि तोरन बहु केतु पताकनि, पुरी रुचिर करि छाई।
मागध सूत द्वार बन्दीजन, जहँ-तहँ करत बड़ाई।। 6

सहज सिंगार किये बनिता चलीं, मंगल बिपुल बनाई।
गावहिं देहिं असीम मुदित चिरजिवौ तनय सुखदाई।। 7

बीथिन्ह कुंकुम कीच अरगजा, अगर अबीर उड़ाई।
नाचहिं पुर नर-नारि प्रेम भरि, देह दसा बिसराई।। 8

अमित धेनु गज तुरग बसन मनि, जातरूप अधिकाई।
देत भूप अनुरूप जाहि जोइ, सकल सिद्धि गृह आई।। 9

सुखी भए सुर सन्त भूमिसुर, खलगन मन मलिनाई।
सबै सुमन विकसत रवि निकसत, कुमुद विपिन बिलखाई।। 10

जो सुख सिन्धु सकृत सीकर ते, सिव बिरंचि प्रभुताई।
सोइ सुख अवध उमगि रह्यो दस दिसि, कौन जतन कहौं गाई।। 11

जे रघुवीर चरन चिंतक, तिन्हकी गति प्रगट दिखाई।
अविरल अमल अनूप भगति दृढ़ 'तुलसिदास' तब पाई।। 12

Scanned by CamScanner

## राग जैतश्री पद –3

सहेली सुन सोहिलो रे ।।

सोहिलो, सोहिलो, सोहिलो, सोहिलो सब जग आज।
पूत सपूत कौसिला जायो, अचल भयो कुलराज ।। 1

चैत चारु नौमी तिथि सित पख, मध्य गगन गत भानु।
नखत जोग ग्रह लगन भले दिन, मंगल मोद निधानु ।। 2

व्योम, पवन, पावक, जल, थल, दिसि दसहु सुमंगल मूल।
सुर दुन्दुभी बजावहिं गावहिं, हरषहिं बरषहिं फूल ।। 3

भूपति सदन सोहिलो सुनि, बाजैं गहगहे निसान।
जहँ–तहँ सजहिं कलस धुज, चामर तोरन केतु वितान ।। 4

सींचि सुगंध रचैं चौके गृह, आँगन गली बजार।
दल–फल–फूल–दूब, दधि–रोचन, घर–घर मंगलचार ।। 5

सुनि सानन्द उठे दसस्यन्दन, सकल समाज समेत।
लिए बोलि गुरु सचिव भूमिसुर, प्रमुदित चले निकेत ।। 6

जातकरम करि पूजि पितर सुर, दिए महिदेवन दान।
तेहि औसर सुत तीनि प्रगट भये, मंगल मुद कल्यान ।। 7

आनन्द महँ आनन्द अवध, आनन्द बधावन होइ।
उपमा कहौं चारि फल की मोहि, भलो न कहैं कवि कोइ ।। 8

सजि आरती विचित्र थार कर, जूथ–जूथ वर नारि।
गावत चलीं बधावा लै लै, निज–निज कुल अनुहारि ।। 9

असही दुसही मरहुँ मनहिं मन, बैरिन बढ़हु विषाद।
नृप सुत चारि चारु चिरजीवहु, संकर गौरि प्रसाद ।। 10

Scanned by CamScanner

लै लै ढोव प्रजा प्रमुदित चले, भाँति-भाँति भारि भार।
करहिं गान करि आन राय की, नाचहिं राज-दुवार।। 11

गज, रथ, बाजि बाहिनी, बाहन सबनि सँवारे साज।
जनु रतिपति ऋतुपति कोसलपुर, बिहरत सहित समाज।। 12

घंटा घंटि पखाउज आउज, झाँझ बेनु डफ तार।
नूपुर धुनि मंजीर मनोहर, कर कंकन झनकार।। 13

नृत्य करहिं नट-नटी नारि-नर, अपने-अपने रंग।
मनहुँ मदन रति विविध वेष धरि, नटत सुदेस सुढंग।।14

उघटहिं छंद-प्रबंध गीत पद, राग तान बन्धान।
सुनि किन्नर गंधर्व सराहत, बिथके बिबुध विमान।। 15

कुंकुम अगर अरगजा छिरकहिं, भरहिं गुलाल अबीर।
नभ प्रसून झरि पुरी कोलाहल, भइ मन भावति भीर।। 16

बड़ी बयस बिधि भयो दाहिनो, सुर गुर आसिरबाद।
दसरथ सुकृत सुधा सागर सब, उमगे तजि मरजाद।। 17

ब्राह्मण वेद बंदि बिरदावलि, जय धुनि मंगल-गान।
निकसत पैठत लोग परसपर, बोलत लगि-लगि कान।। 18

बारहिं मुकुता रतन राजमहिषी पुर सुमुख समान।
बगरे नगर निछावरि मनिगन, जनु जवारि जव धान।। 19

कीन्हि बेद बिधि लोक रीति नृप, मंदिर परम हुलास।
कौशल्या कैकेयी, सुमित्रा, रहस बिवस रनिवास।। 20

रानिन दिये बसन मनि भूषन, राजा सहन भंडार।
मागध सूत भाट नट जाचक, जहँ-तहँ करहिं कबार।। 21

Scanned by CamScanner

बिप्र-बधू सनमानि सुआसिनि, जन पुरजन पहिराई।
सनमाने अवनीस असीसत, ईस रमेस मनाई।। 22

अष्टसिद्धि नवनिद्धि, भूत सब, भूपति भवन कमाहिं।
समउ समाज राज दसरथ को, लोकप सकल सिहाहिं।। 23

को कहि सकै अवधवासिन को, प्रेम प्रमोद उछाह।
सारद सेस गनेस गिरीसहिं, अगम निगम अवगाह।। 24

सिव बिरंचि मुनि सिद्ध प्रसंसत, बड़े भूप के भाग।
'तुलसिदास' प्रभु सोहिलो गावत, उमगि-उमगि अनुराग।। 25

## श्रीराम जन्म पद - 4

आजु महामंगल कोसलपुर, सुनि नृप के सुत चारि भये।
सदन-सदन सोहिलो सोहावन, नभ अरु नगर निसान हए।। 1

सजि-सजि जान अमर किंन्नर मुनि, जानि समय सुभ गान ठए।
नाचहिं नभ अपसरा मुदित मन, पुनि-पुनि बरषहिं सुमन चए।। 2

अति सुख बेगि बोलि गुरु भूसुर, भूपति भीतर भवन गए।
जातकरम करि कनक बसन मनि भूषित सुरभि समूह दए।। 3

दल फल फूल दूब दधि रोचन, जुवतिन्ह भरि-भरि थार लए।
गावत चलीं भीर भइ बीथिन्ह, बंदिन्ह बाँकुरे बिरद बए।। 4

कनक-कलस चामर पताक धुज, जहँ-तहँ बंदनवार नए।
भरहिं अबीर अरगजा छिरकहिं, सकल लोक एक रंग रए।। 5

उमगि चल्यौ आनन्द लोक तिहुँ, देत, सबनि मन्दिर रितए।
'तुलसिदास' पुनि भरेइ देखियत, रामकृपा चितवनि चितए।। 6

Scanned by CamScanner

## राग जैतश्री छठी पद –5

गावैं बिबुध विमल बर बानी।
भुवन कोटि कल्यानकन्द जो, जायो पूत कौसिला रानी।। 1

मास पाख तिथि बार नखत ग्रह जोग लगन सुभ ठानी।
जल थल गगन प्रसन्न साधु मन, दस दिसि हिय हुलसानी।। 2

बरषत सुमन बधाव नगर नभ, हरष न जात बखानी।
ज्यौं हुलास रनिवास नरेसहिं, त्यों जनपद रजधानी।। 3

अमर नाग मुनि मनुज सपरिजन, विगत विषाद गलानी।
मिलेहि माँझ रावन रजनीचर, लंक संक अकुलानी।। 4

देव पितर गुरु बिप्र पूजि नृप, दिये दान रुचि जानी।
मुनि बनिता पुरनारि सुआसिनि, सहस भाँति सनमानी।। 5

पाइ अघाइ असीसत निकसत, जाचक जन भय दानी।
यों प्रसन्न कैकयी सुमित्रहिं, होहु महेस भवानी।। 6

दिन दूसरे भूप भामिनि दोउ, भईं सुमंगल खानी।
बयो सोहिलो–सोहिलो मो जनु, सृष्टि सोहिलो सानी।। 7

गावत नाचत मो मन भावत, सुख सों अवध अधिकानी।
देत लेत पहिरत–पहिरावत, प्रजा प्रमोद अघानी।। 8

गान निसान कोलाहल कौतुक, देखत दुनी सिहानी।
हरि बिरंचि हर पुर सोभा कुलि, कोसलपुरी लोभानी।। 9

आनन्द अवनि, राजरानी सब, माँगहु कोखि जुड़ानी।
आसिष दै दै सराहहिं सादर, उमा रमा ब्रह्मानी।। 10

Scanned by CamScanner

विभव विलास बाढ़ि दसरथ की, देखि न जिनहिं सोहानी।
कीरति कुसल भूति जय रिधि-सिधि, तिन्ह पर सबै कोहानी।। 11

छठी बारही लोक बेद विधि, करि सुबिधान विधानी।
राम लषन रिपुदवन भरत धरे, नाम ललित गुरु ज्ञानी।। 12

सुकृत सुमन तिल मोद वासि बिधि, जतन मंत्र भरि घानी।
सुख सनेह सब दियो दसरथहिं, खरि खलेल थिरथानी।। 13

अनुदिन उदय उछाह उमग जग, घर-घर अवध कहानी।
'तुलसी' राम जनम जस गावत, सो समाज उर आनी।। 14

## राग बिलावल पद - 6

सुभग सेज सोभित कौसिल्या, रुचिर राम सिसु गोद लिये।
बार-बार बिधुबदन बिलोकति, लोचन चारु चकोर किये ।। 1

कबहुँ पौढ़ि पय पान करावति, कबहुँक राखति लाइ हिये।
बालकेलि गावति हलरावति, पुलकति प्रेम पियूष पिये।। 2

बिधि महेस मुनि सुर सिहात सब, देखत अंबुद ओट दिये।
'तुलसिदास' ऐसो सुख रघुपति पै, काहू तो पायो न बिये।। 3

## राग धनाश्री पद - 7

या सिसु के गुन नाम बड़ाई।
को कहि सकै सुनहु नरपति, श्रीपति समान प्रभुताई ।।1.

जद्यपि बुधि वय रूप सील गुन, समै चारु चार्‍यो भाई।
तदपि लोल लोचन चकोर ससि, राम भगत सुखदाई।। 2

Scanned by CamScanner

सुर नर मुनि करि अभय दनुज हति, हरहिं धरनि गरुआई।
कीरति बिमल बिस्व अघ मोचनि, रहिहि सकल जग छाई।। 3

याके चरन सरोज कपट तजि, जे भजिहैं मन लाई।
ते कुल जुगल सहित तरिहैं भव, यह नहिं कछु अधिकाई।। 4

सुनि गुरु बचन पुलक तन दम्पति, हरष न हृदय समाई।
'तुलसिदास' अवलोकि मातु मुख, प्रभु मन महँ मुसुकाई।। 5

## राग बिलावल पद – 8

अवध आजु आगमी एकु आयो।
करतल निरखि कहत सब गुन गन, बहुतन्ह परिचो पायो।। 1

बूढ़ो बड़ो प्रमानिक ब्राह्मन, संकर नाम सुहायो।
संग सुशिष्य सुनत कौसल्या, भीतर भवन बुलायो।। 2

पाँय पखारि पूजि दियो आसन, असन बसन पहिरायो।
मेले चरन चारु चार्‌यो सुत, माथे हाथ दिवायो।। 3

नख सिख बाल बिलोकि बिप्र तनु पुलक नयन जल छायो।
लै लै गोद कमल कर निरखत, उर न प्रमोद अमायो।। 4

जनम प्रसंग कह्यो कौसिक मिस सीय स्वयम्बर गायो।
राम भरत रिपुदवन लखन को, जय सुख सुजस सुनायो।। 5

'तुलसिदास' रनिवास रहसबस, भयो सबको मन भायो।
सनमान्यौ महिदेव असीसत, सानंद सदन सिधायो।। 6

## पद – 9

राम जनम आनन्द बधाई।
सुरतरु कामधेनु चिन्तामनि, अवधपुरी मनो घर–घर आई।। 1

Scanned by CamScanner

अन्तरिक्ष जनु फिरत अवनि पर, मिलत परस्पर दूब बँधाई।
प्रफुलित हृदय नगरबासिन के, बाल बृद्ध एक बात सुहाई।। 2

भई भीर नाचैं नर-नारी, बाजे बहुत गनै नहिं जाई।
सुरपुर आनन्द भयौ सबनि मन, हरषत देव पुहुप बरसाई।। 3

मंगल कलस चौक मोतियन के, द्वारन बन्दनवार बँधाई।
सिसु को बदन निहारि नारि सब, वारत भूषन लेत बलाई।। 4

रतनगर्भ कौसल्या रानी, धन्यभाग की करत बड़ाई।
दसरथराय न्हाइ भये ठाढ़े, कनक बसन धन धेनु मँगाई।। 5

परम पुनीत विप्र पद बन्दत, दान मान मनु घन बरषाई।
मागध सूत भाट बन्दीजन, अठसिधि नवनिधि वांछित पाई।। 6

देत असीस राय दसरथ को, चिरजीवहु कौसल रघुराई।
दसरतसुत हौं नित प्रति देखौ 'अग्रअली' कै यह जिय भाई।। 7

## पद - 10

नृप दसरथ के पुत्र भयो, सुरपुर के बजत बधाई री।
घर-घर मंगलचार अवधपुर, बंदनवार बँधाई री।
चतुर सखी मिलि सथियाँ दीने, बिधि सो सींक भराई री।
चन्दन चौक रच्यौ आँगन में, रतननि भूमि गराई री।
करत कुतूहल कौसलवासी, याचक अभरन भराई री।
केतिक कलस धेनु संकल्पी, हस्ति समूह लुटाई री।
'अग्रअली' रघुपति के जनमत, मन वांछित फल पाई री।

Scanned by CamScanner

## पद – 11

दसरथ मन्दिर राम जनम सुनि, आये संकर जोगी।
मन तन योग साखि लाखन में, हैं आँखिन के रोगी।। 1

भुजग बिभूति–बिभूषित ससि सिर, गंग नागरिपु छाला।
अरुन नयन कर डमरू डमकत, नन्दिनि बाहन माला।। 2

अद्‌भुत छवि कहि सकै चितै ना, नाचत ताण्डव ताली।
दसरथ रानी लखि मुसुकानी, आनि धरी मनि थाली।। 3

सुनु माई धन चहत न मो मन, सुनु एक मेरी बानी।
तेरे लला पर फिरत बावरे खाक लपेटे रानी।। 4

डरपी रानि कहा कहे जोगी, उर में औरे हेरी।
कछु करि मन्तर बाल प्रबोधे, कहा करो तब ए री।। 5

हँसि कह योगी मातु सकुच जानि, बालक आनि देखावो।
और सकल भय की रखवारी, लै ताबीज बधाओ।। 6

तब नृप–रानी राम देखायो, सदा सुधर्म नियोगी।
'कृपानिवास' जगत से योगी, रामचरन रस भोगी।। 7

## पद – 12

आजु महारानी सों झगरत, दावा करि–करि दाई।
लाग लिये बिनु नाल न खोलै, बोलै मान भराई।। 1।।

तू रानी सब देशन जानै, मैं लघु जाति लुगाई।
उमा रमा बिनु बोले डोलैं, मैं आई हूँ बोलाई।। 2।।

Scanned by CamScanner

बालक तेरो पालक मेरो, बिधना बात बनाई।
तैं जायो सुत मातु कहायो, मैं दाई जू कहाई।। 3।।

तू प्यावैगी दूध लला को, मैं घर सुघर कराई।
तू वारैगी भूषण बस्तर, मैं तन प्राण लुटाई।। 4।।

तू मणि पालन लाल झुलावै, मैं जिवों नैन झुलाई।
तेरे मन्दिर नौबति बाजत, मेरे बजत बधाई।। 5।।

तेरे कोष सराहन लायक, मेरे हाथ भलाई।
तू दुलरावै गोद खिलावै, मैं लखि आँख जुराई।। 6।।

तो सों कहि-कहि मैया टेरै, मैं दाई जू कहाई।
तू करि लाड़ जिमावै मोदक, मैं नित करौं सहाई।। 7।।

तेरे मन आवै सुत ब्याहौं, मैं करि खोज सगाई।
तू फूले लखि पुत्रबधू मुख, मैं वारों जल राई।। 8।।

कहो सुघरि मैं कैसे हारी, नाहिन तनक घटाई।
हँसि-हँसि कहे रानी को सयानी, तेरे मन की भाई।। 9।।

और कछू चाहों नहिं सम्पति, माँगों एक अघाई।
निबहो 'निवास' राम की जाती, मैं दाई तू माई।। 10।।

## पद – 13

कौशिल्या के सुवन भयो सखि, देखन को उठि धाई री।
मानिक थार भरे मंगल, सब, यूथ-यूथ सखि आई री।। 1

आरति करि पुनि करहिं निछावरि आनन्द उर न समाई री।
विविध भाँति पुर बजत बधाई, जहँ-जहँ मंगल गाई री।। 2

Scanned by CamScanner

दशरथ द्वार राग रागिनि किधौं, ढाढ़िनि रूप सुहाई री।
वेद कर्म सब कीन्ह भूपमनि, जेहि विधि गुरुन बताई री।। 3

बंदि सूत मागध गायक बहु, जै जै बचन सुनाई री।
किधौं वेद विधि शिव किन्नर सुर, याचक वेष बनाई री।। 4

दान देत दशरथ वशिष्ठ मिलि, गज रथ मनि समुदाई री।
तुरग भूमि पट आदि दिये सब, जेहि–जेहि जो मन भाई री।। 5

बरषत सुमन देव ब्रह्मादिक, नभ दुन्दुभी बजाई री।
जय दशरथ जय जय कौशिल्या, आदि ब्रह्म सुत पाई री।। 6

कौशिल्यादि सकल रनिवासन, याचक लीन बुलाई री।
सर्वस दान दीन्ह सब काहुँहि, तिन्ह सब हरषि लुटाई री।। 7

कुम्भ कनक कदली वितान रचि, घर–घर मंगल छाई री।
उत इत अबिर अगर कुमकुम दै, गलियन्ह कीच मचाई री।। 8

कहि न सकैं श्रुति शेष शारदा, दशरथ नगर निकाई री।
निज निज पुर सुधि भूलि हरषविधि, हरिहर मन ललचाई री।। 9

असुरन्ह के घर भयो अमंगल, सुरमुनि मंगल दाई री।
'रामचरण' जै जै दशरथ सुत, जै कौशिल्या माई री।। 10

## पद – 14

बाजत आजु आनन्द बधाई।।

कौशिल्या के राम जनम लियो देखहु नयन अघाई।
सब नर–नारि सुमंगल गावहिं, नाचहिं ताल बजाई।। 1

कूदहिं करहिं कलोल परस्पर, अतर अबीर उड़ाई।
लाल भयो सरयू जल शोभित, गलियन्ह कीच मचाई।। 2

Scanned by CamScanner

बरषहिं सुमन बजावहिं नाचहिं, देत विमान बिहाई।
अवधपुरी में मंगल घर-घर, लखि ब्रह्मादि सिहाई।। 3

अवधपुरी सब लोक एक भयो, मंगल तिहुँ पुर छाई।
कोटि काम छवि लखि दशरथ सुत, 'रामचरण' बलि जाई।। 4

## सोहर पद - 15

आजु अवधपुर मंगल घर-घर सोहिल हो।
ललना, दशरथ के भये सुवन चलहुँ सखि जोहिल हो।। 1

कौशिल्या के सुकृत कल्पतरु फूलेउ हो।
ललना, चारि पदारथ फलेउ शम्भु अनुकूलेउ हो।। 2

त्रिभुवन परमानन्द सु जै-जै छाई हो।
ललना, बरषहिं सुर नभ सुमन सुमंगल गाई हो।। 3

विप्र रूप धरि आयो, विधि शिव नारद हो।
ललना, उमा रमा ब्रह्माणि शची अरु शारद हो।। 4

पढ़हिं वेद दशरथ गृह सुर तिय गावहिं हो।
ललना, बिनु चीन्हें दशरथ कौशिल्यहिं भावहिं हो।। 5

देव अशीषहिं जय रघुवंश उजागर हो।
ललना, परम पुरुष जहँ आय सकल सुर नागर हो।। 6

धनि दशरथ कौशिल्या धनि पुरवासी हो।
ललना, जासु भक्ति बस प्रगट ब्रह्म अविनासी हो।। 7

सुनि-सुनि परमानन्द राउ अरु रानिय हो।
ललना, देहिं दान गज रथ हय मनि मन मानिय हो।। 8

Scanned by CamScanner

सब धन सबहिं लुटाय हर्ष युत सब पुर हो ।
ललना, जो पावा नहिं राखि लेहिं याचक सुर हो ।। 9

मरम न जानै कोइ भरे पुनि देखहिं हो ।
ललना, ब्रह्मानन्द मगन सब को केहि लेखहिं हो ।। 10

बाजत अवध बधाई भुवन चौदह भरि हो ।
ललना, नाचहिं गावहिं हर्ष महामंगल परि हो ।। 11

कौशिल्या ढिग ढाढ़िनि अरुझी जाई हो ।
ललना, हरषि रानि कह माँगु देउँ मन भाई हो ।। 12

देश कोट पट भूषण नहिं अभिलाषऊँ हो ।
ललना, तुम्हरो सुत भरि लोचन लखि हिय राखउँ हो ।। 13

मन क्रम बचन मगन भई लखि भव मोचन हो ।
ललना, जो मन वचन अगोचर लोचन गोचर हो ।। 14

विविध विनोद विलोकि थके रवि रथ युत हो ।
ललना, अतर अबीर उड़ाहिं अवध छवि अद्भुत हो ।। 15

कनक वितान कलश कदली आदिक वर हो ।
ललना, मनहुँ मदन रति रचेउ सुमंगल घर-घर हो ।। 16

करहिं वेद विधि दशरथ जस गुरु भाषहिं हो ।
ललना, वेद पितर मुनि पावहिं जोइ अभिलाषहिं हो ।। 17

परमानन्द मगन दिन जात न जानहिं हो ।
ललना नाम धरन गुरु आये हरषि बखानहिं हो ।। 18

जेठ सुवन जो श्याम रूप छवि आगर हो ।
ललना, मदन रमइ जिहिं नाम राम सुखसागर हो ।। 19

Scanned by CamScanner

विधि सिव सुक सनकादि भ्रमर होइ रमि रहे हो।
ललना, जासु चरन मकरन्द राम ताते कहि हो।। 20

सत चित आनन्द सिन्धु काल तिहुँ एक रस हो।
ललना, रामनाम सोइ जानब सब जाके सब हो।। 21

कर्म ज्ञान करि योग भक्ति हित रमु जहँ हो।
ललना, रामनाम ताते योगीश रमहिं तहँ हो।। 22

जो आनन्द - समुद्र तासु सीकर लहि हो।
ललना, रमउ ब्रह्म जग सत्य राम ताते कहि हो।। 23

राम नाम गुण अमित निगम नहिं जानहिं हो।
ललना, निज मति मुनि शिव शारद वेद बखानहिं हो।। 24

राम दिव्य गुण विश्व भरण पोषण जोइ हो।
ललना, महाविष्णु विश्वम्भर नाम भरत सोइ हो।। 25

धारण शक्ति जो दिव्य राम के छामक हो।
ललना, लछिमन नाम लच्छिमनि लक्षण धामक हो।। 26

सकल शत्रु नाशक शुभ शक्ति जो अद्भुत हो।
ललना, नाम शत्रुहन चारि सार श्रुति तव सुत हो।। 27

स्वयं ब्रह्म भगवान राम गृह आयउ हो।
ललना, कहि गुरु नृप तब जस ब्रह्माण्ड सोहायेउ हो।। 28

गये वशिष्ठ निज भवन राम छवि उर धरि हो।
ललना, रानिन याचक बोलि दान दिये मन बरि हो।। 29

लेहिं राम कहँ गोद मातु हलरावहिं हो।
ललना, कबहुँ झुलावहिं पलनन्ह मंगल गावहिं हो।। 30

Scanned by CamScanner

जेहि दिन राम जनम भयो तेहि दिन घर–घर हो।
ललना, एक–एक बालक भये सबनि के छवि वर हो।। 31

रामानन्द मगन सब मंगल गावहिं हो।
ललना, रामलला कहि–कहि हलराइ खेलावहिं हो।। 32

जे यह मङ्गल गावहिं प्रेम लगावहिं हो।
ललना, 'रामचरण' सोइ धन्य बाल रस पावहिं हो।। 33

## सोहर पद – 16

वर्ष गाँठ प्रिय लाल को बाल मनावहिं हो।
ललना, जुरि–जुरि सखिन समाज सोहिलो गावहिं हो।। 1

मधुरितु अति सुख पाय छाय पुर देशहिं हो।
ललना, कामिनि हिय नवराग सु करत प्रवेशहिं हो।। 2

प्रमदावन विकसंत कंत रितुराजहिं हो।
ललना, प्रफुलित वनिता बृन्द साज शुभ साजहिं हो।। 3

फूलन बन्दनवार द्वार प्रति बाँधहिं हो।
ललना, फूलन चौक पुराय वितान तनावहिं हो।। 4

फूलन केतु पताक साथियाँ फूलहिं हो।
ललना, फूलन साज समाज देखि मन भूलहिं हो।। 5

फूल सिंगार सँवारि नारि युग लालहिं हो।
ललना, फूलन डोल सजाय तहाँ पधरावहिं हो।। 6

झूली ललना ललित कलित, गुन गावहिं हो।
ललना, नाचि–नाचि सुख राँचि सु ललन झुलावहिं हो।। 7

Scanned by CamScanner

'कान्तिलता' तहँ फूलि पाय रसमोदहिं हो।
ललना, लालन रही रिझाय समाय विनोदहिं हो ।। 8

## पद - 17

मंगलमय प्रभु जनम समय में, अति उत्तम दश योग परे।
अपने-अपने नाम सदृश फल, दशौ जनावत खरे-खरे।। 1

ऋतुपत ऋतु पुनि आदि मास मधु, शुक्लपक्ष नित धर्म भरे।
अंक अवधि नौमी शशि वासर, नखत पुनर्वसु प्रकृति चरे ।। 2

योग सुकर्म समय मध्यम दिन, रवि प्रताप जहँ अति पसरे।
जय दाता अभिजित मुहूर्तवर, परम उच्च ग्रह पाँच ढरे।। 3

नौमि पुनर्वसु परम उच्च रवि, कबहुँ न तीनिउ संग अरे।
एहि ते 'देव' रूप कछु लखिये, गाय-गाय गुण पतित तरे।। 4

## पद - 18

आजु नगारे की धुनि सजनी, औरहिं रंग अवाजै री।
नृप के द्वार बजत निशिवासर, आजु अधिक सुख साजै री।। 1

पूरे दिन सब भई नृपरानी, जो कहुँ ईश निवाजै री।
होइ पुत्र पंक्तीरथजू के, पूजे सब मन काजै री।। 2

इतने ही कोई आन कही नृप, द्वार बधाई बाजै री।
'रसिकअली' लखि मोद मगन मन, तन रोमावलि राजे री।। 3

## पद - 19

सरयू के पनिघट पै हेली, हौं अबहीं सुनि आई।
कोसलेस महिषी कौशिल्या, श्याम सुभग सुत जाई।। 1

Scanned by CamScanner

श्रवण सुधा सुख वचन सुनत, अनुराग रह्यो उर छाई।
कहै न कछु मुख वचन ठगी सी, रही अंग शिथिलाई।। 2

चलो अली नृप मन्दिर चलिये, सब मिलि देन बधाई।
देखिय मुख कौशल्या सुत को, लोचन को फल पाई।। 3

न्योछावर नाना विधि करिये, वारिय लोन सु राई।
पूरे प्रथम साथियाँ सजनी, चौकें चारु बनाई।। 4

बन्दनवार द्वार प्रति बाँधौ, धरो कनक घट लाई।
गौरि गणेश पूजि पुनि चलिये, मंगल सोहिलो गाई।। 5

'रसिकअली' सिख सुनी सयानी, करत चार चपलाई।
रामरूप शिशु देखन को, उत्कण्ठा उर अधिकाई।। 6

## पद – 20

ढाढ़िनि निमिवंशिनि की आई।
रघुवंशिन को सुन्यो महोत्सव, लेन बधाई धाई। 1

वंश बिरिद सुनिकै कौशिल्या, भीतर बोलि पठाई।
करि सनमान बिछाई दुलैचा, आदर दै बैठाई।। 2

साठि कोटि को लहँगा बादल, सारी मोल सवाई।
साठि लाख को चोली सुन्दरि, मोतिन मणिन जड़ाई।। 3

पायन कंकन नूपुर बिछुआ, शत-शत कोटि धराई।
किंकिन हास हार उर चोकी, मोल कह्यो नहि जाई।। 4

छापा मुँदरी चूरी गुजरी, बाजूबन्दनि ल्याई।
इनके मोल कहा कहौं लागे, कोटि हजार बनाई।। 5

Scanned by CamScanner

करन फूल टेढ़ी झूमक धर, वीर तरौने ल्याई।
तिनको मोल कहै को जौहरि, कमला देखि सिहाई।। 6

नई नथुनियाँ टीको बिन्दी, चोटी फूल मँगाई।
इन्द्र, कुबेर, सुमेर आदि धन, भयो नहीं चौथाई।। 7

बहुत मोल की खोलि पिटारी, दीनी एक दुलाई।
पाँच पदुम की लगी किनारी, कापैं जात मोलाई।। 8

और अनेक विभूषण बस्तर, ढाढ़िन तब पहिराई।
घोड़ी हथिनी माल भराई, सो सुखपाल चढ़ाई।। 9

सकुचि कह्यो थोरी कछु दीन्हों, तुम्हरे लायक नाईं।
बरजों तेहि जनकरानी को, यह जनि दान दिखाई।। 10

प्रेम मगन बोली ढाढ़िनि तब, तुमसे यह बनि आई।
काहे न होइ नवनि दशरथ की, घरनि राम की माई।। 11

हमरे कूँ कुछ आस बड़ी है, जौ शिव कहैं सुहाई।
आऊँगीं मैं फेरि तिहारे, लाऊँगी जु सगाई ।। 12

शीश नवाइ चली ढाढ़िनी तब, राम लिये दृग लाई।
'कृपानिवास' द्वार तें निकसी, सम्पति सकल लुटाई।। 13

## वाह-वाह का भाट का पद – 21

आज उनमादियाँ वे बधैया देत श्री भूपाल।
जायो सुत राम लोना हो सलोना श्यामला अरु लाल।।

रावल शादियाँ हो कहैं रयजादियाँ कुलरीत।
वारें लोन राई हो सखी सब गावें मंगल गीत।।

Scanned by CamScanner

सखी सब मंगल गावैं, गुनी मिल चुहल मचावैं।
बजावैं डीमक झाँझा, मजे से गावत माँझा।।
लाल के सदके जाऊँ, कुँवर पर घोल घुमाऊँ।। 1

निशदिन लेउँ बलैयाँ हो बड़े खाड़ेश सुन्दर जाय।
रहो नित रंगरलियाँ हो लड़ावो लाड़ दशरथ लाल।।
करो दिन राति जापा हो खशीदे खाश दे खुलवाय।
खुलाया खास खजाना लुटाया माल अमाना।।
भरे पुनि भये न रीते, गुनी सब भये निचीते।
फिर वे कहूँ न नच्चे, 'बृजनहुँ' से सच्चे।। 2

## रेखता पद – 22

बधाई अवधेश के बाजै। मनो घन गहगहे गाजैं।।
गुनी गन्धर्व जुरि आये। दान मन भावते पाये।।
मलिनियाँ माल गुहि लाई। नाइन हरी दूब बँधवाई।।
सुवासिनि सोहिलो गावैं। लला के वारने जावैं।।
सखी सथियाँ सँवारे री। बिरद बन्दी उचारें री।।
पढ़त द्विज बेद वर बानी। धन्य महाराज महरानी।।
यहै छवि देखि सब हरषैं। सुमन बहु ब्योम ते बरषैं।।
असीसैं देत नर नारी। 'रसिकगोविन्द' बलिहारी।।

## रेखता पद – 23

चलो सखी हरषतावल में। भये सुत राज रावल में।।
मगन रस हँसत खेलो री। गावोंगीं राम सुहेलो री।।

Scanned by CamScanner

सजो जी सात स्वाँगन में। नचौंगी राय आँगन में।।
करौंगी प्रेम की सैलें। उघारें आजु मन मैलें।।
परैं सुखसिन्धु में गहिरें। उठें जहँ रंग की लहरें।।
खड़े अनुराग झूलैं री। खुशी के बाग फूलैं री।।
लखो री प्राण पालन को। खेलावो गोद लालन को।।
'कृपानिवास' के प्यारे। अवधपुर राय के बारे।।

## रेखता पद – 24

सुनो री नौबते बाजें। मनो सावन के घन गाजैं।।
नचैं पुर सुघर कामिनि सी। दमक तनु चपल दामिनि सी।।
बनी छवि धूप धूमन की। मनो घटा श्यामलूमन की।।
बरषि सुर सुमन मन मोहैं। सुभग बगमाल सी सोहैं।।
खुशी के बरस पानी री। हरे जहँ राय रानी री।।
भरे मन रसिक सागर से। उपासक राम नागर से।।
बढ़ी अब प्रीति की नदियाँ। उखर बहि कूल फुलबगियाँ।।
'कृपानिवास' मन मछियाँ। अवधपुर सादियाँ अछियाँ।।

## पद – 25

रघुलाल पालने झूलैं। लखि मातु मुदित मन हूलैं।।
अरुण कमल कर चरण विलोचन आनन छवि सुख मूलैं।।
श्याम बरन तन पीत झिंगुलिया भूषण अँग अनुकूलैं।।
बालकेलि मृदु गाइ सुनावति अम्ब हरन भव सूलैं।।
'अग्रअली' सुनि मुनि–मन हरषत बरषत सुरतरु फूलैं।।

Scanned by CamScanner

## पद – 26

मातु सन माँगत ससि रघुलाल ।।

रुदन करत अरत हठि रोवत लखि नभ मगन विशाल ।
अम्ब भुलावति देइ खिलौना कोकिल–कीर–मराल ।।

मानत नाहिं अगम दरसायो कर गहि दर्पण हाल ।
'अग्र' हँसे लखि कोटि चन्द सम निज आनन छवि जाल ।।

## छठी पद – 27

घुपरि उबटि अन्हवाई कै नयन आँजे,
रचि–रचि तिलक गोरोचन को कियो है ।
भ्रू पर अनूप मसिबिंदु, बारे–बारे बार,
विलसत सीस पर हेरि हरै हियो है ।। 1

मोद भरी गोद लिये लालति सुमित्रा देखि,
देव कहैं सबको सुकृत उपवियो है ।
मातु पितु प्रिय परिजन पुरजन धन्य,
पुन्य पुंज पेखि–पेखि प्रेम रस पियो है ।। 2

लोहित ललित रघु चरन कमल चारु,
चाल चाहि सो छवि सु कवि जिय जियो है ।
बालकेलि बात बस झलकि झलमलत,
सोभा की दीयटि मानो रूप दीप दियो है ।। 3

राम सिसु सानुज चरित चारु गाइ सुनि,
सुजनन सादर जनम लाहु लियो है ।

Scanned by CamScanner

'तुलसी' बिहाइ दसरथ दसचारि पुर,
ऐरे सुख जोग बिधि बिरच्यो न बियो है।। 4

## पद 28

पगनि कब चलिहौं चारौ भैया।
प्रेम पुलकि उर लाइ सुवन सब कहति सुमित्रा मैया।।
सुन्दर तनु सिसु बसन बिभूषन् नखसिख निरखि निकैया।
दलि तृन प्रान निछावर करि-करि लैहैं मातु बलैया।।
किलकनि नटनि चलनि चितवनि भजि मिलनि मनोहरतैया।
मनि खंभनि प्रतिबिम्ब झलक छवि छलकिहैं भरि अँगनैया।।
बाल बिनोद मोद मँजुल बिधु लीला ललित जुन्हैया।
भूपति पुन्य पयोधि उमग घर-घर आनन्द बधैया।।
हैहैं सकल सुकृत सुख भाजन लोचन लाहु लुटैया।
अनायास पाइहैं जनम फल तोतरे बचन सुनैया।।
भरत राम रिपुदवन लखन के चरित सरित अन्हवैया।
'तुलसी' तब के से अजहुँ जानिबे रघुबर नगर बसैया।।

## पद - 29

ललना लोने लेरुआ बलि मैया।
सुख सोइए नींद बेरिया भई चारु चरित चार्‌यो भैया।। 1
कहति मल्हाइ लाइ उर छिन-छिन छगन छबीले छोटे छैया।
मोद कंद कुल कुमुद चन्द्र मेरे रामचन्द्र रघुरैया।। 2
रघुबर बालकेलि संतन की सुभग सुभद सुरगैया।
'तुलसी' दुहि पीवत सुख जीवत पय सप्रेम घनी घैया।। 3

Scanned by CamScanner

## राग कान्हरा पद – 30

ललित सुतहि लालति सचु पाये।
कौसल्या कल कनक अजिर महँ सिखवति चलन अँगुरिया लाये ।।
कटि किंकिनी पैजनी पायनि बाजति रुनझुन मधुर रेंगाये।
पहुँची करनि कंठकठुला बन्यौ केहरिनख मनि जरित जराये ।।
पीत पुनीत बिचित्र झँगुलिया सोहति श्याम शरीर सोहाये।
दँतियाँ युगल मनोहर मुख छबि अरुन अधर चित लेत चोराये ।।
चिबुक कपोल नासिका सुन्दर भाल तिलक मसिबिंदु बनाये।
राजत नयन मंजु अंजनजुत खंजन कंज मीन-मद नाये ।।
लटकन चारु भृकुटिया टेढ़ी-मेढ़ी सुभग सुदेश सुभाये।
किलकि किलकि नाचत चुटकी सुनि डरपति जननि पानि छुटकाये ।।
गिरि घुटुरुवनि टेकि उठि अनुजनि तोतरि बोलत पूप देखाये।
बालकेलि अवलोकि मातु सब मुदित मगन आनँद न अमाये ।।
देखत नभघन ओट चरित मुनि जोग समाधि बिरति बिसराये।
'तुलसीदास' जे रसिक न एहि रस ते नर जड़ जीवत जग जाये ।।

## राग ललित पद – 31

छोटी-छोटी गोड़ियाँ अँगुरियाँ छबीली छोटी,
नख जोति मोती मानो कमल दलनि पर।
ललित आँगन खेलैं ठुमुक-ठुमक चलैं,
झुँझुनु-झुँझुनु पाँय पैजनी मृदु मुखर ।। 1

Scanned by CamScanner

किंकिनी कलित कटि हाटक जटित मनि,
मंजु कर कंजनि पहुँचियाँ रुचिरतर।
पियरी झँगुली झीनी साँवरे सरीर खुली,
बालक दामिनीं ओढ़ी मानो बारे बारिधर ।। 2
उर बघनहा कंठ कठुला झँडूले केश,
मेढ़ी लटकन मसिबिंदु मुनि मनहर।
अंजन रंजित नैन चित चोरै चितवनि ,
मुख शोभा पर वारौं अमित असमसर ।। 3
चुटकी बजावती नचावती कौसल्या माता,
बालकेलि गावती मल्हावती सुप्रेम भर।
किलकि-किलकि हँसैं द्वै-द्वै दतुरियाँ लसैं,
'तुलसी' के मन बसैं तोतरे बचन बर ।। 4

## पद - 32

कौशल्या रानी तुम सम कौन सपूती।
करी कमाई मन की भाई नेक न माया धूती ।।
गोपुर स्वामी गोद खिलावै भक्ति लगाई दूती।
'कृपानिवासी' मधुरी बैना गावत मैना तूती ।।

## पद - 33

चलायो रानी परमेश्वर पर टोना ।।
बेदन गायो पार न पायो जायो श्याम सलोना।
योगी योग साधना हेरैं तेरे खेल खेलौना ।।

Scanned by CamScanner

भयो नहीं न होइहैं काहू के बिना प्रेम कहाँ होना।
'कृपानिवास' सनेहिन के बस कौसिल्याजू के छौना ।।

## पद – 34

महराजा अवधेश के सुनु सोहिलरा।
बजत बधाई आज मेरा मन मोहिलरा ।।
जनमें पुत्र सुपुत्र हैं सुनु। अचल भयो कुलराज मेरा ।।
नपृति दान बहुतेक दिये सुनु। गउवें अरुगज बाजि मेरा ।।
मालिनियाँ आजु फूली फिरैं सुनु। बाँधति बन्दनवार मेरा ।।
धरति सुवासिनि साथियाँ सुनु। गावति मंगलचार मेरा ।।
'कृपानिवास' को दीजिये सुनु। महरानी गरे को हार मेरा।।

## पद – 35

जा दिन नहाय बैठों राम लैके कनियाँ
दैहौं मनि मानिक विभूषण विचित्र तोकों।
हरी–हरी साड़ी तामें जरद किनारी लागी।
बादल के झब्बे लागे तास की फुँदनियाँ ।।
फूली न समैहों मुख मोरिहौं न काहू पै
ऐसो बनाऊँ जैसे राजन की रनियाँ।
'रतनहरी' नख सिख लौ गहनो
हीरा मनि मानिक सो जटित नथुनियाँ।

## पद – 36

कौसिल्या मैया चिरजीवो तेरा छौना।
राज समाज सकल सुख सम्पति अधिक–अधिक नित होना ।।

Scanned by CamScanner

मुनि जन ध्यान धरत निसिवासर अमित जन्म धरि मौना।
'रतनहरी' प्रभु त्रिभुवन नायक तैं कर लियो खिलौना।।

## पद – 37

लाल को देखन चलो माई।
उमगत हिय आनन्द अनूपम कौसिल्या सुत जाई ।।
गजमनि चौक रची पुर बनिता मंगल कलस धराई ।
बन्दनवार द्वार प्रति बाँधत ध्वज पताक छबि लाई ।।
गलियन कीच अरगजे माची धूप धूम नभ छाई ।
'रसिकअली' नाचत सुरबनिता कुसुममाल बरषाई ।।

## पद – 38

पलना नीको बनो री माई।
पाँय ढोलनी पुतरी बड़ेरा, झूमक अति छवि छाई।। 1
लागैं ललित पलकिया सुन्दर वेतस केर बनाई।
'रसिकअली' दशरथ सुत झूलत मातु कौशल्या देत झुलाई।। 2

## पद – 39

बधाई प्यारी बाजे नीकी।
अवधराज अभिलाष साज सत सोभित सहस अमी की ।।
सदन-सदन सुख सहज अलौकिक भावन सत जन जी की ।
श्रवन सुनत सरसत अनुपम मुद मानस अकथ अधी की ।।
श्री रघुवंश विमल बरधन जस प्रगट भयो अवनी की ।
'युगल अनन्य' निछावर मन धन समय सोहावन ही की ।।

Scanned by CamScanner

## पद - 40

बधाई बाजि हरी, हेरो–हेरो अवध उत्साह ।।
होत हजारन हरष हिये सुभ सदन–सदन चित चाह।
दुति दामिनि भामिनि गावैं गुन भरि–भरि रंग उछाह ।।
कोउ काहू की सुधि न सम्हारत छकि–छकि नाह–निगाह।
'युगलअनन्यअली' हुलसत उर दुरत दरद दिल दाह ।।

## पद - 41

बधाई मौजमयी, बाजे–बाजे अवध चहुँओर ।।
कहों कहा मुख एक मन्दमति विथकित सुकवि करोर।
बरसत सुरभि समूह गलिन बिच मची मनोहर शोर ।।
सर्वस दान देहिं पुरजन प्रिय पल–पल प्रेम हिलोर।
'युगलअनन्यअली' गावत गुन अंग–अंग–रँग बोर ।।

## पद -42

प्रियपुर चहुँओर बाजे रसीली बधावनियाँ।
नौमी तिथि मधुमास मनोरम मंगल दिन छवि छावनियाँ ।।
श्री रघुराज सुवन मोहन मन प्रगटे भूमि सोहावनियाँ।
'युगलअनन्यशरण' रसिकन की भलीभाँति भई भावनियाँ ।।

## पद - 43

रघुवर की बधाई गावो, प्रिय पावो सरसावो मोरे रामा हो ।।
सुनि के सोहिलो सोहन, छोहन छजवावो मोरे रामा हो।
तन–मन निवछावर करिके, दृग रस बरसावो मोरे रामा हो ।।

Scanned by CamScanner

भूपति मनि सुवन सलोनो, छवि हेरि हेरावो मोरे रामा हो।
'श्री युगलअनन्य' छनहिं छन, सुखसिंधु समावो मोरे रामा हो।।

## पद – 44

उर उमगि बधाई बाजै।
अति अपार नृपद्वार चहूँदिसि मनहुँ सुभग घन गाजै।।
भये प्रगट नृप सुवन सोहावन मनभावन दुख दोष नसावन,
श्री रघुवंस तिलक कुल दीपक मदन कोटि छवि लाजै।।
सुनि–सुनि भवन–भवन ते भामिनि कामिनिकला कुशल दुतिदामिनि,
चलीं हरषि उर कनक थार भरि सजि–सजि मंगल साजै।।
वीणा वेनु शंख शहनाई सरसाई नौबति सुखदाई,
मंगल गानन गाय नाचि तूम, तननननन गति छाजै।।
'ज्ञानाअलि' पताक ध्वज चामर कनक कलश चौके रचि आगर,
बन्दनवार द्वार प्रति राजै कौशिल्या सुत काजै।।

## पद – 45

लैहों नेग मैं कर को कँगनवाँ।।
महरानी बिनती सुनु मोरी, सुखी रहैं तेरो चारों ललनवाँ।
रामलला के निछावर लैहौं, और कछू नहीं मोहिं चहनवाँ।।
गाय बजाय रिझाय मजे से, ढाढ़िन मचली भूप अँगनवाँ।
'मधुरअली' हँसि देत निछावर, राम मातु मनमोद मगनवाँ।।

## पद – 46

राम जनम सुनि के ढाढ़िनियाँ अपने पति सों बोली।
चलहु कन्त राजा दसरथ गृह दान कोठरी खोली।।

Scanned by CamScanner

तोहि मिलै बागो अरु पागो मोहिं पहिरन को चोली।
तोहि मिलै घोड़ा अरु जोड़ा मोहिं चढ़न को डोली।।
अवध नगर पिया बास करन को मँगिहौं एक हवेली।
'तुलसीदास' रघुनाथ याँचि के छोरि धरब निज झोली।।

## पद - 47

बधाई देन चलो वारी-वारी।
कौशल्या कैकई सुमित्रा जनमायो सुत चारी।।
अस अवसर फिरि बहुरि न पैहो धनि निज भाग विचारी।
'श्रीरघुराज' निरखि लालन मुख पुनि-पुनि लै बलिहारी।।

## चैती पद - 48

बाजत अवध बधैया हो रामा, भये रघुरैया।
चैत चारु नौमी मंगल मधि दिवस प्रमोद बढ़ैया हो रामा।
सकल भाँति जित अभिजित अति प्रिय जन दुख फंद नसैया हो रामा।।
प्रीति-प्रतीति रीति अविगीतहिं पावन गीत गवैया हो रामा।
प्रेमलता लहराय प्रभा लहि अभिमत फल सुफलैया हो रामा।
श्री गुरुकृपा कटाक्ष ललित प्रभु हिल मिलि सुख सरसैया हो रामा।

## पद - 49

न लैहों महरानी जू कर कँगना।।
बहुत दिनन की आस लगी है सो दिन पहुँचो आनी जू।
श्रीरामलला को निछावरि लैहों जो हमरे मन मानी जू।।
गले को हार कौशल्यारानी दीन्हीं तब ढाढ़िनि मुसुकानी जू।
'रामदास' की आस यही है महल टहल मनमानी जू।।

Scanned by CamScanner

## पद - 50

बाजत आनन्द बधैया हो रामा, अवध नगर में।
राजा दशरथजी के चारि पुत्र भये श्याम गौर छवि छइया हो रामा।।
राम लखन श्री भरत शत्रुहन नाम ललित सुखदइया हो रामा।
त्रिभुवन में उत्साह भयउ अति, 'प्रेममोद' अधिकइया हो रामा।।

## पद - 51

नृप आँगने में खेलत रामलला।
बागन काग खिलौना मणिमय प्रतिबिम्बनि लखि नटनिकला।
संग भरत रिपुसूदन लछिमन उपमा योग न चारिउ फला।।
देव सुमन बरसत छवि निरखत मानत अतिसय भाग भला।
'दिव्य' अखण्ड विहार एक रस राग ताल रसकेलि कला।।

## पद - 52

चलो री सखी देखि आवैं प्यारे रघुरैया।।
घर-घर बन्दनवार पताका बरनि न जाय निकैया।
पुर नर-नारि मगन होय गावें घर-घर बजत बधैया।।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन सुन्दर चारों भैया।
कौशल्या कैकयी सुमित्रा पुनि-पुनि लेत बलैया।।
सुर-नर-मुनि जय-जयकार करत हैं बरसत सुमन निकैया।
श्री दशरथ जू के आँगन में नाचे 'मस्त' गवैया।।

Scanned by CamScanner

## पद – 53

सदा शुभ होवे जनम की घड़ी ।।
माई कौशल्या की कोख सिरानी गोद खेलावें मोद भरी।
राजा लुटावें अन्न धन सोनवाँ रानी लुटावें मोतियन की लड़ी ।।
द्वार–द्वार प्रति नौबत बाजे मालिनियाँ लिये माल खड़ी।
सुर नर मुनि जय जयकार करत हैं 'मस्त' झरत फुलवन की झड़ी ।।

## पद – 54

बधाई बाजि रही घन घोर।
दशस्यन्दन के चारि सुवन भये दुइ श्यामल दुइ गोर ।।
महल–महल प्रति नौबत बाजे मच्यो आनन्द को शोर।
चन्द्रमुखी मृगनयनी गावैं जस कोकिल बन मोर ।।
पुरवासिन की दसा बिसरि गई नहिं जानत निसि–भोर।
'सियाअली' श्री अवध नगर में रहि गयो मोर न तोर ।।

## पद – 55

बधैया बाजै आँगन में।
चन्द्रमुखी मृगनयनी अवध की तोरन तानन रागने में।
प्रेमभरी प्रमदागन नाचैं नूपुर बाँधे पायने में ।।
न्यौछावर श्रीरामललाजू की नहिं कोउ लाजत माँगने में।
'सियाअली' यह कौतुक देखत बीती रजनी जागने में ।।

## चैती पद – 56

लखि–लखि बारे ललनवाँ हो रामा, अँखियाँ सुफल भईं।
घुँघराली काली–काली लटुरिया सोभित कमल नयनवाँ हो रामा।

Scanned by CamScanner

किलकि रहे रानी जी के कोरवा भावत मन्द हँसनवाँ हो रामा।
धनि–धनि भाग हमन्हि को सजनी, चूमति मन को हरनवाँ को रामा।।
महरानी युग–युग जीवैं तेरो, सुन्दर स्याम बरनवाँ हो रामा।
'सियाअली' अब नित हम अइबै, देखन सुख के सदनवाँ हो रामा।।

## पद – 57

बाजत आनन्द–बधइया हो रामा, अवध नगरिया।
बहुत दिनन की आस सबन की बिधिना आज पुजइया हो रामा।
प्रगट भये महराज महल में त्रिभुवन को सुखदइया हो रामा।।
कोइ नाचति कोइ गावति हिलमिल प्रमुदित लोग लुगइया हो रामा।
'सियाअली' किये प्रान निछावरि निरखत मुख रघुरैया हो रामा।।

## छठी पद – 58

आई–आई छठी दिन आज रजनी प्यारी सखी।
मंगलगान चहुँदिशि छाई लागी नौबति बाज।।
बेगि चलो री राजमहल को लै–लै आरति साज।
पूछत छठी गोद लै लालन रानी युत महाराज।।
पीत बसन लालन तन शोभित भाल दिठौना भ्राज।
'सियाअली' तहँ कमल नयन में दीनो काजर आँज।।

## पद – 59

सखी री श्री महलन के बीच बरसि रही प्रेम घटा घनघोर।।
हिलि–मिलि हरषि–हरषि हिय हेली, नाचैं नई–नई नाच नवेली।
चारहुँ ओर चलीं दृग खंजन दै अंजन की कोर।।

Scanned by CamScanner

रानिन मोतियन चौक पुराये, पूजन कलश सखिन धरवाये।
मंगल गावहिं सुरन्ह मनवाहिं गहि अंचल की छोर।।

सुरगन बैठि विमान पधारे, बरसत सुमन बजाय नगारे।
रामजन्म उत्सव को आली, भयो त्रिभुवन में शोर।।

धन्य अवध के नर अरु नारी, महल-टहल के जे अधिकारी।
जोर-जोर दृग जोर 'बिहारी' प्रभु चरणन की ओर।।

## पद - 60

सब मोद मनावैं मन में राजन गृह लालन जनमे।
अनमोल रतन बिछि भूमि रहे, हीरन के तोरन झूमि रहे,
मलसाऊ जरे कलशन में।। राजन....
नर नारी आवत जावत हैं, मणि माणिक लाल लुटावत हैं,
सब धनपति है रहे धन में।। राजन....
फूलन की मग-मग महक मची, ऋतुपति ने रचना रुचिर रची,
बागन-बागन बन-बन में।। राजन....
दई आज्ञा अवधबिहारी ने, पायो अधिकार 'बिहारी' ने,
अब चित लागो चरणन में।। राजन....

## पद - 61

रघुकुलमणि श्रीराम चढ़े कौशल्या कैयाँ।
पीत झिंगुलिया अंग फिरत कबहूँ घुटनैयाँ।।

कच घुँघरारे शीश चौतनी अनूप रूप।
बघनखहा शुभचन्द चारु ग्रीवा बिच महियाँ।।

Scanned by CamScanner

रतन जड़ित चूड़ा सोहैं कटि करधनी।
पग घुँघुरू अनमोल बजत रुनझुन झनकैया।।

होत मनमोद मातु देखि-देखि श्याम गात।
धावत जननी ओर डरत लखि निज परिछैयाँ।।

चारों भैया खेलैं खेल आँगने में दौरि-दौरि।
दरशन हेत 'रमेश' लेत मन जी ललकैयाँ।।

## पद - 62

चलन सिखावे मातु ललन की गहि कर बहियाँ।
निरखि मनोहर रूप चूमि मुख लेत बलैयाँ।।

रँग-रँग फूल गूँथे केश घुँघुराले ऐन,
श्याम छटा नील घटा सोहैं रतनारे नैन,
जगमग मणियन माल दामिनी सी लुरकैयाँ।।

सिंहनख नीलमणि कण्ठ में कमंक हैं,
मोती जड़ी किंकिनी की नीकी सी चमंक है,
पीत झिंगुलिया लसत उड़त लेवे लहरैयाँ।।

भूमि पाँव धरे बजे घुँघरू सो छूम-छूम,
गोदी बीच आवें राम अँगना में घूम-घूम,
चलत-चलत गिरि परत उठावें मैया कैयाँ।।

बालकेलि करें प्रभु मग्न होत मातु हैं,
देख-देख आनन्द सों फूली न समात हैं,
'हरिहर' दरशन हेत लेत लोचन ललकैयाँ।।

Scanned by CamScanner

## पद – 63

ठुमुकि–ठुमकि पग चाल निरखि जननी सुख पावें।
गिरत–उठत फिर चलत राम हँसि सबहि रिझावें।।

बाल सुकुमार धाय भूप ढिग जाय–जाय,
बोलैं तुतरे बैन नृपति लै कण्ठ लगावें।।

मेवा पकवान आनि खावें सब भ्रात संग,
चैंया–मैयाँ नाच चौक में खेल रचावें।।

आनन्द अपार लेत मातु सब हेरि–हेरि,
कह–कह अइता कन्त अँगुरियन पास बुलावें।।

हँसें देखि बार बहू लियो गोद में उठाय,
बार–बार मुख चूमि लाल पलना पौढ़ावें।।

सोइबे के काज गीत गावतीं दराज सब,
सो जा बारे बीर झूलना झमकि झुलावें।।

पावतीं आनन्द मातु नन्द रामचन्द देखि,
निश दिन दीन 'रमेश' दरश हित चाह बढ़ावें।।

## पद – 64

चन्दा माँगें राम लला।
ठुमुकि–ठुमुकि माता ढिग जावैं, छिन–छिन खीझैं और खिझावैं,
करि–करि के उकला।। चन्दा.
कौशल्या के वारी–वारी, खीचैं सारी कबहुँ किनारी,
कबहूँ तानैं अँचला।। चन्दा.

Scanned by CamScanner

को जाने कैसे ललचावैं, हेरि अकासै पास बुलावें,
हौले हाथ हला ।। चन्दा......
कहो कहाँ तक 'रसरँग' भासे, देखें लीला देव अकासे,
कहि-कहि भला-भला ।। चन्दा......

## पद - 65

चलो री सब देखि आवैं बाजत बधैया ।।
कौशल्या-सुख सुकृत-सिन्धु से रामचन्द्र प्रगटैया।
हर्ष हिलोर उमगि दश दिशि में अग-जग मगन करैया ।।

अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह योग वार समुदैया।
मध्य दिवस में प्रगट भये हैं, सबहिन के सुख दैया ।।

सुनि दशरथ नृप खोलि खजाने मंगन तृपित करैया।
लाल निछावरि वसन लुटावहिं भूषण मणिन जरैया ।।

सदन-सदन से चलीं सुवासिनि मंगल थाल सजैया।
गावहिं गलिन लाज बिसरावहिं नाचहिं ता ता थैया ।।

शिशु-मुख निरखि हरषि तृण तोरति कोइ सखि लेत बलैया।
ललन 'कान्ति' दश दिशा प्रकाशित मानो शरद जोन्हैया ।।

## राग काफी पद - 66

मलिनियाँ बाँधो री बाँधो री बन्दनवार।
रानी कौशल्या ढोटा जायो गावो री गावो री मंगलचार।
सजि नवसप्त सबै मिलि भामिनि साजो री साजो री मंगलथार
'मधुपअली' मुख निरखि लला को तन-मन-धन सब वार ।।

Scanned by CamScanner

## राग काफी पद – 67

माँ आनन्द मंगल गावो री, दरस परस सुख पाओ गुन गावो।
धीं धा धुम किट क्राण क्राण ता थेई
ता थेई नि नि ध ध नि म प दरसा बीन बजावो।।
आज लालकी बरसगाठि ह री, सुनि–सुनि मोद बढ़ाओ सुख पाओ ।।
'श्यामदास' दृगभरि रसलीजै री, नैन सो नैन मिलावो सुख पावो।।

## राग भूपकल्याण ध्रुपद – 68

बन्दनवार बाँधो री मलिनियाँ।
यहि घर में महारानी सुत जायो मेरो मन मगन भयो री।।
साज साथियाँ मंगल गावो तोरन अलियाँ बँधावो।
शुभ घरी शुभ दिन महूरत योग लगन साधो री।।
'कान्हरदास' अति आनन्द सुनिये सकल साधो री।
श्री अवध आनि प्रगट भये जगत जीवन राघो री।।

## ध्रुपद – 69

बीन लिये नारद पितामह सारंगी लिये,
मारुत सितार मुरचंग लिये शेष हैं।
ताल लिये वरुण कुबेर करताल लिये,
झाँझ लिये पवन मृदंग अमरेश हैं।
गावैं गुण सनक सनन्दन गणेश,
उनचास कोटि तान लेत चन्द्रमा दिनेश हैं।
'लाल' कहैं अवध में दशरथजू के लाल भये,
झूमि–झूमि सभा मध्य नाचत महेश हैं।।

Scanned by CamScanner

# श्री जानकी जन्म बधाई पदावली

## मंगल पद – 1

मंगल गावो री हेली मन के भावने।
मिथिलापति केरी हेली शंकर दाहिने।।

छन्द – दाहिने विधि शम्भु अमृत बरषिये वर्षा भली।
जनक सुकृत भरे सागर सीय पंकज की कली।।
प्रफुल ह्वै दिन बढ़ो सुयश निवास कीरति संग चली।
अवध–बन ते भँवर आवैं राम रसिया वर लली।। 1
मंगल गावो री हेली दिन–दिन चौगुने।
भाग सिहावो री हेली सब मिलि आपने।।

छन्द – आपने बड़भाग जानो लागि सिय पद सब रहैं।
जानि अपनी बालपन ते बर मिले बहियाँ गहैं।।
यह संग सब दिन सुलभ सजनी लली सेवन जो चहैं।
बढ़ो सरस सोहाग स्वामिनि सहचरी पद हम लहैं।। 2
महिमा गावो री हेली सुनैना भाग की।
उमही है री हेली बेलि सुहाग की।।

छन्द – उमही सुबेलि सोहाग की बर बाम कोखि सुहावनी।
अनुराग जल सों लागि पाल्यौ सुरति मालिनि भावनी।।

Scanned by CamScanner

यह छाँह टेक बढ़ाय मूरति लता ललित लुभावनी।
फूल है करि माल दशरथलाल गर पहिरावनी।। 3
चौक पुरावो री हेली सोहिलो गाइये।
जनम लख्यो है री हेली ब्याह मनाइये।।

छन्द – उर चाह धरिये ब्याह की बर राम आवें पाहुने।
यह लाहु हमको भूप प्रण हित शम्भु चाप तुरावने।।
सियराम मण्डप ललित भाँवरि समय सरस सोहावने।
यह आस 'कृपा निवास' उर की विपुल मंगल गावने।। 4

## राग जैतश्री पद – 2

अखिल लोक श्री उदय भई हैं, जनकराय पुर जाई।
निरवोपम कन्या निमिकुल की सीता ऐसे नाई।। 1
बरनत बिदुष पार नहिं पावत वाणी रही लजाई।
जाके चरण कमल भव नौका नाहिन आन उपाई।। 2
निगम सार सम सुयश जाहि को कहत तपोधन आई।
ब्रह्म रुद्र अजहूँ पद आश्रित 'अग्रअली' बलि जाई।। 3

## पद – 3

आजु महा मंगल मिथिलापुर घर-घर बजत बधाई री।
कुँवरि किशोरी प्रगट भई हैं, सबहिन की सुखदाई री।। 1
ताही दिन ते जनकपुरी में गृह-गृह सम्पति आई री।
द्वारे-द्वारे बन्दनवारे आँगन आनन्द छाई री।। 2
चढ़ि विमान सुर कौतुक देखहिं नभ दुन्दुभी बजाई री।
जनकलली को सोहिलो गावत पुष्प बृष्टि झरि लाई री।। 3

Scanned by CamScanner

सुन्दर श्याम राम की प्यारी शोभा अधिक सुहाई री।
'तुलसिदास' बलिहारी छवि पर गावत भक्ति बधाई री।। 4

## पद – 4

जा दिन सीता जनम भयो।
ता दिन ते सबही लोगनि के मन को शूल गयो।। 1
अध्यर आदि अवनि ते उपजी दिवि दुन्दुभी बजाये।
बरसत कुसुम अपार शब्द जय व्योम विमाननि छाये।।
जनकसुता दीपक कुल मण्डन सकल सिरोमनि नारी।
रावन मृत्यु मुकुति अमरनगन अभय दान भयहारी।। 3
सुन्दर शील सुहाग भाग की महिमा कहत न आवै।
परम उदार राम की प्यारी पदरज 'नाभौ' पावै।। 4

## पद – 5

आज जनक नृप–राजसदन में बाजत रंग बधाई।
प्रगट भई शुभ रूप शीलनिधि श्रीसीता सुखदाई।। 1
सुनि पुर नारि सिंगार नवल तन घर–घर ते उठि धाई।
किंकिनि नूपुर शब्द मनोहर पुर वीथिन छवि छाई।। 2
हाथन कंचन थार विराजत मंगल साज सजाई।
गावति गीत पुनीत सबै मिलि निज मन्दिर सों आई।। 3
निरखि वदन छवि सदन कुँवरि को पुनि–पुनि लेत बलाई।
वारति भूषण करति आरती हरष न हृदय समाई।। 4

Scanned by CamScanner

रानीजू वर वसन सुवासिनि विविध भाँति पहिराई।
चिरजीवहु यह सुता सुलक्षणि देत असीस सुहाई।। 5

सतानन्द आनन्द उमगि मन संग विप्र समुदाई।
करत वेद–विधि सामगान धुनि श्रवन सुखद मन भाई।। 6

मागध सूत भाट बन्दीजन बिरदावली सुनाई।
देत दान नृप धेनु वसन मणि कंचन झरी लगाई।। 7

ध्वज पताक वर कनक कलश पुर शोभा बरनि न जाई।
बजत निशान भूमि नभ सुर मिलि कुसुमावलि बरषाई।। 8

सुफल मनोरथ भये सबनि के मोद अधिक अधिकाई।
हिये हुलास 'दासनारायण' भक्ति निछावरि पाई।। 9

## पद – 6

शुभ दिन सुकुल पक्ष तिथि नौमी नौबत बजत सुहाई री।
जनक नरेश भवन सुकृत फल मूरति कन्या जाई री।। 1

सुनि पुर बनिता बनि ठनि दौरीं गजमनि चौक पुराई री।
मानो लेन उदधि ते लहरें सुख विधु मिलनि सिधाई री।। 2

झलकत अंचल चंचल के तन उमही घर न रहाई री।
मानो चपला विपुल मेघ ते दुरि–दुरि देत दिखाई री।। 3

झरि–झरि परत कुसुम कच विथुरे श्रमकन मुखपर छाई री।
मनो चन्द मुकुता को नव बन डारै मणि कुमलाई री।। 4

करि–करि थारि–थारि–मंगल भरि कोई चलि न सकाई री।
जापै रूप भरी मृगनयनी जे पुनि हर्ष भराई री।। 5

Scanned by CamScanner

अनब्याही ब्याही लरिकौरी और कोई जठराई री।
अब परनी मानो सब तरुनी छवि बरनी नहिं जाई री।। 6

गावत गीत पुनीत बधाई पटरानी ढिग आई री।
मानो शारद विपुल वेष धरि सुख की करत बड़ाई री।। 7

विविध वेष धरि भेंटत सब मिलि रानी भाग सिहाई री।
मानो छवि की छटी नटी सब पूजत भाग भलाई री।। 8

परी धूम नभ भूमि रसातल सुनि सिय जन्म बधाई री।
नाग सिद्ध मुनि चारन गावत अपर सुमन बरषाई री।। 9

गान निशान वेद मंगल धुनि सुनिय न आप पराई री।
जय-जय वाणी तिहुँपुर ब्यापी परवन पै अधिकाई री।। 10

जनकनगर नभ विमल चाँदनी बिबुध कुसुम विगसाई री।
सबै प्रकार प्रफुल्लित निरखै कमल विपिन मुरझाई री।। 11

नृप नागरि सागरि ज्यों उमगित जा घर सम्पति छाई री।
ज्ञान विराग रतन निवछावरि प्रेम लहर लहराई री।। 12

योग समाधि सिद्ध फल मुक्तिन सन्त चहैं ठकुराई री।
'कृपानिवास' सबै भरि पाये जिन सिय गोद खिलाई री।। 13

## पद - 7

नगर बगर में धूम सु घर-घर बरस गाँठि प्यारी जनकलली की।
गावत प्रमदा विशद बधाई सुभग सुनैना कोखि फली की।
मंगल गंध प्रगट मिथिलासर राम भँवर हित कमल कली की।

Scanned by CamScanner

## पद – 8

गावति मंगल मिथिलापुर की।
गीरी गुन–जीवन गरवीरी तान रसीली मधुरे स्वर की।। 1
सोंधे लपट उपट अंगन सों अलिगन झपट निपट चातुर की।
नर्तति नवल नटी पट फरकत सरकत नीवी मृदु कटि मुरकी।। 2
कबरिन्ह सो झरि सुमन परत कुछ केशरि कुमकुम सीकर कुरकी।।
बिबस भई गई लाज तियन की प्रीति प्रगट भई सबके उर की।। 3
सुर नर पतनी जितनी आई कौतूहल रस–बस आतुर की।
'कृपानिवास' खड़ी पुतरी सी सुथरी शीश परी मनु भुरकी।। 4

## मंगल पद – 9

सियजू सुहेलो गाय बजाय सु सुन्दरी।
मिथिलापुर की नारि सुहायनि सुन्दरी।। 1
ललकि ललित लय भास मधुर ठहरावहीं।
सुर वद ग्राम ताल मिलि राग सोहावहीं।। 2
नख शिख सजित सिंगार दिपैं छवि ऊजरी।
मानो कनक सुबेलि सुफल फूलन भरी।। 3
यौवन रूप सु भार भरी झुकि–झुकि परैं।
मदन खिलाड़िनि हैं उमड़ि गुन सो फिरैं।। 4
फटिक अजिर करजोरि कबहुँ झूमरि करैं।
मनहुँ मरालिनि पाँति सुभग पय सर चरैं।। 5

Scanned by CamScanner

छकी छबीली छवनि घटी छवि को छटा।
हास विनोद कोलाहल कौतुक के ठटा।। 6

रीझि रही नृप नारि उतारति आरती।
करति सु सम्पति वारि न नेकु सँभारती।। 7

भीजि रह्यो नृप रीझि कहैं कस दीजिये।
मैं मेरी सब नारि मोल करि लीजिये।। 8

विथकि विचारत बिबुध बड़ी कोउ ए गुनी।
विधि कृत विज्ञ जहाँ जग देखी न सुनी।। 9

निरखत घन के ओट सराहत सुरबरे।
जनकपुरी सुख देखि सकल आनन्द भरे।। 10

तिनके मंगल विपुल निगम न सकैं कही।
'कृपानिवास' उपास सिया जिनके सही।। 11

## पद - 10

आजु सखी एक बात नगर में अबहिं सुनी मन भाई री।
प्रगट भई सरवेश्वरि सीता जनक नृपति घर आई री।। 1

गृह-गृह द्वार नौबतैं बाजें मोतियन चौक पुराई री।
नगर गली बाजार जहाँ-तहँ गावत गीत सोहाई री।। 2

कदलि-खंभ अरु ध्वजा पताका विविध वितान तनाई री।
कंचन कलश बनी दीपावलि पुरी रुचिर छवि छाई री।। 3

हरदी दही परस्पर छिरकत माखन मुख लपटाई री।
नाचत सब नर नारि परस्पर देह दशा बिरसाई री।। 4

Scanned by CamScanner

उड़त गुलाल अबीर अरगजा अवनी कीच मचाई री।
केशरि घोरि कुंकुमा छिरकत कनक कलश धरवाई री।। 5
कनक रतन गज बाजि जहाँ तहँ रँग-रँग बसन बनाई री।
देत दान महाराज जनक नृप याचक जनहिं बुलाई री।। 6
चेरि भई सब अष्टसिद्धि श्री नवनिधि रहीं लजाई री।
अचरज कहा जगत की जीवन प्रगटीं सिय सुखदाई री।। 7
उमगे फिरत सकल पुरवासी सिय स्वामिनि सी पाई री।
सुख विलसो श्री जनकनन्दिनी 'बालअली' बलि जाई री।। 8

## पद - 11

नमो-नमो श्री जनकलली जू।
जनमत भई विदेह नृपति गृह कीरति त्रिभुवन उमगि चली जू।।
मिथिला आलबाल निमिकुल की सुकृत बेली सुफल फली जू।
बीनत मुनि माली ब्रह्मादिक बालचरित मृदु कुसुम कली जू।।
षड्दल गुण सम्पति परिपूरण चितवत अनुपम रूप झली जू।
कृपा निवास सुरभि प्रेमा भर सेवत अलि बड़भाग भली जू।।
'सूरकिशोर' निगम जल सींचत मायिक गुण एको न रली जू।
अवलम्बन रघुवीर कलपतरु भइ भू पर उपमा अतुली जू।।

## पद - 12

आजु जनकपुर बजत बधाई।
प्रगट भई कुलमण्डन कन्या आनन्द उर न समाई।। 1

Scanned by CamScanner

हरषे जनक जननि पुनि हरषी, दरशन पावन पाई।
पूरन भाग सुकृत फल लाग्यौ, भई बात मन भाई।। 2

हरषत बरषत कुसुम परस्पर, नभ दुन्दुभी बजाई।
भयो क़ोलाहल कौतुक देखें, नाचत सुर समुदाई।। 3

देत दान सनमान सहित नृप जाचक जात अघाई।
शिव प्रसाद ते भरे भवन सब, अधिक–अधिक अधिकाई।। 4

घर–घर बन्दनवार पताका, मंगल गीत सुहाई।
जन्म उछाह जानकी जू को बरनौं कहा बनाई।। 5

नगर–बगर निवछावरि मनिगन नाचत लोग–लुगाई।
जन्म बधाई सब मन भाई 'अलिकिशोर' तहँ गाई।। 6

## पद - 13

जनकराय के कुँवरि प्रगट भई, बाजत रंग बधाई।
जाकी कृपा कटाक्ष लेश ते, विधि हरिहर प्रभुताई।। 1

जाको यश निगमागम सुरमुनि, शेष सिद्ध समुदाई।
नेति–नेति कहि गावत ध्यावत, चरणकमल चित लाई।। 2

जेहि नखछवि ते रमा आदि तिय, पाई रूप लोनाई।
ह्वै किंकरी सभीत प्रीति युत, सेवत ताहि सदाई।। 3

रूप राशि सोइ गोद सुनैना, मोद न हृदय समाई।
ब्रह्मादिक सुर चढ़े विमानन, निज–निज साज बनाई।। 4

बरषत कुसुम समूह निरन्तर, नभ दुन्दुभी बजाई।
गान करत गन्धर्व अपछरा, निर्तत भेद बताई।। 5

Scanned by CamScanner

जै–जै धुनि बैकुण्ठ लोक लौं, गोपुर सरस सुहाई।
बीथी अति रमनीय नगर की, अतर सुगन्ध सिंचाई।। 6

गृह–गृह प्रति नव ध्वजा पताका, बन्दनवार बँधाई।
मंगल कलश धरे प्रति द्वारन, गजमनि चौक पुराई।। 7

हर्ष बिवश मिथिलापुरवासी, सम्पति सकल लुटाई।
छिरकत केशर नीर अरगजा, मृगमद कीच मचाई।। 8

नाचत नटी अनन्त सुन्दरी, राजद्वार अँगनाई।
मागध सूत बन्दि निमिकुल को, गावत बिरद बड़ाई।। 9

बाजे बजहिं बिविध सुर–सुन्दरि, नाचहिं वर सुरनाई।
नव नागरी राजपुर घर की, नव सत साज सजाई।। 10

मंगल द्रव्य हेम थारन भरि, गजगामिनि चलि आई।
करत गान प्रविशत नृप मन्दिर, सुरतिय तिन्है लजाई।। 11

दिव्य वसन भूषन सजि अंगन, दिव्य सुगन्ध लगाई।
वस्तु अनेक भेंट लैं पुरजन, चले राजगृह धाई।। 12

महा भीर रसरंग कोलाहल, नहिं कछु परत सुनाई।
सतानन्द आदिक मधुरे स्वर, वेद ऋचा धुनि छाई।। 13

होम–अनल की धूम सुगन्धित, बढ़ि अकाश नियराई।
तिरहुतनाथ जानि शुभ अवसर, याचक विप्र बोलाई।। 14

स्वर्ण वसन मनि रजत बाजि गज, शिविका रथ सुरगाई।
करि भूषित दिये भूप सबनि कहँ जो जेहि अति मन भाई।। 15

Scanned by CamScanner

देत आशिषा चले लड़ैती, चिरजीवो सुखदाई।
सरबस दान दियो नृप रानी, छत्र मुकुट बिलगाई।। 16

पुलकावली ललित अंगन में, प्रेम वारि करि लाई।
उमगि चल्यौ आनन्द-सिन्धु लखि, दिनमनि गति बिसराई।। 17

वर्ष एक को भयो दिवस यह, मरम न काहू पाई।
देखत रबि निज बंस महासुख, चले अनन्द बढ़ाई।। 18

सुख समाज अवलोकि शेष, श्रुति, शारद रही चुपाई।
लोकपाल मिथिलेश विभव लखि, निज ऐश्वर्य भुलाई।। 19

निज-निज लोक गये सुरवर नृप, गावत गुन गरुआई।
जनकलली रसरली बाल की 'चित्रअली' बलि जाई।। 20

## पद - 14

बजत बधाई आज जनकपुर, मंगल मुद अधिकाई। 1
जाई सुता सुनैना रानी, सकल लोक सुखदाई।। 1 2

नौमी सित माधव पुनीत अति, मास सकल श्रुति गाई। 3
मध्य दिवस शुभ लगन वार ग्रह, उच्च पंच शुभदाई।। 2 4

घर-घर गान करत पुर बनिता, दान देत उमगाई।
भूषन बसन करत न्यौछावरि, निज वित सुधि बिसराई।। 3

बगर बजार चौक चारौं दिशि, रचना ललित रचाई।
ऊँचि अवासनि ध्वजा पताका, केतु कलश छवि छाई।। 4

मणिमय बन्दनवार द्वार प्रति, गजमणि चौक पुराई।
धरे कनक घट सुभग साथिये, दीप माल रुचिराई।। 5

Scanned by CamScanner

रोपे बंश रसाल कदलिका, पूगीफल बहुताई।
जहँ-तहँ वसन वितान बादले, शोभा बरनि न जाई।। 6

अतर गुलाब अरगजे मग बिच, सींचत छिन-छिन छाई।
नाचत नटी चौक चौहट बिच, अपने रँग उमगाई।। 7

पुरवासिनि सजि मंगल गावत, भूप भवन चलिं धाई।
भई भीर रावले राय के, निज पर कछु न सुनाई।। 8

बाहिर बन्दीजन विरदावलि, बदत बंश विदिताई।
गायक गुनि बहु याचक जन की, संकुलता किमि गाई।। 9

नाचत नभ सुर नटी मगन मन, बाजे बिविध बजाई।
विबुध विमान साजि सब आये, निरखत नगर निकाई।। 10

बरसत सुरतरु सुमन समूहनि, सेवन समय जनाई।
विधि हरिहर बहु रूप सराहत, शीरध्वज प्रभुताई।। 11

रमा उमा शचि शारद सुरतिय, नरतिय वेष बनाई।
आई महल मिथिलापति के सिय, रूप निरखि सुख पाई।। 12

सुकृत सराहि कहत मृदु बानी, रानी जू लीजे बधाई।
ऐसी सुघर सलोनी सुलक्षणि, बेटी कौन तिय जाई।। 13

हम तो सुनी न लखी आजु लौं, या सुखमा परताई।
'रसिकअली' जौ तुला तौलिये, कोटिन रति हरुवाई।। 14

## पद - 15

Scanned by CamScanner

माधवमास पुनीत परमप्रिय, तिथि नौमी सरसाई।
अग-जग हरस बरस सुर कुसुमन, नभ दुन्दभी बजाई।। 2

रानि सुनैना मन प्रसन्न युत, गान करत हरषाई।
मध्य दिवस प्रगटत भई, सियजू, अद्‌भुत राति जगाई।। 3

दिव्य सिंहासन मणिमय झालरि, नाना रतन लगाई।
षोडस सखी सौज मंगल सजि, नाम सखी समुदाई।। 4

श्रीप्रसाद श्रीचन्द्रकला जू, विमला विमल बनाई।
मदनकला श्री विश्व मोहिनी, श्री उर्मिला भलाई।। 5

चम्पक माला रूप लता जू, चारुशिला रुचिराई।
हेमा छेमा वरासुरोहा, पद्‌म सुगन्धा माई।। 6

श्री लक्ष्मणा सलोनी सुभगा, चारु लोचना भाई।
चहुँदिशि सखी लिये मनिमाला, स्वामिनि सेवा लाई।। 7

चारु चन्द्रिका जड़ित मनोहर, नख-सिख सुन्दरताई।
शेष शारदा मौन गही जब, को जो शोभा गाई।। 8

जनकराज श्री रानि सुनैना, यह छवि देखि लजाई।
मन की जाननिहार सु सीता, बालरूप दरसाई।। 9

कौतुक देखि विधाता, शंकर देवराज समुदाई।
नाचत गावत जै-जै स्वामिनि 'जानकिवर' जै पाई।। 10

## पद - 16

जय-जय-जय श्री स्वामिनि सीता।
बरषगाँठ जा दिन सिय आयो, भायो सब जग भयो अभीता।।

Scanned by CamScanner

जहँ–तहँ लोक असोक बिलोकत, कोउ न रह्यो सुख आनन्द रीता।
श्री मिथिलेस सुनैना रानी, आपु बजावत गावत गीता।।
ज्ञानी ध्यानी अभिमानी सब, कहत अवस है रघुवर सीता।
'श्रीजानकीवर' की प्राणपियारी, जपत रहत नित सीता–सीता।।

## पद – 17

जनकराय के मोद बढ़ायो, सुनि ढाढ़ी निज आयो।
बंस प्रसंसि जोहारि सु आदरि, करि नृप निकट बुलायो।। 1

निमिकुल दीप सुनो या घर की ढाढ़िनि वेदनि बेदन गायो।
कुँवरि भई सत कुँवरि सिरोमनि, आज दाव बनि आयो।। 2

विमल मनोरथ विपुल दिवस ते, सुफल जानि हरषायो।
मो मन चाह निबाह बड़ो कुल, परम उछाह समायो।। 3

या पौरी तजि अपर न याँचों, दृढ़ मन आस सदायो।
सुनासीर कमलापति आगे, करजोरे धृग जायो।। 4

यह घर के बल धनद वारि सत चाहत आवत धायो।
सिद्धि बोहारत रिद्धि पदारथ, मेरे बाल खेलायो।। 5

तुम्हरे पितु ने मेरे पितु को, नव लख बाजि चढ़ायो।
भूषन बसन गिनै को नागर, सागर मनहिं छकायो।। 6

रावरि देन बनै नहिं बरनत, जय जयकार सवायो।
अब मोहिं बिदा करो घर जाऊँ, ढाढ़िन लग्यो उम्हायो।। 7

हँसि कह राव कहो सोइ दीजै, राज कोष पुर चाह्यो।
तुमको अचल सो राज हमैं सुख, लैहौं कछु मन भायो।। 8

Scanned by CamScanner

सुनु महराज राज चूड़ामनि, सुयश रहै जग छायो।
अपनी लली को बदन दिखावो, अब मैं सब भरि पायो ।। 9

सभा सकल आनन्द मगन भई, सुखमय वचन सुनायो।
'कृपानिवास' राखि छवि सियजू, लखि-लखि मन न अघायो ।। 10

## पद - 18

ढाढ़िनि रघुवंशिन की आई।
चढ़ि गज बाजि बहोर संग बहु, अतिहिं तमाम सुहाई ।। 1

पैठत पुर फरके अंग अंगनि, मंगल सगुन जनाई।
आजु मनोरथ होय सुफल सब, करि आयो मनभाई ।। 2

पुर पौरी ते गाय बजावति, आवत सब इतराई।
देखि स्वरूप लगे सँग कौतुक, बिचकित लोग लुगाई ।। 3

करत बिचार नारि नर सिगरे, को है कौन बुलाई। 1
इन्द्राणी ब्रह्माणी गिरिजा, सुखमा देखि सकाई ।। 4 2
3
सुघरि सभा मन्दिर ढुरि नाची, नृप बोलनि में पाई। 4
सबहिन जानी सनमानी तब, रानिन बोलि पठाई ।। 5

चली सहल मद गहल महल, में लहलहात तरुणाई।
मानो प्रेम भक्ति की महिमा, सुख बैकुण्ठ समाई ।। 6

बड़ी ठौरि की जानि मानि करि, रानिन आइ अगाई।
मनो छवि गंग मिलन वारिधि ते उमंगि तरंग सु धाई ।। 7

नाइ शीश आशीष दई बलि, हो जगदीश सहाई।
जाई कुँवरि उम्हाई सुनु बलि, आई देन बधाई ।। 8

Scanned by CamScanner

करि तसलीम उठी जब नाचन, जौवन जोर गोराई।
उघटि सुगंध पतंग उछारनि, सुघटि मृदंग बजाई।। 9

नूपुर तान गान तालिन सों, इक स्वर राग रसाई।
ताल प्रबन्ध मधुर छन्दनि सौं, मन्द-मन्द सुर गाई।। 10

सब गुन कला प्रवीन झीन कटि, मटकि लटकि लचि जाई।
मनो छवि दीपशिखा सी सुन्दरि, पवन लगे थिरकाई।। 11

रम्भादिक सुरबधू विमोहित, शारद की सुघराई।
चकित सबै मुनिजन त्रिभुवन के, योग समाधि भुलाई।। 12

देन लगे नृप रीझि निछावरि, रावरि नारि सिखाई।
ऐसी कछु दीजै ढाढ़िन को, होय अवध में बड़ाई।। 13

अनगिन पट भूषन मनि मानिक, हथिनी माल भराई।
संग के याचक किये अयाचक, दासी दास अघाई।। 14

नाक चढ़ाय कहति ढाढ़िनि हँसि, नहिं मम भूख भगाई।
ज्यों मुकुता फल भोगि मरालिनि, कंकड़ दै बहकाई।। 15

बिनय करैं नृपरानि ढाढ़िनि सों, खोलो बात दुराई।
हमरो हैं सब तुमरे आगे, शंकर कृपा कराई।। 16

धन की चाह चली नहिं घर ते, और कछु ठहराई।
हमरे लला लली तुम्हरे बलि, कीयो लिये सगाई।। 17

हँसे राय रानी मनमाने, तब सिय गोद खिलाई।
कुँवरि कान में कछु बानी कहि, मनो निज बात पढ़ाई। 18

चली अवधपुर सौगुन सुखधन, मान महत गरुआई।
'कृपानिवास' प्रसाद उपासिक, मन की आस पुराई।। 19

Scanned by CamScanner

## सोहर पद - 19

जनकसुता भइ आज काज बिसरावहिं हो।
ललना, सजि नवसप्त सिंगार नृपति घर जावहिं हो।। 1

भरि-भरि मंगलथार समाज बनावहिं हो।
ललना, झुण्ड-झुण्ड मिलि चलत महा छवि छावहिं हो।। 2

श्री जनक भवन में जाय चोप उपजावहिं हो।
ललना, नाचहिं राचहिं रंग बाजने बजावहि हो।। 3

धनि राजा धनि रानी जू गोद खेलावहिं हो।
ललना, धनि हम सब पुरनारि जो सोहिलो गावहिं हो।। 4

यों कहि वृन्द बनाय रावले आवहिं हो।
ललना, निरखि लली करि आरति अति हुलसावहिं हो।। 5

यह समाज सुख देखि देव ललचावहिं हो।
ललना, व्योम विमान बनाइ सुमन झरि लावहिं हो।।6

जो यह मंगल गावहिं गाय सुनावहिं हो।
ललना, 'सुधामुखी' सिय चरण भक्ति बर पावहिं हो।। 7

## सोहर पद - 20

हलवा जोतैते राजा जनकन येहो राजा जनकन हो।
ललना, अनुपम कन्या पाये सु मोद बढ़ायेल हो।। 1

मास वैशाख शुक्लपक्ष नौमी, शुक्लपक्ष नवमी न हो।
ललना, सीता नाम धराये, मुनिन गुन गायेल हो।। 2

Scanned by CamScanner

तोरन, केतु पताक, सु येहो पताकन हो।
ललना, बन्दनवार धराये सु नगर सुहायेल हो ।। 3

बद पुरान प्रसंसत जाहि प्रसंसत हो।
ललना, सुनैनाजू गोद खेलायेल हिय हुलसायेल हो ।। 4

'रामशरण' मिथिलेश द्वार पर, मिथिलेश द्वार पर हो।
ललना, चहुँदिसि मंगल चारु सु सोहर गायेल हो ।। 5

## रेखता पद – 21

लखो री आज निमिराजैं। खुशी के सज रहे साजैं ।।
महल में बेद धुनि भारी। करै हैं बिप्रवर झारी ।।
मगन मन सब हैं याचक गन। मिले हैं मनि जटित भूषन ।।
सुआसिनि गान है करतीं। मुदित मन साथियाँ धरतीं ।।
सुमन बहु रंग की माला। बरसती हैं अमर बाला ।।
गगन में दुन्दुभी बाजी। हुए नर नारि सब राजी।
सुगन्धित जल छिड़कते हैं। चटकते हैं मटकते हैं ।।
समय है खूब सुखदाई। सुनैना ने सुता जाई ।।
स्वभाविक ही सुहावन है। करोड़ों रति लजावन है ।।
'युगल' बर की कृपा पाऊँ। सदा इनका सुयश गाऊँ ।।

## रेखता पद – 22

सुहाई आज की रजनी। बिलोको नैन भरि सजनी ।।
सखी सब रंग राती है। सुहावन गीत गाती है ।।

Scanned by CamScanner

विबिध भूषन बसन धारे। किये नवसप्त सिंगारे.।
सुनैना के भवन सोहैं। रमा गौरादि मन मोहैं।।
अली बिधु मुख निरखती हैं। पुलकि तन हिय हुलसती हैं।।
लता सी 'हेम' की डोलैं। मधुर मृदु पिक वचन बोलैं।।

## रेखता पद - 23

सुकृत मिथिलेश के जागे। सहायक देव गन लागे।।
चले सुख सिन्धु उमड़ाई। निरखि शशि मुख सुता जाई।।
सुनैना प्राची दिशि पावन। उदय यह बिधु कियो भावन।।
जगत में छाई उजियारी। गई त्रय ताप हिय हारी।।
सुधामय लोक सब कीन्हें। जनम मरणादि हरि लीन्हें।।
बधाई बज रही घर-घर। सकल मिथिलापुरी अन्दर।।
न जाचक कोई मिलते हैं। अजाचक सब निकलते हैं।।
बजे पुर व्योम में बाजे। रसिक आनन्द में गाजे।।
'मधुपअली' सबको कर लीजै। सदा आनन्द सुख दीजै।।

## रेखता पद - 24

चरणगति चलति हैं प्यारी। निरखि गति मगन महतारी।।
ठुमुकि-ठुम अवनि पग धरती। रुनक झुन पैजनी करती।
अली मिलि खेलना ल्याई। मुखाग्रे गेंद गुडुवाई।।
नचैं शुक सारिका मोरा। फिरैं कलहँस के जोरा।।
नचावैं ताल दै बाला। दिखावैं रत्न मणि माला।
भयो सुख भवन में भारी। गनत गुण शारदा हारी।।

Scanned by CamScanner

मातु की गोद पुनि आई। उतारत नून अरु राई।।
बिबुध जन कुसुम बरषावैं। रेखता 'राजमन' गावैं।।

## पद – 25

डगंर–'डगर बिच मिथिला नगरिया बधैया बाजे।
राजाजी के शोभे मुकुट पितांबर सुनैना रानी के लाली पियरी चुनरिया।।
राज जी लुटावें अनधन सोनवाँ सुनैनारानी नग जड़ित जेवरिया।
'भगवत रसिक' मगन होइ गावें नचन लागे सब लोग लुगइया।।

## पद – 26

सुनैना रानी बजत बधाई तेरे द्वार री।
प्रगटी सुता सुलच्छनि सुन्दरि, मिथिला अवध सिंगार री।।
रघुकुल तिलक द्वार तेरे अइहैं, भूपति मुनिन समाज री।
'अग्रअली' की स्वामिनि प्रगटी, रसिकन हिय अनुराग री।।

## पद – 27

सुनैना रानी अपनी लली को दुलरावैं।
मुख चूमैं अरु कण्ठ लगावैं, मन में मोद न मावैं।।
शिव ब्रह्मा जाको पार न पावैं, निगम नेति कहि गावैं।
'हरिसहचरि' बड़भागिनि रानी, अपनी गोद खिलावैं।।

## पद – 28

जनकलली जू को सोहिलो गाऊँ।
धन्य जनक धनि रानी सुनैना, निरखि लली मुख दृगन जुड़ाऊँ।।
या कन्या कुल प्रगट कियो है, सुर नर मुनि जाको सुमिरत नाऊँ।
'हरिसहचरि' वारत तन मन धन, भक्ति बधाई नित नई पाऊँ।।

Scanned by CamScanner

## पद – 29

अवधपुर मंगल धुनि सरसानी।
नवल बधू की वर्ष गाँठ लखि, फूली दशरथ रानी।।
नगर नगारे नौबत बाजै, नाचहिं नवला गावत बानी।
'कृपानिवासअली' छवि निरखत, वारि सु पीवत पानी।।

## पद – 30

चलिं छाँड़ि सकल गृह काज जनकपुर कामिनियाँ।
अनुपम बेटी जाई सुनैना, सुनत दौरि जैसे दामिनियाँ।।
कंचनथार आरती साजैं कामिनि कोटि लजावनियाँ।
कोकिल कण्ठ लजात गान सुनि, गावत जन्म बधावनियाँ।।
पहुँचीं जाइ महल के भीतर, आरति करत न्यौछावनियाँ।
निरखि सुता छवि नेह छकी उर, देह दशा सुधि कावनियाँ।।
'रसिकअली' की स्वामिनि सियजू, नाते नेह निबाहनियाँ।
जाके पद सेवति हरिहर तिय, शारद गुणगण गावनियाँ।।

## पद – 31

बाजे-बाजे बधाई आजु जनकपुर रंग भरी।
रानी सुनैना बेटी जाई, आज सुदिन शुभ योग धरी।।
भये मुदित सुर साधु भूमि द्विज, असुरन के सिर गाज परी।
गोरे अंग रूप गुणराशी, दामिनि की दुति दूरि करी।।
घर-घर गान करत पुरबनिता, मंगल घट प्रति द्वार धरी।
रुचिर वितान पूग कदली तरु, रोपि सुमंगल द्रव्य भरी।।

Scanned by CamScanner

सजि-सजि यान विबुध नभ छाये, बरसत कुसुम लगाइ झरी।
'रसिकअली' गावत सुरगायक, नाचत कोटिन इन्द्रपरी।।

## पद - 32

बाजे-बाजे बधाई वाद्य सोहावन सुन्दरियाँ।।
श्री नृपमणि मिथिलेश सदन कल, कौतुक नाना हुँदरियाँ।
वारों तन मन बसन लसन भल, भूषण मोहन मुंदरियाँ।।
सजनी साज सिंगार हार उर, पहिरु रँगीली चूँदरियाँ।
'युगलअनन्य' हिये हरदम नव, परत प्रेम रस बूँदरियाँ।।

## पद -33

नाचे-नाचे नवेली नारि नूतन नाज करे।
ताथेइ-ताथेइ तरल ताल गति, रति पति प्रान हरे।
विविध विलास प्रकास हास रस, जस भल भाव भरे।।
रीझि देत मिथिलेस महामनि, मुक्तामाल गरे।
'युगलअनन्य' मोहिनी मूरति, सिय हिय माँहि धरे।।

## पद - 34

गावो-गावो सहित अनुराग बधाई सिय जू की।
ऐसोइ दिवस सोहावन भावन, भामिनि, भूतल भाग।।
कुसुमकली बिकसी नाना विधि, सिधि सब विहरत बाग।
योग सुयोग नखत नवीन निज, नेह मनोहर राग।।
सहज सुभाय गाय गुनगन सखि, सजिए सरस सोहाग।
श्री मिथलेश सुता कल कीरति, उदित भुवन गत दाग।।

Scanned by CamScanner

आलस नींद तजो सब सजनी, भाई रजनी जाग।
'युगलअनन्यशरण' की स्वामिनि , सुख सीमा सत माँग।।

## रूपक धमार पद – 35

प्रगटी लली मिथिलापति घर रे, मोद भयो सुख भयो त्रिभुवन में।
बजत बधाई गुनि जन गावत, नचत मुदित मन नारी और नर रे।।
पुर कुलबधू ढोव लै निकसत, बिकसित मुख दुति दामिनि तन रे।
'दम्पतिअली' सुमन सुर बरसत, हरषत मुनिजन बिधि हरि हर रे।।

## पद – 36

पगन कब चलिहौ मेरी सिय प्यारी।
बार-बार उर लाय मल्हावति, प्रेम मगन महतारी।।
भूषण वसन सँवारि निरखि छवि, लेहिं मातु बलिहारी।
बाल-विनोद मोद भरि सब उर, तन मन सुरति बिसारी।।
जाके गुण गावत सनकादिक, शेष शारदा हारी।
'लालदास' तेहि निरखि सुनैना, नैन निमेष निवारी।।

## पद – 37

सुनैना माई धनि-धनि तेरी बेटी।।
जाको अंत अनन्त न पावत, सो तव गोद में लेटी।
जेहि दिशि दृग किंचित अवलोकति, तेहि के सब दुख मेटी।।
यहि पद सद रति अति मुद दाई, सब सुख सुकृत समेटी।
श्री गुरुकृपा सु 'युगलविहारिनि' पाय प्रिया पिय भेंटी।।

Scanned by CamScanner

## पद – 38

तेरी लली चिरजीवो री माई।
सकल लोक पद सेवहिं याके सीता नाम सुहाई।।
जग विजयी गुण शील मनोहर नेह भर्‍यो रसदाई।
'रसिकअली' वर मिलिहैं याको कोटि अनंग लजाई।।

## पद – 39

चिरजीवो हमारी दुलारी सिया।
जाके हित मिथिलेश सुनैना अमित जनम बहु तप सु किया।।
गनपत्ति गौरि महेश कृपा से पूरी भई अभिलाष हिया।
अब नित नव आनँद सरसैहैं सुख पैहैं मिथिला की तिया।।
नर–नारी मन माने मनोरथ पाय न फूलि समैहैं हिया।
'मधुपअली' सिय के ब्याहन को जब ऐहैं अवधेश पिया।।

## पद – 40

हमारी लाड़िली गुसइयाँ कुशल राखैं।।
जाकी, कृपा कोर नित नूतन हम आनन्द सुधा चाखैं।
देवी देव पूजो सब मिलि के जामें नहीं कोउ मन माखैं।।
बर अनुकूल देहु जगदीश्वर पूजैं हिया की अभिलाखैं।
'मधुपअली' युग–युग जिवो स्वामिनि श्री सियजू की जय–जय भाखैं।।

## पद – 41

मैया मैं आई बड़ी दूर से खिलौना ले लो।
आज सुनी मिथिलेश भवन में लली प्रगट भई आई।
जनक नगर नरनारि मुदित मन घर–घर बजत बधाई।।

Scanned by CamScanner

भाँति-भाँति के सुघर खिलौना अपने हाथ बनाई।
अति अनुराग पगहिं पग चलिकै मैं तुम्हरे ढिग आई।।
मेरी यह अभिलाष पूरि करि देहु सुनैना माई।
मैं अपनी लै गोद लड़ैती को तनि लेउँ खेलाई।।
मोद विनोद जनक-आँगन में दिन प्रति बढ़ै सवाई।
'मधुपअली' मुख निरखि लली को जन्म सुफल होइ जाई।।

## पद - 42

खेलत मोरि लाड़िनी झुनझुनवाँ।।
एहि झुनझुनवाँ को शब्द मनोहर सुर मुनि मन ललचनवाँ।।
एहि झुनझुनवाँ सो सब जग खेलै सियजू के कर को खेलनवाँ।
एहि झुनझुनवाँ में बसत सकल जग विधि शिव इन्द्र भवनवाँ।।
हर-डर डरि सिय के झुनझुनवाँ में बसि रह्यो आइ मदनवाँ।
'मधुपअली' याके शब्द सुनन को ललकत अवध ललनवाँ।।

## पद - 43

कोई खेल खिलौना ल्योरी।।
बाँझ निपूती काह खरीदैं, चाह कहै लरिकोरी।
हथिनी गज सुखपाल पालकी, डोला, गाड़ी घोड़ी।।
हौं कहों कहा मोल नव नागरि आगरि आप कहो री।
जोई मोल दियो कौशिल्या, सोई आज चहों री।।
मेरो खेल महा महँगे सुनि, नीको काम कह्यो री।
कहँ लौं बात कहौं मेरे घर की ब्रह्मा आय पढ़्यो री।।

Scanned by CamScanner

तेरी सोहन मोहन कन्या, मेरे प्राण हर्यो री।
'कृपा निवास' सिया सुन्दरि की झिगुली टोपी द्यो री।।

## पद – 44

नगर की नीकी–नीकी लुगाइयाँ, बनि ठनि कौतुक ल्याइयाँ।
कोइ बकरी कोइ पावरि स्वाँगी, रानी राव रिझाइयाँ।।
कोई बनचर कोई नकरी मकरी, लकरी पकरि, नचाइयाँ।
'कृपानिवास' श्री कुँवरि बधाइयाँ पाईयाँ भाईयाँ अघाइयाँ।।

## पद – 45

लै लै बन्दनवारे आई।
मालिनियाँ सब मिथिलापुर की रूप भरी सुख छाई।। 1

तामें एक महल को मालिनि फूली उर अधिकाई।
रमक–झमक सो गई रानी ढिग कहति बधाइ–बधाई।। 2

जाई अधिक सलौनी बेटी जग उपमा नहिं जाई।
सुर तिय रमा उमा लखि हमने नेक प्रसंग न पाई।। 3

कहँ लौं भाग सराहौं तेरी अहिप सकै नहिं गाई।
मेरेहूँ अब महरानी जू मंगल की बनि आई।। 4

बाँधति हों अब बन्दनवारे द्वारन द्वार सुहाई।
लैहौं नेग झगरि पुनि अपने मनमानी तन भाई।। 5

हँसि बोली तब रानि सुनैना दाव भली है माई।
जो चाहै सो माँगु सयानी लाड़िली की नेवछाई।। 6

Scanned by CamScanner

लीनी टेरि सबै मालिनियाँ बाँधे द्वार निकाई।
कहि न जात कछु अद्‌भुत शोभा मंगलमूल जनाई।।

तब रानी सब बोलि लई ढिग डाली मोतिन भराई।
और बसन भूषण बहु दीने महती मान मनाई।।

सोहिलो गावत चली निज–निज घर, रमकि–झमकि रस दाई।
'रसिकअली' मानौ मिथिलापति घर बहु रिधि सिधि–जाई।।

## पद – 46

बढ़ैया पलना लै कर आयो।

रच्यो रुचिर पाटीर नीलमणि कीलें ललित लगायो।।
किंकिणि ललित लगी कंचनमय झूमक जोति जगायो।
जाल झूमका विविध रंग के चन्दा चन्द लजायो।।
मैना मोर कपोत हंसवर सारस बृन्द बनायो।
पवन प्रसंग नचत गुंजत लखि विधि आश्चर्य भुलायो।।
महरानी बहु दई न्यौछावरि पलना निकट रखायो।
कोमल वसन बिछाइ सुता जब पौढ़ाई छवि छायो।।
गाय गीत हलरावति रानी नागरि नवल झुलायो।
'रसिकअली' निज स्वामिनि ऊपर तन–मन–धन न्यौछायो।।

## पलना पद – 47

मेरी सिया प्यारी पालन पर झूलें।

चहुँदिसि सखियाँ करत सिंगारन उमगि–उमगि हिया फूलें।।

Scanned by CamScanner

जनक नगर में कहर पड़ी है असुरन के हिया सूले।।
रानी सुनैना के मोद भयो है नृप सहर्ष कर खूले।
'रामशरण' सिया शरण गहे ते मिटि जैहैं जग मूले।।

## पद – 48

ललित मणि पलना झूलें प्यारी।।
कोटिन सूर्य प्रकाश मणिनमय पलना की छवि न्यारी।
कोइ सखि छत्र विजन चामर लिये कोइ कर सुमन सुधारी।।
बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, नाचत सखि मनहारी।
'रामशरण' सखि लखि छवि हरषत बार–बार बलिहारी।।

## पद – 49

लड़ैती तेरो पलना बना अनमोला।।
डाँड़ी हरितमय खम्भ जड़ित मणि माणिक डोरि अमोला।
चहुँदिशि जुरि मिलि सखियाँ झुलावति गावति राग हिंडोला।।
प्रगट भई निमिबंशनन्दिनी परी नगर बिच होला।
'रामशरण' सखि निरखु लली को सुधासिंधु अब छोला।।

## पद – 50

बाजै दुन्दुभी वे नृप मिथिलेश के दरबार।
निकरे जाइयाँ वे रानी जानकी सुकुमार।।
अब हम ताइयाँ वे गल्लैं सादियाँ सुनि कान।
ढाढ़िन ढाढ़ियाँ वे हमनू वे कि श्री महराज।। 1।।

Scanned by CamScanner

ढाढ़ी बीन बजाँदा, निकले सुरले गाँदा, दादिनि नचदी गाँदे,
लली पर सदके जाँदी, साडी सुनिवे गल्लां, तेरा यश भल्ला-भल्ला।

ऐसीदा दान दिलाँदा, फिर नहिं याचन जाँदा।
फिर नहि याँचदा वे हमनू दान इसड़ा देय।
कहें जै देवते वे धन वे दान सिर धर लेय।।
धन दिन प्रगटियाँ वे अब अहलादिनी घर आज।
सदके जाँदियाँ वे तुम पर दान दे महाराज।। 2।।

महाराजा दान दिलादाँ, याचणदा जोइ-जोइ पाँदाँ,
दै-दै हस्ती घोड़े, दै जरी पाट दै जोड़े, दे मनि मोतियों दी माला,
दै-दै शाल दुशाला, दै-दै गाँव अनेका, गावै सहित विवेका,
जीवो लली सुखदानी, 'हितजैराम' कुरबानी।।

## वाह-वाह का पद - 51

शीरध्वज कुशध्वज बैठे महराज अजी वाह-वाह।
देव सभा राज सभा लीन्हें सब साज अजी वाह-वाह।।
बड़े-बड़े भूप आये बैठे सब ठट्ट अजी वाह-वाह।
वेद पढ़ैं विप्र अरु ओझा मिलि भट्ट अजी वाह-वाह।।
ढाढ़ी अरु भाँड़ अच्छे नाचत हैं नट्ट अजी वाह-वाह।
देखि दुनी रीझि गये दान दिये खट्ट अजी वाह-वाह।।
कड़े दिये मोती दुशालन के पट्ट अजी वाह-वाह।
'हितजैराम' मगन भये सियाराम रट्ट अजी वाह-वाह।।

Scanned by CamScanner

# श्रीचन्द्रकलाजी की बधाई

## पद – 1

जै जै श्रीचन्द्रकला सिय–प्यारी।
माधव मास शुक्ल शम्भू तिथि मध्य दिवस प्रगटी मनहारी ।। 1
जस आनंद सित जनम जनक गृह, तैसहि चन्द्र भानु घर भारो।
नामकरन गौतम विचारि धरे चन्द्रकला जगमग उजियारी ।। 2
इनके गान–तान सुनि प्रीतम–प्रिया होत नितही बलिहारी।
इनकी आस करत जे भाविक, ते सियराम महल अधिकारी ।। 3
श्री 'जानकिवर' ते लहहिं निरंतर, कृपा करहिं रघुबर सुखकारी ।। 4

## पद – 2

, मिथिलापुर बजत बधाई।
श्री चन्द्रभानु घर बर नौबत झर, रंग भरी सुरनाई ।। 1
चन्द्रप्रभाजू के कुँवरि प्रगट भई, चन्द्रकला छवि छाई।
सुख समाज निमिराज प्रसंसत निमिबंसी समुदाई ।। 2
बैठे आइ सभा छवि निरखत इन्द्र सभा ललचाई।
दान मान पूरन गुनि जन भए निरखि रूप सुखदाई ।। 3
श्री 'युगलप्रिया' पालनो रतनमय मातु मुदित पौढ़ाई ।। 4

## पद – 3

सुनो मिथलेश महाराजा। बधाई देहु सुखसाजा ।। 1
सुनाऊँ वेद को तत्त्वा। अमृत रसराज रतिसत्त्वा ।। 2

Scanned by CamScanner

प्रगटि अहलादिनी रानी। राम परब्रह्म दिलजानी।। 3
जीवनी मूरि सुखदानी। रूप रस दिव्य गुणखानी।। 4
नित्य यह धाम मिथिला है। ग्रथित गोलोक सिथिला है।। 5
नित्य निमिराज निमिबंशी। भक्ति लहि रुक्षताध्वंसी।। 6
तुम्हहिं ने जो लही बेटी। हमहिं उपमान कहि भेंटी।। 7
तिनहिं की सहचरी प्रगटी। दिव्य गुन रूप में अघटी।। 8
यदपि विमलादि सरदारी। तिनहुँ से कछु कला न्यारी।। 9
सबहिं ते बुद्धि की भारी। मन्त्र गति शास्त्र श्रुति वारी।। 10
ताहि ते होहिंगी दूती। मिलन रसराज मजबूती।। 11
यन्त्रवर बीन करधारी। रास-रस-मत्त मतवारी।। 12
रसिक जन इन्हहिं ध्यावत हैं। रास-रस जिनहिं भावत हैं।। 13
चन्द्रवर भानु प्रिय भ्राता। लगाई भजन में नाता।। 14
भलाई हो रही जिनकी। प्रभा तेहि रानि हैं तिनकी।। 15
वचन सुनि वेद बर बानी। लखे नृप दृग भरे पानी।। 16
देत नृप वसन भूषन को। लेत नहिं जानि दूषन को।। 17
हमहिं क्या चाहिए राजा। गाय गुन पाय सुख ताजा।। 18
तुम्रारी लाड़िली देखूँ। पाय यह दान सुख लेखूँ।। 19
दिखाई लाड़िली अपनी। बुझाई हीय की तपनी।। 20
चले गुंन गाय 'युगल प्रीया'। दृगन में जल भरे हीया।। 21
रसिक यहि पदहि गावहिंगे। भाव में छकि छकावहिंगे।। 22

Scanned by CamScanner

## पद – 4

सहेली सीय की प्यारी। प्रगट भई आज सुखकारी॥ 1
छठी उत्साह सिय केरी। जनम भो ताहि मधि मेरी॥ 2
चलो सखि राज के रावल। सजै सुख साज मन भावल॥ 3
सोहिलो गाय छवि निरखै। बलइया लेहिं हिय हरखैं॥ 4
लुटावैं बसु जो संचन की। पुरावैं आस मंगन की॥ 5
कला जेहि चन्द्र सुभनामा। अलिनि में अग्र रस धामा॥ 6
रसिक रसराज आचारज। गोप रसकेलि में आरज॥ 7
नवल कल वीन नारद को। सिखाइ जीतेउ तुँबरू को॥ 8
जुगल सुख साजि फुलवारी। मिलावत पीय अरु प्यारी॥ 9
प्रेम रस मोद सुखदानी। सु उत्सव जनम को ठानी॥ 10

## पद – 5

बधाई सीय सखि केरी। सुखद सुरधेनु जन केरी॥ 1
सुहावन मास सुभ माधव। सु चौदसि शुक्ल आराधव॥ 2
सुमंगल साज सजि सुन्दर। बोलाओ सन्त करि आदर॥ 3
सुपूजन प्रेम करि बिधि सों। सुसोहिलो गान सुनि सधि सों॥ 4
जनम को लाभ इतनोई। सु लेवहु आसु भव खोई॥ 5
मनावो भाग बड़ अपने। जो पाई ऐसि संघटने॥ 6
सुरसिकन प्रान धन जीवन। सु ध्यावत नित्य करि सीवन॥ 7
जूथ की स्वामिनी सारी। प्रेम रसमोद बलिहारी॥ 8

Scanned by CamScanner

## पद - 6

बधाई मिथिलापुरी बाजै। भईं सर्वेश्वरी आजै ।। 1
सखी सब हर्ष में गाजैं। सजैं सुख चैन के साजैं।। 2
भानु श्री चन्द्र घर आई। बधाई देन सुखदाई।। 3
चन्द्रप्रभा मग्न हैं भारी। सुता मुख देखि सुखकारी।। 4
लुटाती हैं विविध भूषन। भये खुशहाल जाचक जन।। 5
प्रभा यह श्याम की आई। किशोरी जू के मन भाई।। 6

## पद - 7

चन्द्रकला जु के नवल कुञ्ज में बाजत आज बधाई।
माधव मास शुक्ल तिथि संभू सकल सभी तहँ आई।। 1
यूथेश्वरी महान सखिन में ताते मुद अधिकाई।
बन्दनवार पताका केतू कलश वितान बनाई।। 2
सजत साथियाँ मंगल गावति मोतिन चौक पुराई।
कौतुक करि सब नाचति नागरि नुपूर धुनि सरसाई।। 3
अमित अलिनि युत दम्पति आये स्वागत करि बैठाई।
अति आनन्द भयो तेहि अवसर सो सुख बरनि न जाई।। 4
प्यारी की प्रिय मुख्य सहेली सब कहँ नेवत बोलाई।
भई भीर आँगन घर बाहर अति उत्साह सोहाई।। 5
सिय पिय मध्य सिंहासन राजे चहुँदिशि सखि समुदाई।
भोजन विविध भाँति के नाना सादर सबहिं पवाई।। 6

Scanned by CamScanner

अँचवन करि बैठे अलि अनसह अतर पान अर्पाई।
माल बसन भूषन दै सबहीं आरति करि सिर नाई।। 7
होन लग्यो रस गान नृत्य नव निरखत सब मन लाई।
प्रेम मोद आचार्य कुञ्ज रहि करि उत्साह बिताई।। 8

## पद – 8

जा दिन चन्द्रकला अलि जनमी सो दिन आजु सुहाई।
सिय पिय के मन मोद बढ़ेउ अति बाजत बिशद बधाई।। 1
यूथेश्वरि सरदारि सखिन में रसिकन को रसदाई।
सकल सखी मिलि मंगल गावति नौबत बजत सुहाई।। 2
मंगल–कलश चौक मोतियन की रचना सकल बनाई।
अति उत्साह भरी नवनागरि मन में मोद न भाई।। 3
सिय स्वामिनि की कृपा सु मूरति युगल भाव प्रगटाई।
चन्द्रकला वर नाम सुहावन सोभा बरनि न जाई।। 4
तिनकी षोडश मुख्य सहेली नाम कहौं सुखदाई।
युगल प्रिया श्री प्राणप्रिया जू नवल नेह लतिकाई।। 5
हेमलता श्री प्रीतिलताजू मधुर लता मन भाई।
युगल विहारिनि रूपलता जू श्री रसमोद लताई।। 6
चम्पलता श्री प्रेमप्रभा जू प्रेम सु मंजरि गाई।
रस माला अनुराग लताजू नामलता रसराई।। 7
लतिका प्रेम सीय की भगिनी सेवति लाड़ लड़ाई।
इनकी शरण होत जो भाविक पावहिं रस सो अघाई।। 8

Scanned by CamScanner

## पद – 9

चन्द्रभानु जी के कुँवरि प्रगट भई मुद मंगल जग छाई।
गावति नारि बधाई घर–घर साज बजत समुदाई ।। 1
मागध सूत बन्दि नट नागर बरनत गुन सुघराई।
छन्द कबित पद राग ताल मनो प्रगट रूप दरसाई ।। 2
नभ अरु नगर कोलाहल कौतुक सुख समुद्र उमड़ाई।
रस की सींव सुभग अति नागरि सागरि सील बड़ाई ।। 3
कहा कहौं केहि भाँति सराहौं सिय सखि की प्रभुताई।
तीनि देव जाकी मायाबस रुख लखि कर सेवकाई ।। 4
रमा उमा सारद सखि रति सब लखि छवि रहति लजाई।
जाकी कृपा कटाक्ष परे ते जीव सरस सुख पाई ।। 5
पिप्पलाद मुनि से यह महिमा लोमस रिषि समुझाई।
जाचकगण–गुण गाय सुहावन मन अभिलाष पुराई ।। 6
मगन भये उर ध्यान सुनिधि लहि अपने भाग मनाई।
नाम रूप गुन धाम एक रस नित्य अखण्ड रहाई ।। 7
महरम जन जानहि यह परतम लोक मध्य प्रगटाई।
प्रेम मोद हिय भाव से दरसत कृपा सुसाध्य भलाई ।। 8

## पद – 10

चन्द्रकला जू की बरष गाँठ आज सुभ गावो मंगल माई।
अति उत्साह भयउ मन भाओ सो सुख बरनि न जाई ।। 1

Scanned by CamScanner

घर ब्राहर नारी नर उमगे मंगल साज सजाई।
चन्द्रभानु महाराज राज रिषि मिथिलाधिप के भाई।। 2
ऐसे पितु माता जेहि सुकृत मानहुँ तन छवि छाई।
आपु सियाजू की भगिनी प्रियतर नागरि अति सुखदाई।। 3
उमा रमा ब्रह्मानी जेहि की हरषि करत सेवकाई।
विधि हरिहर जाके बसबरती को बैभव सक गाई।। 4
रसिक जनन को रस बरसावत रास बिहार दिखाई।
प्रेम मोद की मूरि सजीवन संसृति रोग मिटाई।। 5

## पद - 11

सिया की प्यारी अली जाई। कहत छवि देखि सब माई।।
पुराई आज जगदीश्वर। सुकृत फल दीन दम्पति कर।।
सुमंगल साज समुदाई। सजावहु आज मन भाई।।
सुआसिनि वृन्द बोलवाई। सुसोहिलो गावो सुखदाई।।
लुटाओ सब सँचे धन को। पुराओ आस मंगन को।।
खुले बड़भाग रसिकन को। जो ध्यावत रास कुञ्जन को।।
प्रेम रस मोद वर पावैं। उमगि आचार्य गुण गावैं।।

## पद - 12

आजु जयंती श्रीचन्द्रकलाजू की प्यारी अति मन भाई।
श्रीरसमोदलता गृह उत्सव बजत अनंद बधाई।। 1
मृगमद केसर चन्दन कुमकुन रचि-रचि चौक पुराई।
तेहि पर मंगल कलश धरे सजि मणिमय दीप सुहाई।। 2

Scanned by CamScanner

सुघर सुआसिनि रचत साथियाँ बन्दनवार बँधाई।
गान ताल अरु विविध कुतूहल रसिक जनन बुलवाई।। 3
आनँद में आनन्द बढ्यो अति लली छठी छवि छाई।
ताही दिन सुख उदय भयो अति मोह हृदय उमगाई।। 4
मोद-मोद भरि वसन लुटावत रसिक जनन पहिराई।
दान मान सनमान सबन करि आनन्द हिय न समाई।। 5
सिय सनेह दूसर विग्रह होय मोद सु गृह चलि आई।
श्री रसमोद चकोरी प्रफुलित अमल शशि कला पाई ।। 6

## पद - 13

रसिकन के मनमोद बढ़ावन प्रगटी श्रीचन्द्रकला सुखदाई।
माधव मास सुकुल चौदस तिथि लली छठी शुभ आई।। 1
तेहि दिन चन्द्रप्रभा महलन में अमल शशि कला छाई।
उमगेउ जनु आनन्द-जलधि युग त्रिभुवन रह्यो डुबाई।। 2
रथ समेत दिनकर हू डूबे सुधि-बुधि सब बिसराई।
एक मास तिन जात न जान्यो मरम न काहू पाई।। 3
अपने कुल आनन्द समुझि रवि चलेउ हृदय उमगाई।
शिव ब्रह्मा नारद सनकादिक याचक वेष बनाई।। 4
श्री मिथिला की गलिन-गलिन बिच नचत फिरत सचु पाई।
तेहि समय निमि कुल गृह-गृह में वेद ऋचा प्रगटाई।। 5
श्री स्वामिनि सिय पिय सेवन हित सुता रूप होय आई।
श्री मिथिला में गृह-गृह मंगल बजत अनद बधाई।। 6

Scanned by CamScanner

द्वारन बन्दनवार बँधाये मंगल कलस धराई।
केशर कुमकुम अतर अरगजा सड़क बजार सिंचाई।। 7
नाचहिं नवल नागरी जहँ-तहँ मंगल सोहिलो गाई।
सिय सनेह अब उदय भयो सुख त्रिभुवन रह्यो समाई।। 8

## पद - 14

बजत बधाई आज महल में प्रगटी चन्द्रकला सखि अगरी।
परमेष्ठी सखि जनकलली की सकल कला गुण में अति नगरी।। 1
चन्द्रप्रभाजी की तप की मूरति आचारज रसिकन कुल सगरी।
इनके चरणकमल आश्रित बिन महल बास सुख के नहिं चह री।। 2
उमा रमा ब्रह्माणि आदि जे दरशन हेतु खड़ी रह पवरी।
जाके विभव शेष नहिं कहि सक कहे एक मुख अग्र कसक री।। 3

## पद - 15

बजत बधाई आज मन भाई श्रीचन्द्रभानु जी के द्वार।
सप्त परन की झरन होन लगि बाजा बजत अपार।। 1
पहुँची शब्द स्वर्गताई लों मनु सावन घनकार।
बरषैं पुष्प देव सब हरषैं जै-जै शब्द उचार।। 2
गुनी गंधर्व अप्सरा नाचैं शोभा देखि अपार।
दधि दुर्वा फल फूल जवांकुर कञ्चन कलश सँवार।। 3
पुर की बधू साजि सब मंगल नृत्य करत नृप-द्वार।
गावत मंगल महल पधारैं करि रानी जू सत्कार।। 4

Scanned by CamScanner

करत प्रशंसा चन्द्रप्रभा जी की कुक्षी सुफल तुम्हार।
जेहि ते प्रगट कियो अस पुत्री रूप गुणन की सार।। 5
सतानन्द उपरोहित आये नामकरन निरधार।
महाराज श्रीचन्द्रभानु जी सुता सुलक्षण सार।। 6
जनकललीजू की मुख्य सहेली यूथेश्वरी सरदार।
कुँवरिन महँ अति कुँवरि मनोहरि यन्त्र बीन करधार।। 7
नाम है चन्द्रकला अस ताते आश्रित जन के शीतलकार।
जब यह यंत्र सप्त स्वर टेरिहैं प्रीतम प्रिया रहत बसकार।। 8
जन्म कुण्डली सुनि नृप रानी हर्ष न हृदय सम्हार।
श्री युगलप्रिया मयूर लौं थिरके सुख सौभाग्य निहार।। 9

## पद - 16

श्री चन्द्रप्रभाजी की सुकृत फली है चन्द्रकला सुता जाई।
करि श्रृंगार जननी छवि निरखत देह दशा बिसराई।। 1
कबहुँ पालना घालि झुलावति निरखति इकटक लाई।
गावति मंगल मधुरी बानी कहि गुण रूप लुनाई।। 2
चूमि-चूमि चुचकारि दुलारति लेति बलाई माई।
श्री युगलप्रिया मनमोद सदा ढिग रहति करति सेवकाई।। 3

## पद - 17

एक दिवस आनन्द भयो भारी। काह कहौं कह्यौ जात न प्यारी।
तदपि कहे बिनु रह्यो न जाई। बढ़्यो सो वेग हृदय उमड़ाई।। 1
चहुँदिशि अली सखी गण जोहैं। मध्य सुनैना रानी सोहैं।
लिये मोद भरि गोद सुता के। करत पान मुख चन्द्र सुधा के।। 2

Scanned by CamScanner

ताहि समय सिय मचलि परी है। पय प्यावत नहिं पान करी है।
रोवति अतिसय करि किलकारी। सुता देखि दुख भयो अति भारी।। 3
दासी भेजि सतानन्द आये। रानी गिरि तब चरन में जाये।
बहुते दिनन्हि में सुता अस पाये। कौन अभागिन दृष्टि लगाये।। 4
छिनक विलम्ब विचार कियो जब। आयो हृदय ज्ञान फुरि अस तब।
सुता श्री चन्द्रप्रभा घर जाई। प्रीति दुहूँ की अनादि है माई।। 5
इत उत की दोउ प्रीति एक रस। दशा दुहुँन की भई है एक जस।
चाहति हैं एक संग मिलन को। ताते करो संयोग दुहुँन को।। 6
इतने में एक दासि दौड़ि कै। आइ सुनाई दसा सब रोय कै।
मिलि दोउ रानी एक संग बैठीं। सिया ललकि उत गोद में पैठीं।। 7
चन्द्रप्रभा दोउ सुता गोद भरि। भयो मोद को सकै लेख करि।
मिलि दोउ प्यारी करि किलकारी। लिपटि गईं दोउ भुजा पसारी।
देखि कै युगलप्रिया सुख मूलैं। सावन घर मयूर लौ फूलैं।। 8

## पद – 18

जै श्री चन्द्रकला अलबेली।
अति सुकुमारि रूप गुन आगरि नागरि गर्व गहेली।। 1
निमिकुल प्रगटि संग सिय प्यारी प्रिय कारिनि रसकेली।
चन्द्रप्रभा के सुकृत कल्पतरु उमही लता नंवेली।। 2
कंचन बन कमला प्रमोदबन लीला लहरि सुझेली।
मोहन यन्त्र बीन स्वर टेरति प्रीतम चित्त बिथैली।। 3

Scanned by CamScanner

शरणागत पालिनि रस मालिनि चालिनि गजगति हेली।
श्री युगलप्रिया अनुराग सदा सम्बन्ध राग की मेली ।। 4

## पद – 19

गावो री बधाइयाँ
चन्द्रकला सुठि कुँवरि प्रगट भई चन्द्रप्रभा छवि छाइयाँ।। 1

लघु कर चरण नासिका मोती नख दुति चन्द्र लजाइयाँ।
निरखति रानी जानि लली अलि युगल प्रिया सुख पाइयाँ।। 2

## रेखता पद – 20

घर–घर मंगलचार जनकपुर बरस गाँठ प्यारी चन्द्रकलाजू के।
सजि नव सप्त सकल दुति दामिनि नव यौवन सब चली डगर के।। 1

कंचन कलश सजे सिर ऊपर दधि दुर्बा अंकुर सुठि नीके।
श्रीचन्द्रप्रभाजू के महल पधारीं भई भीर भारी सब सुख के।। 2

नाचति गावति करत कुतूहल बिसरे काम दाम घर–घर के।
श्रीयुगलप्रिया सुख फूलि गई तब जब देखी प्यारी सखिजू के।। 3

## पद 21

जब लहि बाल बरन दुति प्यारी। चन्द्रकला तेहि तन अनुहारी।।
कन्दुक औ भौंरा चकडोरी। सारो मैना मोर चकोरी।।
तूती और कपोत के छौना। पालन करैं दुहूँ निज भौना।।
दोउ के महल ते पक्षी ल्यावें। अपनी–अपनी खेल दिखावें।
मुनियाँ लाल पींजरा ल्याई। दोउ छोड़हिं हँसि देखि लड़ाई।
जब जीती प्यारी की मुनियाँ। लहि उर हर्ष बचन प्रिय सुनियाँ।
तबहीं सोच लही सिय प्यारी। प्रिय की हारि न सकीं सँभारी।।

Scanned by CamScanner

करि कछु यतन हारि निज भई। हर्ष लहो मणिगण बहु दई।।
तेहि संग युगलप्रिया तहँ रही। लखि लीला अद्भुत सुख लही।।
दोहा– एह विधि के बहु खेल करि, लीला ललित जनाव।
पौगँडहू लहि कुँवरि बर सेवत स्वामिनि भाव।।

## पद – 22

श्री चन्द्रप्रभा की मनोरथ बेली सबही विधि सुखदानी।
चन्द्रकला फल रूप प्रगट भई सब सुख सुकृत सकेली।। 1

श्री गौतम मुनि नाम करन कहि, चन्द्रकला अलबेली।
अमित सखी श्री सिय स्वामिनि की, तिनमें मुख्य सहेली।। 2

इनकी कृपा होइहैं जेहि पर, सियपिय ताहि हथेली।
युगल बिहारिनि युगल बिहारी मिलि निशिवासर केली।। 3

## पद – 23

जै श्रीचन्द्रकला सुखदाई।
सिय–सियपिय मुख चन्द्रकला की कला अनूप रूप जनु जाई।। 1

चन्द्रभानु श्री चन्द्रप्रभा की, भाग राग नहिं कछु कहि जाई।
मनभावन मन भावनि सिय पिय निगम नेति रस निज घर पाई।। 2

गावत यश मन भावत पावत अंगहि अंग उमंग बढ़ाई।
लली लाल खुशहाल ख्याल कल कुशला दृग दरसाई।। 3

आर्यवर्य आचार्य सुखद प्रभु श्रीप्रीतिलता दृढ़ गहि शरनाई।
मुग्ध भाव प्रद युगल बिहारिनि सबही बिधि लीजै अपनाई।। 4

Scanned by CamScanner

## पद - 24

चन्द्रप्रभाजु की सुकृत सुबेली। चन्द्रकला फरि-फल अलबेली।
जनकलली श्री अवध ललाजू की इनकी कृपा रहस जग फेली ।। 1
अमित अली रस पली भली विधि अष्टयाम सेवा सुख देली।
भाव भरत भाविक मानस रस युगल बिहारिनि युगल सुकेली ।। 2

## सोहद पद - 25

चन्द्रभानु जी के द्वारे सुनौबति बाजहिं हो।
ललना सुनि-सुनि नगर हुलास सुमंगल साजहिं हो ।। 1 ।।
वीथिन सड़क सुचौक अथाई हाटहिं हो।
ललना मन्दिर कोटि के द्वार चहूँदिशि ठाटहिं हो ।। 2 ।।
बन्दन माल वितान कलश धरि दीपहिं हो।
ललना रम्भा पूग रसाल सफल तरु रोपहिं हो ।। 3 ।।
चामर ध्वज सुपताक साथियाँ सोहैं हो।
ललना चित्र-विचित्र बनाय रूप मन मोहैं हो ।। 4 ।।
दधि दुरबा फल फूल सु अंकुर नीके हो।
ललना कनक सुथारन साजि धरे प्रिय जी के हो ।। 5 ।।
नारि सिंगार सँवारि कलश सिर धरिकै हो।
ललना कर लिये मनिमय थार आरती सजिकै हो ।। 6 ।।
सात कोट के द्वार सुपरितह प्रविसहिं हो।
ललना जाय लली अली देखि चरण कर परसहिं हो ।। 7

Scanned by CamScanner

गाय मधुर स्वर सोहिलो साज बजावहिं हो।
ललना विविध स्वाँग करि नटहिं देखाय सुभावहिं हो।। 8

देव विमाननि आय महोत्सव देखहिं हो।
ललना बरसत सुरतरु सुमन भाग निज लेखहिं हो।। 9

चन्द्रभानुजू के पुण्य सुभाग सराहहिं हो।
ललना पराभक्ति रस रूप भाव हिय चाहहिं हो।। 10

चन्द्रकला जू के जनम जो मंगल गावहिं हो।
ललना महल टहल निज रूप दिव्य सो पावहिं हो।। 11

ललना प्रेम सहित रस 'मोद' बहिनि के सेवहिं हो।
ललना प्रीतम हाथ बिकाहिं अपनपौ देवहिं हो।। 12

## पद - 26

प्रगट सखी चन्द्रकला सुखदानी।
तिरहुत देश जनकपुर सुन्दर कञ्चन मय रजधानी।। 1
माधवमास शुक्ल संभू तिथि रितु बसंत छवि सानी।। 2
चन्द्रभानु पितु मातु सुकृत तन चन्द्रप्रभा महारानी।। 3
सियजू की जे मुख्य सहेली तिन सब में महारानी। 4
प्रेम मोद रसराज भाव प्रद वत्सलादि गुणखानी।। 5

## पद - 27

रंग भीनी बधाई बाजै री।
चन्द्रभानु के कुँवरि प्रगट भई गोर वरन छवि भ्राजै री।। 1
जनक नगर सब डगर बगर में फैलि रह्यो रस राजै री।। 2
प्रेम मोद सिय पिय मन भावन अलिगण में सिरताजै री।। 3

Scanned by CamScanner

## पद – 28

चिरजीवौ सदा चन्द्रभानु लली।
रसिकन को अति सुख बरसावैं दरसावैं रस रंग गली।। 1
सुख सुहाग दिन–दिन अति बाढ़ैं नैहर सासुर रंगरली।। 2
प्रेम मोद सिय पिय छवि छाके जिमि भँवरी लहि कमल कली।। 3

## पद – 29

जै श्री चन्द्रकले गुण ऐनी।
अतिसय प्रिय श्री जनक लली की प्रीतम हिय निवसैनी।। 1
निन्दति निज छवि मदन विलासिनि मृगनैनी पिक बैनी।। 2
रास रहस कल केलि प्रबीनी सिय प्रीतम रस दैनी।। 3
सेवन, हित रसराज युगल पद आस लगी दिन रैनी।। 4

## पद – 30

जै सर्वेश्वरी चन्द्रकला जू।
सिय स्वामिनि की सकल शक्ति मधि तुमहिं शिरोमणि रस सो रला जू।। 1
प्रियता की परिपात्र पिया को तुम बिनु की कोउ अपर भला जू।। 2
सेवति सोइ सिय पिय पद पंकज जो आश्रित सब मान दला जू।। 3
लहि रसराज आचार्य आपसों मुदित रहत नित प्रीति पला जू।। 4

## पद – 31

अब मोहिं चन्द्रकला जू की आसा।
श्री जनकलली जू की मुख्य सहेली बिहरत सकल बिलासा।।
चौरासी भ्रम फन्द छुड़ा के रसिकन सँग दिय बासा।
श्रीयुगलप्रिया अब नहिं कछु संसय बिपिन प्रमोद निवासा।।

Scanned by CamScanner

# श्री चारुशीला जी की बधाई

## पद – 1

बधइयाँ गुइयाँ हिलमिल गावो राज।
चन्द्रकान्तिजू की कोख सिरानी, सुता सुजनमी आज।। 1
शत्रुजीत नृप देत मुदित मन, पट भूषन गज बाज।। 2
हरषि बोलाय, याचकन, गुनिजन, विदुषन विप्र समाज।। 3
श्री 'बालअली' नौबत धुनि बाजहिं, जनु सावन घन गाज।। 4

## पद – 2

लखो री मिथिला मोद भरी।
माधव शुक्ल पक्ष पूरन तिथि, वासर चन्द्र धरी।। 1
चित्रा नखत लगो धनि–धनि वह, धन्य सो धन्य घरी।। 2
रानी चन्द्रकान्ति नृप अरिजित, सुकृत की बेलि फरी।। 3
जनमी चारुशिला जू जिनकी, चन्द्रअली अनुचरी।। 4

## पद – 3

माधव मास पूर्ण तिथि के दिन मंगल मुद सरसाई।
जनकनन्दिनी की प्रिय सहचरि चारुशिला श्रुति गाई।। 1
रूपराशि सब अंग मनोहर, दुति दामिनि अधिकाई।
बरषैं कुसुम देव मुनि हरषैं, नभ दुन्दुभी बजाई।। 2
निमिकुल बिदित शत्रुजित नृप घर, सुता भई सुखदाई।
शुभ लक्षण रेखा युत कर पद, कोमलता अधिकाई।। 3
वीणाधर तेहि समय आय सब, पूरन कथा सुनाई।
बढ्यो मोद पुरजन परिजन उर, सोहिलो गावत आई।। 4

Scanned by CamScanner

न्यौछावरि करि करति आरती, निरखत ललित लोनाई।
पूजे देव विप्र परितोषे, सम्पति सकल लुटाई।। 5

जै जै चन्द्रकान्ति महारानी, सुरतिय बदति सुहाई।
रमा-उमा सेवत पद जाके, सो तेरे घर आई।। 6

चौके रचीं सुगजमनि द्वारे, मंगल कलश धराई।
बन्दनवार नवीन कलश ध्वज, पुरी परम छवि छाई।। 7

नभ अ़रु नगर निशान गान धुनि, विप्र वेद समुदाई।
'रसिकअली' मुद अधिक आजु सिय, जनमत दिवस जनाई।। 8

## पद - 4

गावो री सहेली मंगलचार।
जनम गाँठ श्री चारुशिलाजू की, नाचो गावो सजि श्रृंगार।। 1
माधव मास पूर्ण पूरण तिथि, बार भौम सब योग उदार।। 2
वेद विदित निमिवंश प्रगट भई, रूप भरी गुणशील अपार।। 3
सियजू की प्रिय सखी अधिक हित, गावति गुन जाके श्रुतिचारि।। 4
'रसिकअली' ताकी लघु भगिनी, सेवत चरण कमल सुखसार।। 5

## पद - 5

बजत बधाई रसिकन के घर, प्रगटी चारुशिला अलि स्वामिनि।।
परमा प्यारी जनकललीजू की, रसिक सिरोमणि के वरभामिनि।।
अधिष्ठातृ रति रहस रीति की, प्रीति परा आदिक अनुगामिनि।।
नृत्य गान रसखान कलाकल, सरस सुरुचि सुचि रस के धामिनि।।
मोहनि मन मति गति सो पियके, सबही विधि सो हिय अभिमानिनि।

Scanned by CamScanner

छवि सिंगार अपार सु गुनगन, नवल अंग दुति दमकत दामिनि ।।
अलि रसराज आचार्य कृपाते, छिटकी छटा शरद की सी जामिनि ।

## पद – 6

आज बधाई रंग भरि बाजी घनमण्डल लो गाजी री ।
सत्रुजीत नृप के दरवाजे, अनुपम शोभा साजी री ।।
चन्द्रकीर्तिजू की सुकृत बेलि फली चारुशिला रसराजी री ।। 1

रसिकन उर भरि भाव भली विधि, आचारज पद भ्राजी री ।
सुषमा सरस सिंगार प्रदरसी मंजुल नव छवि छाजी री ।। 2

लखि रति रमा उमा ब्रह्मानी, पर परत्व तजि लाजी री ।
चतुर चारु चूड़ामणि जिनके, नित परबस रस राजी री ।। 3

## पद – 7

बाजत बहु विधि बिशद बधाई ।
सत्रूजित नृप के महलनि में, अनुपम आनन्द छाई ।। 1
शक्ति शिरोमणि सहचरि पिय के, चन्द्रकान्ति जू जाई ।। 2
जुरि–जुरि सखिन सोहिलो गावति, आनँद उर न अमाई ।। 3
प्रेम–प्रभा फैली रस परतम, रति रसराज सुहाई ।। 4
रसिक जनन के जीवन रूपा, भाव उरसि अधिकाई ।। 5

## पद – 8

करु मन चारुशिला पद आस ।।
पाद–पद्म की आस करत ही, छूटत जम की त्रास ।। 1
श्री चारुशिला आचराज सबको, सर्वेश्वरी प्रकास ।। 2

Scanned by CamScanner

सिय पिय जू की प्राण बल्लभा, रंग महल नित बास।। 3
अभय प्रदान देत रसिकन को, आनन्द–सिन्धु विलास।। 4

## पद – 9

करु मन चारुशिला पद ध्यान।।
अति मनहरन सरन सुखदायक, जावक युत छवि खान।। 1
अरुण कमल सो कोमल पगतल, नखदुति मोहत भान।। 2
भूषण मधुर कनकमणि सोभित, रसिकन मन सुखदान।। 3
जब इनके शरणागत होवे, तब सिय जू पहिचान।। 4
टहल महल की सब विधि पावै, बाजै अभय निसान।। 5
अली विहारिणि जीवन धन मम, प्राननहूँ के प्रान।। 6

## रेखता पद – 10

अब मोहि चारुशिला जु की आसा।
प्रिय प्यारी जु की प्राण वल्लभा, रसिक जनन सुखरासा।। 1
विभचारी मत फन्द नसावन, रसिक अनन्य सुपासा।। 2
युगल परिकरेश्वरी कृपा से, रंग महल नित बासा।। 3
अली विहारिनि की आचारज, दीन्हों युगल विलासा।। 4

## पद – 11

बधाई बाजै हो मनहरनी।
मिथिलापुर में मंगल घर–घर, सुख शोभा को बरनी।। 1
लघु भ्राता श्री मिथिलापति के, शत्रुजीत सुठि करनी।। 2

Scanned by CamScanner

सम कुल रूप सकल गुन की निधि, चन्द्रकान्ति तेहिं घरनी।। 3
ताकी कोख प्रगट कन्या भइ, छवि शोभा की धरनी।। 4
जनकललीजू की सुख द्रुम लतिका, नाना मुद फर फरनी।। 5
रसिका लघु भगिनी है ताकी, सिय पदरज अनुसरणी।। 6

## पद – 12

सहेली आनन्द मंगल आज।
बरस गाँठ श्री चारुशिला जु की, घर–घर मंगल साज।। 1
चौके चारु कलश ध्वज चामर, पूरन घट मधिराज।। 2
नाचत गावत मुद उपजावत, जुरि–जुरि सखिन समाज।। 3
रसिका के उर अधिक भयो सुख नातो नेह निवाज।। 4

## पद – 13

चली गज गामिनी सज के। नगारे नौबतें बज के।। 1
लिये दधि दूब गोरोचन। सुमुखि राजीव नवलोचन।। 2
करैं कलगान पिक बैनी। झरैं सुर सुमन की श्रेनी।। 3
जन्म श्री चारुशीला को। हेतु रसराज लीला को।। 4
मुदित मन शत्रुजित महाराज। देवैं मुकुतामनी गजबाज।। 5
बधाई बज रही घनघोर। उमग आनंद महलन दौर।। 6
श्री मिथिलेश जू आये। लली मुख जोहि सुख पाये।। 7
लुटाये लाल अनमोले। बड़े बड़ मोल बिन तोले।। 8
'सियासखि' हर्ष लखि पायो। सोई रसना सरस गायो।। 9

Scanned by CamScanner

# श्री सरयू जी की बधाई

## पद – 1

आजु शुभ जन्म श्री मानसर नन्दिनी।

तांडव नृत्य जब कियो शंकर परम प्रेम दृग,
राम सु प्रवाह सुख कन्दिनी ।। 1

ब्रह्म ढिग पेखि सु कमण्डलासीन करि बहुरि,
निज मानसहिं राखि सुर बन्दिनी ।। 2

बीते बहु काल सु भुवाल इक्ष्वाकु भो,
विनय, सु वशिष्ठ करि लाय विधि अन्दिनी ।। 3

ज्येष्ठ शित पूर्णिमा सुखद संध्या समय,
अवध उत्तर मिलि महा अभिनन्दिनी ।। 4

भयो मनु नृपति दसरथ ता तनय प्रभु,
राम सीता प्रिया सुजन मुद कन्दिनी ।। 5

चल्यो पूजन करन युगल परिकर सहित,
राम रघुनन्द अरु जनक नृप नन्दिनी ।। 6

पूजि पुनि सीय सु सुहागवर बाग मधि,
सुमन बँगले सु बिच रचे स्वपसन्दिनी ।। 7

युगल सु विहारिनी सु गुरु करुना कलित,
ललित प्रिय बेलि रसकेलि सु फलन्दिनी ।। 8

Scanned by CamScanner

## पद – 2

बधाई सुर बधू गाई। सरयू सरि जन्म सुखदाई।।
प्रगट भई राम दृग माई। सुमन बहु देव झरि लाई।।
अप्सरा नृत्य गुन गाई। सरस सुर तान मन भाई।।
अमर शिव प्रेम से गाई। डमरु ध्वनि वेद छवि छाई।।
शरण तव दास बलि जाई। दरस सुख नयन सरसाई।। 1

## पद – 3

सरयू सरि वेद बुध बरनी। भई जग आय पतित तरनी।।
सुन्दरि छवि प्रेम सुधा धरनी। नयन जल देव मुदित करनी।।
अखिल अघ आप भई उरनी। जपत सियाराम भुवन भरनी।।
भई कलिकाल रुज जरनी। परन तब दास सरयू शरनी।। 2

## पद – 4

चली सरि देव ध्वनि धारा। नयन अमृत राम सुख सारा।।
वशिष्ठी मानसी कारा। कियो मुनि प्रेम उपकारा।।
कोलाहल पंथ में न्यारा। दास नर नारि अघ जारा।।
भँवर बहु रँग सलिल गहरा। सुखी तब जीव लखि लहरा।।

## पद – 5

बधाई आज छवि छाई। सरयू सरि जन्म सुखदाई।।
प्रगटि प्रभु नयन ते माई। बरषि सुर सुमन झरि लाई।।

Scanned by CamScanner

कहैं सब जयति हरषाई। बाजै दुन्दुभी मन भाई।।
सुता मुनिवर अवध आई। शरण तब दास बलि जाई।।
दरश सुख नयन सरसायी।।

## पद – 6

बधाई बाज रही मनभाई।
मानस नन्दिनि प्रगट भई हैं, अवध पुरी में आई।। 1
श्री वशिष्ठ के भवन मनोहर, राग तान रह्यो छाई।। 2
नभ विमान सुर थकित रहे हैं, सुमन माल बरसाई।। 3
मुनि पत्नी नेवछावरि देहीं, जाचक जनहिं बोलाई।। 4
प्रेम मोद सियपिय जस निजमुख, करत सु उमगि बड़ाई।। 5

## श्री सरयू स्तव पद – 7

जय जय वाशिष्ठी, हरिहर इष्टी, त्रिभुवन सृष्टी वैतरनी।
रसिकन सन्तुष्टी, हृष्टी पुष्टी, हरित अनिष्टी मुद भरनी।।
जय मानस नन्दिनि, कलुष निकन्दिनि, जगत सुवन्दिनि छर छरनी।
परतम सुख कन्दिनि, परमानन्दिनि, चरित सुछन्दिनि नित करनी।
परब्रह्म अनुज्या, रघुकुल पूज्या, देति सयुज्या, श्रुति वरनी।
रस रास विलासिनि, अज अविनासिनि, प्रेम प्रकासिनि, तम हरनी।।
प्रागादिक कासी, तब तट वासी, पद रज दासी अभिलाषी।
काटत जम फाँसी, संसृति नासी, छमति छमा सी वसुधा सी।।
अक्षय रति खानी, अभिमतदानी सारँग पानी सुख लहहीं।
ध्यावत मुनि ज्ञानी, तन मन बानी, तजि कुलकानी, नत चहहीं।।

Scanned by CamScanner

'''मधुरी' गुन गावै, पर पद पावै, अनत न जावै नित नेरी।
सियाराम सुशरनै, सुजस सुबरनै, देहु सुचरनै लखि चेरी।।

## पद – 8

मानस नन्दिनि बरस गाँठ सुनि, आनन्द अवधि सुछाई।
नवल नगर घर डगर बगर में, दर–दर बजत बधाई।।

तोरन केतु चौक घट चामर, मंगल साज सजाई।
पूग रसाल सफल तरु कदली द्वारन द्वार सुहाई।।

सुर किन्नर गन्धर्व वधू मिलि गावैं नचि हरषाई।
विप्र वेद धुनि करैं भरैं मुद, वन्दी विरद सुनाई।।

दीन पतित उद्धार हेतु जग, मुनि वशिष्ठ प्रगटाई।
विविध दान सनमान याचकन, देत सिया रघुराई।।

महामोद उत्साह उमड़ि निधि, तृन तरु शोक बहाई।
''मधुरी'' सरयू सुजस सोहिलो, गावत सुख न समाई।।

## पद – 9

जेठ पूर्णिमा मंजु महा सुखदाई हो।
ललना, मानस दुहिता जनम जगत जस छाई हो।।

अधम उधारन हेतु वशिष्ठ जू ल्याई हो।
ललना, नाम वाशिष्ठी धरेउ सुजन मन भाई हो।।

आनँद अवधि अपार बरनि नहिं जाई हो।।
ललना, खेचर वृन्द प्रमोद सुमन बरसाई हो।।

Scanned by CamScanner

तोरन चारु सुचौक द्वार रचवाई हो।
ललना, कलश रुचिर मनि दीप ध्वजा फहराई हो।।

गनपति गौरि गिरीश गिरा गुर साईं हो।
ललना, पूजि यथोचित लाभ अलभ्य सु पाई हो।।

मंगल कौतुक मोद विनोद बधाई हो।
ललना, निरखि-निरखि योगीश विरति बिसराई हो।।

भूसुर वृन्द समाज नृपति बोलवाई हो।
ललना दान दक्षिणा दीन जौन जेहिं भाई हो।।

भूषन वसन मनि माल मँगन पहिराई हो।
ललना, जाचकजन सन्तुष्ट न कर फैलाई हो।।

भोजनु विविध प्रकार कियो सब लोगू हो।
ललना, सब मिलि देहिं अशीष मिटै भव रोगू हो।।

''मधुरी'' सुजस पुनीत प्रीत जुत गायो हो।
ललना, धन्य नगर नर-नारि जो नेह नहायो हो।।

## रेखता पद - 10

बधाई प्रान मनहरनी। ललित ललि लाल की करनी।।
अमृत की धार समधरनी। नवलसुर वेलि सुख भरनी।।
मधुर स्वर ताल अनुसरनी, सुमन जल प्रेम की झरनी।।
सुमंगल साज सब बरनी। नखत शुभ जोग ग्रह ढरनी।।
ज्ञान जनि आगि जिमि अरनी। मिटावनि जीव की जरनी।।
सरित संसार की तरनी। नसावनि दुख जनम मरनी।।

Scanned by CamScanner

माननी नाह की परनी। सँवारन घर की निज घरनी।।
प्रेम रसमोद की छरनी। अटल पद से नहीं टरनी।।

## पद - 11

बधैया बाजै मुदमय आजै।
ज्येष्ठ शुक्ल तिथि पूरनमासी, योग लगन भल भ्राजै।
मंगल मूल दुकूल फूल द्रुम, तोरन लता विराजै।।

कदली पात ध्वजा जनु सोहै, कली छली डरि भाजै।
चमकति रेणु चारु चिन्तामणि, चौक मनो छवि छाजे।।

तरल तरंग सुरंग बढ़ावत, सुखद गान तर ताजै।
भँवर नटी नाना गति नाचति, छन-छन करि नव नाजै।।

जन्म महोत्सव रचहिं विविधविधि, रसिक सियारस राजैं।
''मधुरी'' आनँद अवध अपूरब, सुमन बरसि सुर गाजैं।।

## खेमटा पद - 12

बधैया बाजै सरयू केरी।
सहस अमी की स्वाद कमी की, नमी मदन रव भेरी।। 1।।

गुन गन जटी छटी छवि प्रगटी, सटी परा सुख ढेरी।
प्रभा प्रताप प्रभाव परेसा, पावन पतित घनेरी।। 2।।

मंगलाचरन द्वार-द्वार पुर, सोभा चहुँदिसि घेरी।
नचि गावैं सखि रूप धरे री, कावेरी बहुतेरी।। 3।।

आनन्द अवधि-अवधि सम अवधहिं, अनत न उपमा हेरी।
सुखमा सदन विलोकहिं 'मधुरी' थकित गिरा मति मेरी।। 4।।

Scanned by CamScanner

# श्री हनुमान जी की बधाई

## पद – 1

सब मिलि आवो री सजनी मंगल गाइये।
रानी अंजनी के भयो सुत बेगि बधावो जाइये।
आजु कैसो दिवस सजनी बड़े भागन पाइये।। 1।।

घसि चारु चन्दन लीपि आँगन मोतिन चौक पुराइये।
सात सींक सँवारि सखियाँ बन्दनवार बँधाइये।। 2।।

ललन मुख लखि लेउँ बलैया नैनन हियो सिराइये।
प्राण सरबस बारने करि फुली अँगन माइये।। 3।।

हिय हुती सो दृगन देखी भयो सबन्ह मन भाइये।
हित अनूप हमार जीवन विधना तू चिर जाइये।। 4।।

## पद – 2

मंगल मूरति मारुत नन्दन। सकल अमंगल मूल निकदंन।
पवन तनय संतन हितकारी। हृदय विराजत अवध बिहारी।
मातु पिता गुरु गनपति सारद। सिवा समेत संभु सुकनारद।
चरन बंदि बिनवौं सब काहू। देहु रामपद नेह निबाहू।।
बंदौ राम लखन वैदेही। जे तुलसी के परम सनेही।।

## पद – 3

बजत बधाई सुभ सदनन सखि प्रगटे वायु तनय बलशाली।
महासम्भु अवतार अवनितल देवि अञ्जना रुचि प्रतिपाली।।

Scanned by CamScanner

सेवा सरस सुभाव भक्त हित दरसाये सब विधि रस राली ।। 1

प्रतिभा परम प्रकर्ष प्रकासित छाइ रही चहुँदिसि उजियाली ।
दम्भ द्रोह दारिद दूषण दल दुरेउ सकल कर्तव्य कुचाली ।। 2

प्रबल प्रचण्ड प्रताप पेखि जिय सकुचि उयेउ नभ पथ करमाली ।
जानि मधुर फल ग्रास विवांछित बढ़ेउ प्रयास रहित दै ताली ।। 3

अस अद्‌भुत गति अकथ अलौकिक दिव्य भव्य नित नव्य निराली ।
माधुरी हूँ की सीम रूप नव मोहन मन मन्मथ उर साली ।। 4

सुभग सिंगार सोह अँगन प्रति छाइ रह्यो मानहुँ छवि जाली ।
बारि गई रसराज सुतन मन परतम प्रेम की लखि सु प्रणाली ।। 5

## पद – 4

बधाई रस भरी गावो, दिशायें रंग से छावो ।
ललन केशरि के प्रगटाने, करो उत्सव सु मनमाने ।।
पुरा के चौक मोतिन के कलश पै दीप जोतिन के ।
धरा करके सुभग सथियाँ, सिंचा सड़कें सु बर विथियाँ ।।
सु बन्दनवार बँधवाओ, झारि झालर को झलवाओ ।
बधावा विविध बजने दो, सु महफिलहूँ को सजने दो ।।
मँगाकर स्वर्ग से परियाँ, नचाओ करि सुमन झरियाँ ।
सु सुरभित बूँद बरसाओ, स्वयं हरषोरु हरषावो ।।
जला महताबि मुख देखो, कुतूहल बाजियाँ लेखो ।
निछावर नेह बँटने दो, सु सर्वस आज लुटने दो ।।
बहाकर प्रेम रसधारा, लहो रसराज रस सारा ।।

Scanned by CamScanner

## पद – 5

ललन को अञ्जना दुलरातीं ।।
भरि–भरि गोद मोद मुख चूमति, कलित केलि शिशु गातीं।
दै अवलम्ब सु छिति ठाढ़ो करि, कर गहि कबहुँ नचातीं ।।
भाव बताइ बढ़ाइ चाव नित, प्रमुदित ताल बजातीं।
लखि मुसुकान भान–तन भूलीं, रस रसराज न मातीं ।।

## पद – 6

अंजनि छौना हो तेरो युग–युग जीवै माई ।।
गोद मोदमय मूरति सोहै, करत प्रमोद बिनोद सु दोहै,
निरखि–निरखि सुर नर मुनि मोहै, और कहैं कवि को
सियराम खेलौना हो ।। 1 ।। ललित ललोना, सुद्ध सु सोना,
त्रिभुवन में न भयो नहीं होना लाल भाल पर श्याम दिठौना,
श्रीयुगल बिहारिनि हिय बिच भक्ति सु बोना हो ।। 2 ।।

## पद – 7

आवो–आवो सखी समुदाई गावो बधाई हो ।।
जनम दिवस श्री पवन–सुवन को, सुखी करन जन सकल भुवन को,
अति प्यारो श्री सीय रमन को, दुष्टन मन मद हनन को, जग जस छाई हो ।। 1 ।।
बाल–विनोद प्रमोद बढ़ावन काल–कर्म दुख–दोष कढ़ावन,
श्याम गौर रंग–अंग चढ़ावन, कृपा सु कौंच मढ़ावन श्रीकपिराई हो ।। 2 ।।

Scanned by CamScanner

भयो न है होइहै नहिं आगे, श्रीहनुमत समान बड़भागे,
लोकालोक सोक लखि त्यागे, युगल नाम रस पागे,
श्री रघुराई हो ।। अरज यही अञ्जनी के वारे,
एक बार श्री राम दुलारे, मिलहिं पिया अंसनि भुजधारे,
श्रीयुगल बिहारिनि तारे, दृग छवि प्याई हो ।। 4 ।।

## पद – 8

बाजै–बाजै बधाई आज पवन सुत प्रगट भयो ।।
कार्तिक मास असित पख चौदसि, त्रिभुवन में आनन्द छ्यो ।। 1
केशरि कपि के भवन सुआसिनि, रसमय मंगल गान ठयो ।। 2
देव निशान बजावत गावत, हरसत बरसत सुमन चयो ।। 3
प्रेम मोद रसिकन उर सरसत, सुचि रस सियपिय भक्ति जयो ।। 4

## पद – 9

गावो–गावो सहेली आज पवन सुत सोहिलो री ।। 1 ।।
गुण मणि कलस साथियाँ बन्दन माल बनायो ।। 2 ।।
रसिकन के घर महा महोत्सव, प्रेम मोद सरसायो ।। 3 ।।

## पद – 10

आज परम मंगल जग माई, कपिकुल भूषन जनम लियो है।
कार्तिक मास भौम सुभ चौदस, अर्ध निशा सुख उदै भयो है ।। 1
सकल लोक के शोक नसे सब, रसिकन के मन मोद छ्यो है।
सीतापति को सुयश प्रगट मनो, निशचर कुल कहँ काल उयो है ।। 2
हरि भूपति घर बजत बधाई, कनक रतन धन दान दयो है।
केशर खिली केशरी तन छवि सुकृत द्रुम फल प्रेम नयो है ।। 3

Scanned by CamScanner

कीरति ध्वजा फरकि त्रिभुवन में, यश वितान जग छाय रह्यो है।
बनचर बंश प्रशंस निगम थकि, कबि कोबिद किमि जात कह्यो है।।4

बानर तियनि सहित सब नाचैं, गावत हँसत विनोद ठयो है।
देव सुमन बरषैं पुनि हरषैं, निडर कहैं डर मूल गयो है।। 5

देश-देश से कपि दल आयो, मिलत परस्पर सुख समयो है।
आदर करि पुनि पुत्र देखावैं सो छवि लखि सब चित्त गह्यो है।। 6

चौक पुरावैं बेद पढ़ावैं, शब्द करैं, जय जयति जयो है।।
मागध सूत द्वार बन्दीजन, जनु चातक घन स्वाति चयो है।। 7

श्रीहनुमत अवतार धरनि तल, अमल राम रस सर उमयो है।
कृपानिवास रसिक मन को ब्रत, जानि कृपा करि गुरु पुरयो है।। 8

## पद - 11

परम सोहाई बजत बधाई।
मंगल मूरति हनुमत प्रगटे, आजु महामंगल जग माई।। 1

मंगल कपिकुल सकल सुजन सुख, मंगल अंजनि कोखि सोहाई।
कृपा निवास सु मंगल गावत, भक्ति निछावरि बहु विधि पाई।। 2

## पद - 12

हनुमत देव दिवाकर उये री।
रजनी लों रजनीचर घरनी, आसा तिमिर तुये री।। 1।।

जरे जे कुमुद विमुख हरि निन्दक, सीतल सन्त हुये री।
कृपानिवास कमल लों फूले, करुना-किरनि छुये री।। 2।

Scanned by CamScanner

## पद – 13

जियै सुत तेरो केसरि रानी।

होय सपूत दूत सियवर को, राम रसिक रस सानी ।। 1

युग–युग अचल चलै जग कीरति, जब लगि सुरसरि पानी ।। 2

सुर बनितानि असीसत अंजनि, सुनि मन मुदित जुड़ानी ।। 3

विक्रम बली मधुर विपुलाई, होय न कबहूँ हानी ।। 4

## पद – 14

पवन–सुवन मन भावन तत्त्व लखावन हो,
ललना केशरि कपि के भवन प्रगट छवि छावन हो ।। 1 ।।

मेष लगन दिन मंगल मास सुभ कातिक हो ।
ललना कृष्ण पक्ष तिथि शुभ नखत भल स्वातिक हो ।। 2 ।।

बाजन लागि बधाई सरस सुखदाई हो ।
ललना सोहिलो गाय सुआसिनि रंग मचाई हो ।। 3 ।।

अंगनि–आँगन भीर सु कौतुक राँचहिं हो ।
ललना बन्दी मागध सूत नारि नर नाचहिं हो ।। 4 ।।

देव विमानन आय सुमन झरि लावहिं हो ।
ललना जय–जयकार सुनाय महा मुद छावहिं हो ।। 5 ।।

विप्र वेद धुनि करहिं नन्दिमुख श्राधहिं हो ।
ललना जात कर्म करि सकल देव अवराधहिं हो ।। 6 ।।

अंजनि केशरि सम्पति आनन्द भरि–भरि हो ।।
ललना विप्र जाचकन देहिं लेहिं सुख ढरि–ढरि हो ।। 7 ।।

Scanned by CamScanner

बन्दन माल पताक कलश ध्वज आदिक हो।
ललना महल सुनगर सँवारि मगन मन स्वादिक हो ।। 8 ।।
छठी बारही आदि किये सब उत्सव हो।
ललना प्रेम सुमोद अपार अकथ छवि नित नव हो ।। 9 ।।

## पद – 15

जनम सुनि अंजनि सुत को धाई।
हौं ढाढिनि केशरी वंश की, कीरति गुण नित गाई ।। 1 ।।
लेउँ निछावरि आज न चुकिहौं, जो हमरे मन भाई ।। 2 ।।
तेरे लाल को गोद खेलाऊँ, प्रेम मोद हुलसाई ।। 3 ।।

## पद – 16

भले दिन वर्ष गाँठ आज आई।
मंगल गावति चौक पुरावति, श्री हनुमत की माई ।। 1
सुनि नौबति धुनि गुनियन के गुन, घर–घर ते नव नागरि धाई।
''कृपानिवास'' विलास मगन भग, भूलि गई सुघराई ।। 2

## पद 17

बजत बधाई आज मन भाई सुखदाई रंग छाई।
शुभ घड़ी लगन मुहूरत, मंगलवार सुचौदशि आई ।। 1 ।।
हरद दूब दधि रोचन रचना, गजमणि चौक पुराई।
''कृपानिवास'' मारुती–मूरति, मेरे नयन समाई ।। 2 ।।

Scanned by CamScanner

## पद 18

किलोलत श्री अंजनि के गोद।

चितवन हाँ हूँ शब्द मनोहर, भरि रस रहसि विनोद।।

कर पद कमल चलावत मुसुकनि कोटि चाँदनी सोद।।

कृपानिवास निरखि हनुमत मुख, छवि भरि लोचन मोद।।

## पद – 19

बरसत आनन्द रस मुखचन्द।

अंजनी गोद अकास प्रकासित, दुष्ट कंज भये मंद।। 1।।

नारी कुमुद चकोर पुरुष मन, भाव पोषि धर कंद।

'कृपानिवास' कृपा पूरनि निसि, उमगत प्रेम अमंद।। 2।।

## पद – 20

मंगल धाम काम छवि मोहन प्यारे श्री अंजनि के लाल।

भक्ति हेतु बपु धारि अवनि पर, खुले रसिकन के भाल।। 1

शरणागत की वांछा पूरत जैसे बारिद माल।

दीन उबारन नाम बिदित जग, हनुमत रामशरण के पाल।। 2

## पद – 21

जानकी रामकृपा की मूरति पूरन प्रगट भये कपिराज।

सुख शुभ गुण यश सिन्धु सुभग सर, रसिक भक्त सिरताज।। 1

खेम जगत जग जन्म हेमऋतु, हनुमत हरिसुत हरिकुल भ्राज।

कामद घन वन बरष कृपाकर, कृपा निवासी किरषी काज।। 2

Scanned by CamScanner

## पद – 22

सुनो सुहेलो सुख मंगलकारी गावति कपि कुल नारी।
रसिक सिरोमनि हनुमत जनमें राम रहस अधिकारी।। 1
हरदि दूब दधि केसर कुमकुम रचना रचति कुमारी।
कृपा निवास बिलास बिलोकत तन मन धन बलिहारी।। 2

## पद – 23

लगन सुहाई माई रस की रतियाँ।
बनचर बधू मगन रस हँसि–हँसि करति परस्पर बतियाँ।। 1
आज भट्टू भयो वंश प्रशंसित देव सरब कपि जतियाँ।
कृपानिवास लाल हनुमत मुख निरखि जुड़ावति छतियाँ।। 2

## पद – 24

सुघर सलोना अंजनी को छौना।
परम ललौना प्रान मिलौना सोहना मन उरझौना।। 1
राम रमौना रसिक रसौना मोहना नैन लगोना।
कृपानिवास उपास्य बड़ोना हमरे भाग्य सो होना।। 2

## पद – 25

वारी सुखदाई मन भाई वो आज रँग धूम परी।
भक्ति सु पावस घुमड़ बलाहक बरसत प्रेम झरी।।
रसिकन के मन भरे सरोवर आशा बेली सुफल फरी।
कृपानिवास उपास्य श्रीहनुमत कपिकुल देह धरी।।

Scanned by CamScanner

## पद – 26

हरषि बधाई गावो आज जन्म गाँठ कपिराज
केशरि हरि घर घुरि रही नौबति नागरि जुर्‍यो समाज ।।
नाचैं नवला थकित भगति सब त्यागि जगत की लाज ।
कृपानिवास उपासिन के हित प्रगटे प्रेम जहाज ।।

## पद – 27

हरिजन गावो जु मंगलचार सीतापति दरबार ।
राम सुसाहस पौरुष अंतस प्रगटे पवन कुमार ।।
सखी स्वरूप महल नित सेवत युगल भाव अधिकार ।
कृपानिवास अनन्य भक्त हित हरि लीन्हों अवतार ।।

## पद – 28

मंगल गावति चौक पुरावति सुघर सुवासिनि रंग भरी ।
श्रीहनुमत को जन्म महोत्सव सब सुख सिन्धु की सरित ढरी ।।
पीवत राम रसिक रस जीवत छीवत भ्रम भय ब्याधि टरी ।
कृपानिवास उपासक मन की आसा बेलि सुफल फरी ।।

## पद – 29

सुख सागर नागरि मगन विलोकति बोलति जै–जै धुनि सगरी ।
अंजनी अंग श्रवन सुख पाये श्री हनुमत हरिपति नगरी ।।
रतन अमोल सकल बसुधा तल कपिकुल भूषन लखि जगरी ।
कृपानिवास श्रीराम सुगाहक लायक लै पहिरैं पगरी ।।

Scanned by CamScanner

## पद - 30

मनमोद बढ़्यो सब रसिकन कुल रसिकराज को जन्म लख्यो।
घन घमंड मयूर लों नाचैं प्रफुल कमल लों रवि ज्यों तक्यो।।
अमरन लों भयो भौंर गुञ्जारत सुयश उचारत निगम थक्यो।
कृपानिवास श्रीहनुमत गुरु को मंगल गावत रंग छक्यो।।

## पद - 31

अंजनी प्रातः समय आनन्द भरि गोदी हित सुत को हुलरावति।
जनु परतत्व समिटि बालक तनु हौले भक्ति कर डोल झुलावति।।
दूध पिआवति कर पद चुम्बति कण्ठ लगाय महासुख पावति।
कृपानिवास अरुण सन्मुख ह्वै हनुमत कर अँगुरी बतरावति।।

## पद - 32

दृग लागो अंजनि को छौना।
प्रात अचानक कूद गगन सो रविजु धर्‌यो मानो फल को दोना।।
सकल देव बर पाय प्रकास्यो बलनिधि गुननिधि लोना।
कृपानिवास रसिक को सतगुरु सीतापति को सुघर खिलौना।।

## पद - 33

भोजन करत प्रभंजन-नन्दन प्रेमाकर सुन्दर गजवन्दन।
शेष मैथिलीरमन थार के सने कमल कर मुख अरविन्दन।। 1
विविध प्रकार स्वाद हित मूरति किरपा चारुशिला अधिकारी।
नेह बिबस बर सुघर रामसिय सुकर जेंवावति करि करुना री।। 2

Scanned by CamScanner

सखी सकल रुचिकार प्यार सों देत बदन हँसि कौरें।
यह बलि शेष अबेश समय का मादक तर कर जोर निहोरें।। 3

पूरब रोचिक पाल बतायो पाये हनुमत सुखद सोहाग्रे।
सरयू पय शीतल जल झारी रूपलता ललचाय पियाये।। 4

षोडस कोटि सखी सब भामिनि लेत प्रसाद-प्रसाद संगही।
देखत लाल बिलास हास रस खास खवासिन के रँग रँगही।। 5

समय-समय सुख मुक्ति भोगियाँ अँचवन करि फिरि मोहि बोलावै।
कृपानिवासी ढरि प्रनाम करि गुरु पनवारा हरषि उठावैं।। 6

## पद - 34

आरति हनुमत पवन कुँवर की। रसिक अनन्य रामव्रत धर की।।
सियपति भक्ति सदन सुख सागर। जुगल उपासक रस गुन नागर।।
परम उदार कृपा की मूरति। शरन सुखद मनवाँछित पूरति।।
मधुर महारस ईश्वर तापर। त्रिगुण पारतम महामहेश्वर।।
निगम चारि षट् कीरति गावैं। ज्ञान योग जप पार न पावैं।।
कनक बरन तन तेज विराजै। अद्भुत छवि त्रिभुवन पर छाजै।।
अवध महल सुख के अधिकारी। प्रेम प्रवाह प्रणत उपकारी।।
विधिहरिहर सुर मुनि जन जेते। करत आरती हरष समेते।।
उमा रमा सचि सक्ति भारती। राम सुजन सब करत आरती।।
जगत ज्योति जगतिमिर बिखंडन। श्रीहनुमान प्रान सुख मंडन।।
बाजे राग रागिनी जहाँ लों। पद नुपूर ते प्रगट तहाँ लों।।
जो यह आरति हित नित गावैं। रंग महल बसि रसिक कहावैं।।

Scanned by CamScanner

समझि लहैं ते परम उपासी। राम सिया सुख रहत बिलासी।।
कृपानिवास आरती गाई। रीझि कृपाकर निकट बसाई।।

## पद – 35

पालने झूलै रंग सों, अंजनी जी को छौना।
कनक जटिल मनि पालना री मुक्ता फूँदना सोना।।
मातु झुलावति गावति मंगल लाड़ लड़ावति लोना।
कृपानिवास उपासक को धन सीतावर को सुघर खिलौना।।

## पद – 36

हनुमत रंग रसाल झूलत पालने आज।
मदन डोल जनु लोल चन्द वर सुन्दर रूप बिशाल।।
राम रसिक रस मूरति पूरन रसिकन को प्रतिपाल।
कृपानिवास उपासक को धन जीवन अंजनि लाल।।

## पद – 37

मारुति बदन छवि देखि–देखि जीवाँ।
माधुरी मूरति पर बारि पानी पीवाँ।
जननी उरसि पयोनिधि क्रीड़त बाल हंस सुख सीवाँ।
मुक्तामाल कर गहि कुच पीवत पय प्यारो ढरकत लगि ग्रीवाँ।
कृपानिवास उपासक वर के दौरि–दौरि पद छीवाँ।

## पद – 38

अंजनि नन्दन तुम पर वारी रूप शिरोमणि गुन रस भारी।
रसिक जनन को रस बरसाओ जनम लियो सुन्दर सुखकारी।

Scanned by CamScanner

कपिकुल मुनिकुल सुर कुल आनन्द गावत मंगल नर अरु नारी।
कृपानिवास हनुमत छवि ऊपर कोटि मदन शोभा बलिहारी।।

## पद – 39

मारुति नन्दन भव भय भंजन प्रगटे भू पर आई।
अंजनि दिव्य भूमि मणि आकर हनुमत मणि प्रगटाई।।
देवन के दुख दारिद नाशे निज–निज भलहिं बसाई।
कार्तिक मास असित पख चौदसि बार भोग समुदाई।।
चर अरु अचर गगन जल थल दिशि आनन्द उर न समाई।
ब्योम बिमान गान धुनि किन्नर नृत्यत सुर समुदाई।।
इन्द्रादिक ब्रह्मादि देवता सुमन बृष्टि झरि लाई।
केशरिनन्दन जग अभिनन्दन कीरति अचल चलाई।।
लालमणी पर करहुँ कृपा प्रभु भक्ति–निछावरि पाई।।

## पद – 40

कार्तिक मास असित तिथि चौदसि श्रीहनुमत अवतार लियो।
केशरि–नन्दन जनमन रंजन सजि सुख सबहिं दियो।।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन चलि मेघन छाँह कियो।
बरसत पुष्पमाल इन्द्रादिक जै धुनि शब्द कियो।।
नाचति नभ अपसरा मुदित मन प्रेम पियूष पियो।
चौदह भुवन चराचर दशदिशि आनन्द हुलसि हियो।।
लंक शंक आनन्द देव गन जीवन सबहिं जियो।
'लालमणी' भव उदधि जनन लखि बूड़त काढ़ि लियो।।

Scanned by CamScanner

## पद - 41

आजु केशरी भवन भयो सुत भाग अंजनी कहि न सिराई।
ब्रह्मादिक जाको यश गावैं सनक सनन्दन अरु ऋषिराई।।
जो श्रीराम काम सब पूरन निज मुख जाकी कीरति गाई।
सो हनुमान ज्ञान गुन पूरन प्रगट भयो भूतल पर आई।।
भूमि-भार हरि राम सुयश करि कीरति अचल चलाई।
लालमणी निशिदिन यह जाँचत भक्ति निछावरि मन भरिपाई।

## पद - 42

घर-घर मंगलचार सोहावन अंजनि प्रिय सुत जायो।
शुभ-नक्षत्र स्वाति शम्भू तिथि ऊर्ज मास सब भाँति सुहायो।।
मंगल करण आभरण अनुभव मंगल दिन महि नेह जनायो।।
निगमागम जाकी महिमा को निसदिन गावत पार न पायो।
नेति-नेति जेहि निगम बखानत ईशन ईश राम गुण गायो।
राज-राज महराज रघूत्तम निज मुख सुयश सरस अनमायो।।
श्रीमति शरण भक्त भय भंजन अंजनि नन्दन जन सुख पायो।

## पद - 43

आज केशरी भवन बधाई।
शुभ लक्षण सुन्दर सुत जायो, बड़भागिनि भई अंजनि माई।।
वृद्ध वधू सब जुरि मिलि आई, यथा योग्य कुल रीति कराई।
दान मान विप्रन को दीन्हों, मणि मुक्ता पट भूषणताई।.
मृगनयनी कल कोकिल बयनी, करि सिंगार बैठीं अँगनाई।

Scanned by CamScanner

नाम केशरी सुवन अंजनी, गारी गावत परम सोहाई ।।
ध्वज पताक तोरण मणिजाला, द्वारन बन्दनवार बँधाई ।
श्रीमतिशरण करण नवमंगल, जयति-जयति सब सुरन मनाई ।।

## पद - 44

देखि चरित मोहि अचरज आवै ।
जन्म भयो चंचल कुल हनुमत, रीति देखि योगीश लजावैं।।
जासु बड़ाई श्रीमुख उघटत, प्रगट सुकोकिल मुनि नित गावैं।।
रवि सुत वित्तप तथा पुरन्दर, युद्ध निरखि श्रीपतिहुँ लजावैं ।
यह महिमा कहुँ अनत न सुनियत, ताहि अंजनी गोद खेलावैं ।।
जेहि दशमुख डर डरत विधाता, धाता चक्राघात अघावैं ।
तेहि रावणहि पटकि महि झटकत, जस लघु पक्षी खेल खेलावैं ।
ताको पकरि अंजनी अँगुरी, आँगन में चलिबो सिखलावैं ।
हरि को देत हरिपना जो प्रभु, जेहिते शिव विरंचि पद पावैं ।।
ब्रह्म अनादि अलक्ष्य अगोचर, ज्योति अजन्म अनन्त कहावैं ।
सोइ रघुवंश विभूषण निजमुख, जासु ऋणी कहि सबहि सुनावैं ।
सो प्रिय बदन सदन शोभा को मातु अंजनी गोद खेलावैं ।
रंग रँगीली मंगल मूरति, 'श्रीमति' निरखि सदा सुख पावैं ।।

## पद - 45

बजे आज नौबतें गाढ़ी । बजावैं वंश की ढाढ़ी ।।
हमारी आस अब बाढ़ी । दुवारै ऋद्धि सिधि ठाढ़ी ।।
जुरी कपि नारि रँग भीनी । गावैं सुरताल मिलि कीनी ।।

Scanned by CamScanner

पुरावैं चौक मुक्तन के। खुले भण्डार सुख धन के।।
भये हनुमान शुभ घरियाँ। अंजनि उर रंग रस भरियाँ।।
निरखि सुत बदन मनहरियाँ। निछावरि मणिन की करियाँ।।
कृपानिवास सुख सरसैं। देवगण सुमन बहु बरसैं।।
रसिक सब चरन को परसैं। देखि छवि मनहिं मन हरसैं।।

## पद – 46

बधाई मारुती गावैं। सुमन की माल बरसावैं।।
उमा ब्रह्मानि इन्द्रानी। रमादिक गान सुर ठानी।।
बीना मृदंग सारंगी। विष्णु विधि शंभु बहुरंगी।।
गान की तान झरि लावैं। नृत्य को मोद दरशावैं।।
उमगि चलि प्रेम सागर से। रसिक हनुमान नागर से।।
कृपा प्रभु दास पर कीजै। 'लाल' की भक्ति बर दीजै।।

## पद – 47

चलो घर केशरी कपि के। बधाई गाइये कसि के।।
नचाई नाचिये सजि के। लुटाइये मोतियाँ गुथि के।।
कलश ध्वज बंद पुर सोहैं, देखि सब देवगण मोहैं।।
भाग सम अंजनी को है। नेत्र भरि बाल मुख जोहै।।
मोद भरि गोद दुलरावै। जनम का लाभ लुटि पावैं।।
लालमणि भक्ति बर पावैं। लाल को जन्म यश गावैं।।

## पद – 48

सुवन सुचि अंजना जायो। महा मंगल जगत छायो।।
नरी बनि बानरी आवैं। सोहावन सोहिलो गावैं।।

Scanned by CamScanner

सुनें सुर प्रीति उर बाढ़ी। सतिय भे ढाढ़िनी ठाढ़ी।।
नटै दै तालियाँ झिलकैं। सजी वह वा कहैं मिल कै।।
असीसैं लहि सुमन माला। जिये चिर अंजनी लाला।।
निरखि कपि कौतुकी केते। थिरकि तिन संग गति लेते।।
कोऊ कूदैं मगन मोदैं। लिए हनुमंत को गोदैं।।
दुलारैं चूमि चुचकारैं। तिनहुँ सो लैं अपर प्यारैं।।
पवन पुष्पावली बरषैं। ललन को हेरि के हरषैं।।
सुयश रसरंग मणि वरणैं। सुनावैं श्रीमती शरणैं।।

## पद - 49

बधाई वायु-लालन की। सुगाइय मोद मालन की।।
सुमंगल मास क्या कार्तिक। नखत मंगलमयी स्वातिक।।
दिवस मंगल महा मंगल। असित चौदस सु रस रञ्जन।।
सोहाई साँझ की बेला। जनम भो मौज की मेला।।
सुयश कहि सुर सुमन बरषैं। सु अंजनि पवन सुनि हरषैं।।
हमनि को बन्दि छोरोगे। निशाचर वंश बोरोगे।।
सियाबर भक्ति रस रंगी। सोहाई बीर बजरंगी।।
अनन्दी आपने चरणै। लगाई श्रीमती शरणै।।

## पद - 50

जुग-जुग जीवै तेरो लालन अंजनी माई।
रूप शिरोमणि सब गुण सागर, तेरे भाव सिहावन।
ब्रह्मादिक जाके बसवर्ती, सो तेरे गोद खेलावन।

Scanned by CamScanner

सिय प्यारे संग रहत हजूरी, रसिकन रस बरसावन।
कृपानिवास मनोहर मूरति, हमरे भाग सो भावन।।

## पद – 51

सोहत बाल रूप श्रीहनुमत अँग सुषमा सरसायो।
कनक बरन तन सुभग मनोहर पिंगल दृग छवि छायो।।
अरुन अधर कर चरण नखत द्युति लाँगुल सुभग सुहायो।
रसिक बाल छवि यह हनुमत की भक्तन को सुखदायो।।

## पद – 52

बरस गाँठ शुभ मारुत सुत की सिय रघुबर घर बजत बधाई।
कनक भवन छवि कवन कहै कवि, रिधि सिधि जहँ सेवकाई।।
दिव्य भव्य सिंहासन दम्पति रतिपति कोटि लजाई।
आगे लाल ललित कर लालति बाल रूप कपिराई।।
किलकत ललकि–ललकि लखि प्रभु को निगम नेति सुख पाई।
उमग्यो प्रेम पयोधि दसौ दिसि देव सुमन झरि लाई।।
जय–जय रव पूर्‌यो सब लोकन सोक गयो समुदाई।
युगल विहारिनि युगल प्रान प्रिय सुजस नवल नित गाई।।

## पद – 53

अञ्जनी सुवन जायो त्रिभुवन यश छायो,
कृष्ण तिथि चौदस कातिक श्रुति गाय है।
भरी है सोहाग भाग अति अनुराग रंग,
पायो है सुकृत फल जैसो मन भाय है।।

Scanned by CamScanner

गोद में खेलावैं, हलरावैं, गुण गावैं भावैं,
अति सुख पावैं जाकी उपमा न पाय है।
ज्ञानाअलि भोर ही दिवाकर उदित देखि,
उचकि उचंग ते मधुर फल खाय है।।

## पद – 54

कपि केशरीनन्दन जन्म लियो नृप दशरथ सुत हिय जगमहियाँ।
ऐसो सुचि सेवक लोक तिहूँ हनुमान सरिस कतहूँ नहियाँ।।
जिन फाँदि सिंधु सिय दरस कीन फय खाय अघाय अभै गहियाँ।
दहि लंक प्रबल गढ़ बंक महा कहि सकल कथा रघुपति पहियाँ।।
रचि सेतु शत्रु रण जीति लियो दै राज विभीषण गहि बहियाँ।
ज्ञानाअलि सिय लै पियहिं सौंपि दै राज अवधपुर यश लहियाँ।।

## पद – 55

अंजनी माई तेरो सुत प्रिय जीजै।
नित उत्साह अथाह उदधि मधि प्रेम तरंग अँग–अँग भीजे।
निरहेतुकी कृपा तव सुत–द्रुम जाके ऊपर कीजै।।
ताकौ तिहूँकाल मंगल मुद तन मन भव रुज छीजै।।
मुग्ध जानि हे अम्ब ! पानि गहि सँग खेलन सुख दीजै।
नामामृत सुप्रसादी निज सिसु युगल विहारिनि दीजै।।

## पद – 56

बदन लागे लालन लेवो बलैया।
जननी कर गहि खड़े होन लगे शब्द कढ़न लगे मैया।

Scanned by CamScanner

कबहुँ घुटुरुवन चलि–चलि अँग–अँग चढ़न लगे हैं कँधैया।।
उबटन करि अन्हवाय मढ़न लगे प्रेम कौच छवि छैया।
नाम रामवल्लभा पढ़न लगे सियवर प्रिय रघुरैया।।

## पद – 57

अञ्जनी लालन गोद खैलावैं।।
मूरति मोद विनोद करन प्रिय हिय लावैं दुलरावैं।
नाना भाँति चरित रघुपति के जननी अति हित गावैं।।
राम–नाम अभिराम कामप्रद सुनि अँग–अँग उमगावै।
आनन सम आनन न आन कहुँ चतुरानन सकुचावैं।।
त्रिभुवन के दुख दवन रवन सिय अति प्रीतम श्रुति गावैं।
रामवल्लभाशरण चरण नित भक्ति अभय वर पावैं।।

## पद 58

बालकेलि करत आसुग सुत लखि जननी सुख छाय।
कबहुँक लतन द्रुमन चढ़ि क्रीड़त कबहुं गिरिन पर जाय।।
निज प्रतिबिम्ब देखि जल भीतर चलत सभीत पराय।
रसिक अंजनी लेत गोद भरि मोद भरी सरसाय।।

## पद – 59

जियो–जियो महारानी अंजनि तेरो लाल।
राम रँगीले परम हठीले महाशम्भु प्रगटेउ तेरो बाल।
सिया रघुनन्दन प्रान पियारे असुर निकन्दन है जनपाल।।
गजरथ तुरग हेम गो हीरा न्यौछावरी दीन गलमाल।
चूड़ामणि अँखियन के तारे दरश पाइ होइ गयो निहाल।'

Scanned by CamScanner

## पद - 60

जियै सुत तेरो केशरि रानी।
होय सपूत दूत सियवर को राम रसिक रस सानी।
युग-युग अचल चलै जग कीरति जब लगि सुरसरि पानी।।
सुर बनितादि असीसत अंजनि सुनि मन मुदित जुड़ानी।
विक्रमबली मधुर विपुलाई होय न कबहूँ हानी।।

## ।। सोरठा ।।

महा मरुत को मूल, तेज गर्भ उर धारि कै।
सुख सम्पत्ति अनुकूल, अञ्जनि निवसी गिरि गुहा।।

## ।। चौपाई ।।

हनुमत जनम समय सुखदाई। मंगल मूल बरनि नहिं जाई।
ऋतु सबकर हितु शरद सुहावन। शशि सम्पन्न अवनि बन पावन।
सरसिन सरसिज संकुल फूले। भृङ्ग पुंज गुंजत मंजूले।
निरमल जल थल दिशा अकाशा। खलमन मलिन सुजन सुखरासा।
कातिक महा मनोहर मासू। असित चतुरदशि शिव तिथि खासू।।
मंगलमय मंगल वर वारा। अवनि सुवन सिय बन्धु पियारा।
नखत सरस स्वाती सुखरासू। हनुमत पिता पवन पति जासू।
मेष विशेष लगन मुद मूला। सब ग्रह योग भले अनुकूला।।

Scanned by CamScanner

॥ दोहा ॥

गोधूली बेला विमल, शिव प्रिय प्रथित प्रदोस।
पवन पुण्य फल प्रगट भे, जग मंगल निरजोस॥

प्रगटे जग मंगल लोचन पिंगल शालि वरन अनुहारी।
पद करतल लोने सारस सोने आनन रवि छवि हारी॥

प्रसवति लखि नन्दन पूरि अनन्दन पवन सुवन झरि कारी।
पारस इव रंका लै निज अंका पय प्यावति महतारी॥

चूमै चुचकारै हरषि दुलारै हिय लावै हरलाई।
अंजनि मन रंजन सुकृत प्रभंजन कपि केशरि सुखदाई॥

होइहैं सब लायक जग जस छायक रघुनायक मन भाई।
सिय पिय पद संगहिं 'मणि रस रंगहिं' प्रेम उमंग लगाई॥

दोहा

खल अरबिन्द विनाशकर, सुजन कुमुद आनन्द।
अञ्जनि उर अम्भोदि ते, उदित भये कपिचन्द॥

Scanned by CamScanner

# स्वामी श्रीरामानन्द जी की बधाई

## पद - 1

आज परम मंगल द्विजवर घर हरि नर को अवतार लये।
माघ मास सुचि पाख असित तिथि सातै चित्रा नखत भये।।
कुम्भ लगन शुभ सिद्धि योग ग्रह वार विमल अनुकूल भये।
सुनि सुत जनम भूरिकर्मा तब सकल याचकन दान दये।।
जातकर्म करि महा मुदित मन गुरुकुलबृद्धन चरण नये।
भाग निधान प्रयाग निवासी सब आई अनुराग रये।।
मंगल थार गहे तिनकी तिय आई उरन उछाह छये।
लखि सुन्दर सुत न्यौछावरि करि समय सुहावन गान ठये।।
बजत बधावन नाचहिं नागरि अङ्गन भाव देखाय नये।
कहि न जात तेहि अवसर को सुख सबके सब दुख बिसरि गये।।
तब कैसे अबहूँ बिचरहिं जे आचारज उत्सव नितये।
ते तरिहैं 'रसरंग मणी' भव रामानन्द कृपा चितये।।1।।

## पद - 2

मंगल मास माघ सुखदाई।
मंगल पाख असित सातैं तिथि मंगलवार योग समुदाई।।
मंगल गंग यमुन प्रयाग थल मंगल तहँ के लोग लुगाई।
मंगल रूप भूरिकर्मा द्विज मंगलमयी सुशीला माई।।

Scanned by CamScanner

मंगल मूल राम जाके उर प्रगटे रामानन्द कहाई।
मंगल राशि पुरी काशी जहँ वेद पुरान पढ़े प्रभु आई।।
मंगल श्री सम्पदा विभूषण गुरू राघवानन्द सु पाई।
मंगल तारक राम मंत्र निधि तिन सों लिये किये सेवकाई।।
मंगल विश्व विधायक गुनि गुरु गये सौंपि सब भजन कमाई।
मंगल प्रबल प्रताप साधुता फैलि गई जग विमल बड़ाई।।
मंगल सदन शिष्य स्वामी के भये तेरहों शुचि शरणाई।
मंगल यश जिनके द्वारादिक जाहिर भक्तमाल भल गाई।।
मंगल मण्डन मारतण्ड सम सन्त सरोज बिपिन बिकसाई।
मंगल कारक कलि कुचाल निशितम अखण्ड पथ दिये दिखाई।।
मंगल सुलभ भक्ति मारग सिधि मन्त्र राम तारकहिं दृढ़ाई।
मंगल सेतु विरचि भव सागर तारे जीव कृपा अधिकाई।।
मंगल चरित सुनत जिन कर शुभ अखिल अमंगल मूल मिटाई।
मंगल जन्म उछाह सु तिनको करहिं सुजन प्रति वर्ष बधाई।।
मंगल अवध सुमङ्गल सरयू मङ्गल सन्त समाज सदाई।
मंगल मणि रस रंग लहै श्रीरामानन्द सुमङ्गल गाई।।2।।

## पद - 3

बधाई गाइये प्यारी। जन्म आचार्य सुखकारी।।
भनै को भाग द्विजवर की। जुटावैं सम्पदा घर की।।
चलीं सब प्राग की नारी। सजे मङ्गल लिये भारी।।
लखैं शिशु सोहिलो गावैं। सबै सम्मान सुख पावैं।।

Scanned by CamScanner

दुवारे नौबतें बाजैं। नचैं तिय त्यागि के लाजैं।।
पुरोहित कुण्डली साधैं। करैं नान्दीमुखी श्राधैं।।
गगन ते सुर सुमन बरषैं। धरम रक्षक समुझि हरषैं।।
हरी अवतार आरामी। श्री रामानन्द गुरु स्वामी।।
मन्त्र तारक सुमन मग से। उधारे जीव कलियुग से।।
अजहुँ उत्सव जनम दिन को। रचैं जे धन्य हैं तिनको।।
गहे प्रभु सम्प्रदा शरणैं। सुयश रसरंग मणि बरणैं।।

## पद - 4

आजु बधाई श्री सतगुरु की गावो संत सु आई।
प्रगट भये साकेत धाम ते जगतारण सुखदाई।।
जीव-पीव के मध्य मेल हित श्रीगुरु एक उपाई।।1।।
संस्कार युत युगल मंत्रवर दीन्हेउ तान दृढ़ाई।
जागृत स्वप्न सुषुप्ति तुरीया हिय मध्ये दरसाई।। 2।।
त्रय रहस्य परतत्व लखायो रस अनन्य सेवकाई।
प्रेम मोद माधुर्य सु गुरु पर बार-बार बलि जाई।। 3।।

## पद - 5

बलिहारी अली श्रीसतगुरु की।।
चिन्मय दिव्य अलौकिक अनुपम मुख मूलक छवि रसधुर की।। 1
प्रगट भयेउ नर रूप सुखद हरि सेवक उर सुचि रुचि फुर की।। 2
प्रेम मोद गावत गुण निस दिन बास चहत श्रीगुरु पुर की।। 3

Scanned by CamScanner

## पद – 6

बधाई बाजती रस भीनी। श्रीसद्गुरु के नवीनी।।

प्राणनाथ प्रगटे करुणाकरि पर परत्व तजि दीनी।
सौलभ रूप सकल जीवन हित, सहजहिं निज कर लीनी।।

भाव भक्ति भल भेद लखाकर, जग रति की करि हीनी।
पिय पद पंकज प्रीति दृढ़ायो, सरसायो सुख झीनी।।

गावत ही रसराज सु गुणगण, भई परम प्रण पीनी।
अचल नेह सम्बन्ध निरन्तर, निधि निवसी मनमीनी।।

## पद – 7

आचारज को जनम महोत्सव गावत संत बधाई।।
मास पाख दिन तिथी नखत ग्रह मंगल साज सजाई।।
बन्दनमाल वितान कलशध्वज मोतियन चौक पुराई।।1।।

नाचैं गावैं रस उपजावैं बाजे विविध बधाई।
राग रागिनी छाइ रह्यो है आनन्द हिय उमगाई।।2।।

नभ विमान सुर थकित ह्वै रहे सुमन माल बरषाई।
बन्दी मागध सूत सु जातक वरणत गुण सुघराई।।3।।

दान मान निवछावरि अगणित पावत सबहिं अघाई।
केलि कोलाहल कौतुक देखत देह–दशा विसराई।।4।।

कबहुँ पालने झूलत किलकत गावति मंगल माई।
चिरजीवहिं श्री सतगुरु प्यारे प्रेम मोद मन भाई।।5।।

Scanned by CamScanner

## पद – 8

बजत बधाई रसिक सु गुरु की बरष गाँठ आज आई।
मंगल साज–साजि सब सुखकर गायक संत बोलाई।। 1 ।।

स्वागत करि बैठाय सु आसन असन बसन पहिराई।
चन्दन माल पान सौगन्धैं जल सु पवन अरपाई।। 2 ।।

होन लगेउ रस खान गान बर बाजत साज सुहाई।
छन्द–प्रबन्ध अनेक भाँति के उघटत आनन्द छाई ।। 3 ।।

निरतत नर्तक विविध वेष धरि भाव कलन दरसाई।
प्रेममोद यह सुख रस अनुपम सतगुरु कृपा सु पाई।। 4 ।।

## पद – 9

भजो मन श्री सतगुरु सुखदानी।

कृपा–सिन्धु नर रूप हरीश्वर जाको वेद बखानी।
जासु वचन रवि मोह नास निशि भइ स्वरूप पहिचानी।। 1 ।।

सिय प्रीतम सो बाँह गहायउ हेतु रहित निज जानी।
जन्म मरन भव रोग नसायो दै सु भक्ति रस खानी।। 2 ।।

बहुमत पंथ जहाँ–तहँ झगरो बाद रहित गरुवानी।
प्रेमलता सब आस छोड़ि के साधन–साध्य पिछानी।। 3 ।।

## पद – 10

श्री सद्गुरु सुख सागर परम उजागर हो।
ललना प्रगटे जगहित हेतु सुछिति नव नागर हो।। 1 ।।

जोग लगन ग्रह वार नखत भल सोहै हो।
ललना मास पाख छवि खानि देखि मन मोहै हो।। 2 ।।

Scanned by CamScanner

बाजन लागी बधाई सु परम सुहाई हो।
ललना नाचैं गावैं राग तान नभ छाई हो।। 3।।

देव विमानन आइ निशान बजावैं हो।।
ललना जय जयकार सुनाय सुमन झरि लावैं हो।। 4।।

तात मात हिय हरष न कछु कहि आवैं हो।।
ललना निरखि-निरखि सुत बदन सुभाग मनावैं हो।। 5।।

जो यह सोहिलो गावहिं हिय उमगावहिं हो।
ललना श्रीसद्गुरु ढिग दास रूप निज पावहिं हो।। 6।।

श्रीसद्गुरु पद कमल भक्ति मन-भावहिं हो।
ललना प्रेम मोद रस खानि भाल सुख छावहि हों।। 7।।

## पद - 11

प्रगट भये जा दिन सतगुरु गृह मेरे भाग सो आई री।
ता दिन सो नितहीं नव मंगल बाजत विविध बधाई री।
मोद प्रमोद विनोद उछाहैं अनुदिन उर अधिकाई री।। 1।।

भक्ति प्रपत्ति प्रबोध स्वरूपहिं जथा तथ्य दरसाई री।
भाव विकास प्रकास प्रबल अति दृग की दोष नसाई री।। 2।।

सुचि रस रूप सँबन्ध सनातन करि तहँ नित स्थायी री।
अष्टयाम अन्तर शुभ सेवा बाहिरहूँ छवि छाई री।। 3।।

भोग राग नित ही नवीन रति षटरितु रीति सुहाई री।
रसराजहिं आचार्य कृपा ते सौलभ सुख सरसाई री।। 4।।

Scanned by CamScanner

## पद –53

श्रीगुरुवरजू के बरष गाँठ सखि सब मिलि सोहिलो गावो री ।।
कुंज–कुंज सुख पुंज महल में चहल सु पहल मचावो री।
चौकें सुभग साथियाँ सौजें कलश दीप धरवावो री ।। 1 ।।
बन्दनवार सुकेतु पताकनि ध्वज शिखरनि फहरावो री।
बन्दी भाट विदूषक कत्थक इन कहँ वेगि बुलावो री ।। 2 ।।
विरदावली सुयश कल कौतुक नाट्य–कला करवावो री।
रीझि रिझावो बलि–बलि जावो आनन्द उर न समावो री ।। 3 ।।
भूषण वसन नवल तन पहिरो इनहुँन कहँ पहिरावो री।
सरस मोद भरि छाकि छको रसराज सुनिधि उमड़ावो री ।। 4 ।।

## पद – 60

बन्दौ चरण कमल गुरुवर के रसमय सुपद सोहायो।
भव–सरिता कहँ नाव सबन्हि को मनरुज हर रज पायो ।।
सकल विभव बस होत धरे सिर रज परत्व मुनि गायो।
आचारज हमहीं को जानै कह प्रभु वेद लखायो ।।
जे गुरु नमत बूरि परि कत भय तेहि लखि काल डेरायो।
चरणामृत पीवत जे सिर धरि तीरथ सब ते नहायो ।।
हरि ते प्रथमहिं गुरु कर सेवन विधिवत करै सु भायो।
धरम मूल गुरु सेचन परतम मोक्ष मूल अपनायो ।।
भजन–मूल गुरु गात सु चिन्मय मंत्र मूल वच भायो।

Scanned by CamScanner

जे गुरु–उत्सव करत प्रेम भरि चित्त साठ्य बिसरायो।
स्वारथ छल तजि करम वचन मन निस दिन लाड़ लड़ायो।
ब्रह्मादिक ताके गुण गावत पूजत हित चित चायो।।
सीतापति गुरु सेवक के बस होत परत्व भुलायो।
अघ बारक भव नासक पुर नित वास सु वेद बतायो।।
श्रेय रूप तारक पर चारक भाविक ध्यान समायो।
वाराणसि को अर्थ जानि भजु गुरु ग्रह तर्क मिटायो।।
सप्त पुरिन में षष्ठम् सोहै जहँ प्रभु अंग गनायो।
प्रेम मोद सिद्धान्त सार यह सियवर आप लखायो।।

## पद – 14

बधाई गाइये नीकी। रसिक गुरुदेव वर जू की।।
परात्पर धाम के बासी। महा आनन्द सुखरासी।।
प्रगट यह लोक में आके। महा माधुर्य रस छाके।।
युगल बर मंत्र को देके। मिलावत जीव अरु पी के।।
हमन के भाग से आये। करो उत्साह मन भाये।।
सु मंगल साज सजवाओ। दुआरे चौक पुरवाओ।।
कलश अरु दीप धरवावो। नृत्य के भेद दरसावो।।
चलो गुरुदेव दरवाजे। करो मन भावते आजे।।
न राखो लाज के ताजे। मचावो मौज के माजे।।
महा रसमोद के छाके। सु पावो पीव के धाके।।

Scanned by CamScanner

## पद – 15

बधाई गुरुदेव की गावो। मगन रस तोप सुख पावो।
परो ना सोक सागर में। रहो नित स्वामि चाकर में।।
गुरू से तत्व नहि श्रुति में। सियावर मिलन के प्रति में।
गुरु जिनको नहीं प्यारे, तिन्हें साधन नहीं तारे।।
लखो यह त्यागि मद माना। गहो नित स्वामि पदत्राना।।
करो सुख प्रेम से सेवन। जनम को लाभ लहि जीवन।।

## पद – 16

जनम दिन आजु लखु आयो। श्रीसद्गुरु के मन भायो।।
मन्दिर में मोद है छायो। दुन्दुभी धुनि सु सरसायो।।
सहेलिन सोहिलो गातीं। सुयस रस रूप में मातीं।।
सु विधु मुख सब निरखती हैं। प्रसूनैं कोइ बरसती हैं।
मनाती भाग भूरी को। सु पाकर प्राण मूरी को।।
बलैया बेरि-बेरि लेतीं। निछावरि बरबसैं देतीं।।
बरसती नेह की वारी। सु सुरभित ताप त्रय हारी।।
चली बहि मोद की धारा। सुरस रसराज सुख सारा।।

## पद – 17

चलो री आज सज धज के। नगारे नेह मय बजि के।।
श्री सद्गुरु सु कुंजै री। मचावो सुख के पुंजै री।।
बधाई तान लै गावो। दिसायें रंग से छावो।।

Scanned by CamScanner

कलायें नाट्य के करना। हृदय सुख सिन्धु सो भरना।।
जनम दिन आज गुरुवर का। सकल शुभ गुण कलाधर का।
निछावर कर दो जीवन धन। असीमित हैं ये आनन्द घन।।
सहज ही में नवल तन का। सु होगा ज्ञान निज पन का।
रती अविचल के अधिकारी। सु होते ही पिया प्यारी।।
मिलेंगे मोद के भर के। सुरस रस राज कर धर के।।

## दोहा

जग निवास जगदीश हरि, जगत शरण दातार।
जन रक्षन पन दक्ष अति, लीन्ह मनुज अवतार।। 1।।

## छन्द

श्री गुरु प्रगटाने छवि रस साने लखि माता सुख फूली।
सद चिद मुद मूला जन अनुकूला उपमा अपर न तूली।।
रवि ससि सद जोती अग्नि समोती जगमग किरण पसारी।
नख सिख लो सुन्दर रूप मनोहर मन भावन सुखकारी।। 1।।

जन कुलहि सु मण्डन खल-कुल खण्डन तारक मंत्र प्रचारी।
अति दीन उबारन भव निधि तारन बिनु कारन उपकारी।।
तिहँ तनहिं सु नासक भाव प्रकासक, तुरिया तन अविनाशी।
त्रय रहस अकारा मन वच पारा अर्थ अलौकिक रासी।। 2।।

कलि-कलुष विनासी प्रेम प्रकाशी सुख कारण दुखहारी।
प्रभु इच्छाचारी स्वबस बिहारी, जग-जीवन प्रिय कारी।।

Scanned by CamScanner

रक्षक श्रुति सेतुं सतकुल केतुं वन्दित सदा अमानम्।
निगमादि सुगीतं चरित पुनीतं भवभय शमन निदानम्।। 3।।

सेवित वर चरणं आश्रम वरणं शरणद कृपा निधानम्।
आश्रित सब लायक तदगुण छायक प्रेम भक्ति वरदानम्।।
यह चरित जे गावहिं सब सुख पावहिं प्रेम मोद मन भावैं।
सिय पुर चलि जावैं बहुरि न आवैं रूप समीप रहावैं।। 4।।

## दोहा

अघ घायल गो संत द्विज पालक कृपा अगार।
बालक बपु रोवन लगे मंगल मोद प्रचार।।

## पद - 18

जै जैकार श्री सतगुरु की करुणा करि अवतार लयो।
आदि अखण्ड ब्रह्म सीतापति जनहित लीला स्वरुचि ठयो।। 1।।

महा मोह रावण के वंसहि मारि सुयस प्रगटायो।
भक्तन के उर सुभग देश में सुर सद्गुणहिं बसायो।। 2।।

प्रमदा बन एक रूप रहत नित रास बिलास समायो।
सहज स्वरूप शक्ति चिद चिन्मय रसमय नाम सोहायो।। 3।।

आचारज होइ एक पाद में सौलभ गुण गहि आयो।
नख सिख छबि हिय ध्यान सु कीजै सतचित आनन्द भायो।। 4।।

नख सुरसरि तल सारद छविहर पृष्ठ जमुन दरसायो।
ललित त्रिवेणी तीर बसत नित माधव गुल्फ सुहायो।। 5।।

Scanned by CamScanner

जंघा जानु सु उरु अनुपम कटि रुचिर सूक्ष्म फ़ल दायो।
नाभि-रोम त्रिबली उर ग्रीवा भुज कर सुषमा छायो॥ 6॥

सरस ज्ञान अनुभव गुण-गण फुर अभय दान भयो हायो।
चिबुक अधर रद ओठ सुरसना नाम सुजस हलरायो॥ 7॥

घ्राण सुगन्ध रूप दृग भृकुटी इष्ट प्रेम उमगायो।
श्रवण पुकार कपोल पोलहर भाल तिलक सरसायो॥ 8॥

सिर अरु केश परेश रसेसहिं श्री सुचि पदहिं चढ़ायो।
भव्य बसन भूषण प्रति अंगन सुख आसन थिरतायो॥ 9॥

छत्र चमर विजनादिक सेवा परिकर लाड़ लड़ायो।
प्रेममोद यह ध्यान सुदुर्लभ सद्‌गुरु कृपा सु पायो॥ 10॥

Scanned by CamScanner

# श्री युगलाष्टक

## श्लोक

साधूनां प्रथमो विभाति युगलानन्यो वरो नेतरः ।
दातृणां प्रथमो विभाति युगलानन्यो वरो नेतरः ॥
वक्तृणां प्रथमो विभाति युगलानन्यो वरो नेतरः ।
श्रोतृणां प्रथमो विभाति युगलानन्यो वरो नेतरः ॥

## कवित्त

श्री गुरुदेव ही ते ज्ञान विज्ञान होत
भक्ति पद भेद बहु ग्रंथ बीच गाये हैं।
इह लोक परलोक लोकालोक जेते ज्ञेय
ध्येय अनुमेय श्री गुरुजू जनाये हैं ॥
वेद सब खेद बिना गुरु को परत्व कहैं
गुरु बिन भेद कोऊ कहूँ नहीं पाये हैं।
कोऊ करो साधन अराधन अनादि देव
'जानकी सुबर' महाराज गुरु पाये हैं ॥
श्रीगुरु स्वामी जू ते भये नहिं कोऊ और
होने न अखिल लोक विदित प्रताप हैं।
काम क्रोध लोभ मोह माया मद करि कर
नासिबे को पंचानन राजैं करि दाप हैं ॥

Scanned by CamScanner

दंभ रत पाप गत विमुख कुजन तम
तोम के समान दिनकर सम आप हैं।
रसिकन रस सालि पोषिबे को वारिद से
मेरे से अधम को तो एई माई बाप हैं।। 2।।
सम्मुख होत जाके आनन्द उदोत होत
मिटत कुअंक भाल रंकन को नकशैं।
पावन पदुम पद परम पराग परे
फैलति प्रभाव भूरि संत कवि सकशैं।।
दूर होत जनम अनेकन की बाधा दाह
मिटत अदोष भानु मंदन की अकशैं।
श्री युगल अनन्य शरण सेवक सुमंडल पै
अखंडल की साहिबी कमंडल से बकशैं।। 3।।
करन से दानी सनमानी रघुबीर जन
सुभट कृपानी सम पारथ बखानिये।
भानु सों प्रताप तेज जस रजनीस सम
कोटिन फनीस छंद गति अनुमानिये।।
भार–धर धरा सम पालक सुजल रीति
घायल दुअन भृगुपति सम जानिये।
चिरंजीव लोमस समान 'रंगनाथ' भनै
युगल अनन्य प्रभु सील गुन खानिये।। 4।।

Scanned by CamScanner

## श्रीमद्युगलानन्य शरणाष्टक (प्रथम)

भावनि सो छानी छमा छोर लों समानी
भ्रम तापि नहिं मानी परमानंद की दानी है।
ठानी महिमानी मन मानी प्रिय प्रानिन की
ज्ञानिन प्रमानी–प्रीति–नीति की निसानी है।।
सकै को बखानी प्रानी युगल अनन्य जी की
राम रस सानी चारु चोजन की खानी है।
सारदा चुपानी सुधा माधुरी छिपानी पर–
बानी सरमानी सबै मानी महरानी है।। 1।।

सीताराम नाम सुधा–सिन्धु में समाने रहे
माया मान भाने गहे बान मोद जन्य हैं।
सीलताई साधुताई सरल सनेहताई
सुद्ध बुद्धताई पंडिताई के अरन्य हैं।।
मोहदल गंजन को दीन जन रंजन को
भारी भीति भंजन को संबली सरन्य हैं।
रसिक अनन्य न में संत अग्र गन्यन में
धन्यन में धन्य गन्य युगल में अनन्य है।। 2।।

रोम–रोम सीयराम नाम लै अराम लहैं
लोचन विराम गौर श्याम सो न अन्य हैं।

Scanned by CamScanner

जोग जप संजम समाधि नेम ज्ञान ध्यान

पूजन-विधान में सुजान अग्रगन्य हैं ।।

सुखद महान दया सील को निधान

सबै प्रेमिन के प्रान बेप्रमान मोद जन्य हैं।

घोर भव-धार ताकी तारक उदार राग-

रंग बेसुमार छाके युगल अनन्य है ।। 3 ।।

पंडित महान महा ज्ञान प्रेम को निधान

ज्ञानमान दयामान बुद्धिमान लेखे मैं।

भगति भंडार भले भावनि को पारावार

दीनन अधार सु उदार अवरेखे मैं ।।

रागवंत रूपवंत सरल स्वभाववंत

सीलवंत सत्यवंत सन्त बहु पेखे मैं।

परम अनन्य राम धरम धुरीन धन्य

युगल अनन्य सो न अन्य सुने-देखे मैं ।। 4 ।।

काहे को कलेस देत देह को बेहेतु मूढ़

जाग तप त्याग नेम ब्रतहिं गिहाऊ रे।

तीरथ पयान बेठेकान को भुलान फिरै

दान को विधान हू न जान को जुड़ाउ रे ।।

जोग जप संजम समाधि में उपाधि महा

मानि मत मेरो सब साधन बहाउ रे।

Scanned by CamScanner

युगल अनन्य जू की सरन सिधारि चारु
बेगि बेसुमार भव धार पार पाउ रे।। 5।।

कठिन कराल कलिकाल में बेहाल जीव
हेरि है दयाल मोह जाल मेटि डारी है।
सीताराम नाम रूप धाम गुन गाय भलो
भाय सरसाय सुख छाय दियो भारी है ।।
त्याग औ विराग अनुराग राग रंग-लाग
सुगुन सुभाग को अदाग उजियारी है।।
रसिक अनन्य जग जाहिर न ऐसो अन्य
युगल अनन्य धन्य महिमा तिहारी है।। 6।।

दूतन बुलाय कै रिसाय धर्मराज कह्यो
गयो गफिलाय काहे पातकी न लावते।
कीजे कहा नाथ उहाँ युगल अनन्य सबै
जीवन सरन्य पुन्य मारग चलावते ।।
राम नाम रूप धाम लीला गुन आठो याम
खलक तमाम यही काम में लगावते।
खोरि-खोरि ग्राम-ग्राम धाम-धाम राम-राम
कौनहू कलाम बिना राम नहीं पावते।। 7।।

Scanned by CamScanner

सेष बहु बदन गनेस गज बदन
महेस पंच बदन न बेस जोग जन्य हैं।
अज मुख चारि चतुरानन प्रपंच करि
सनक सुचारि ध्यान धारि अग्रगन्य हैं।।
अपर महान भक्ति ज्ञान के निधान तेऊ
ना फबै समान जे महान महामन्य हैं।
सगुन सुजान सबै भाँतिन सुधन्य सुखी
युगल अनन्य जू से युगल अनन्य हैं।। 8।।

आनन अनेक एक-एक प्रान धारिन के
एक-एक आनन में जीभ कोटि सरसाय।
एक-एक जीभन पै कोटि रूप धारन कै
आनन हजारन कै बैठे सारदा सुभाय।।
सुनिये कृपानिधान युगल अनन्य भान
कोटिन जुगान करैं गान आन बिसराय।
रावरी रसज्ञताई विज्ञता विवेकताई
विद्या बुद्धि सीलताई सुद्धता न गाय जाय।। 9।।

## दोहा

अष्टक युगल अनन्य को, परम सुमंगल रूप।
पढ़े सुने तेहि चित चढ़ै, युगल अनन्य अनूप।।

Scanned by CamScanner

## द्वितीय अष्टक

### हरि गीतिका छन्द

अति सुखद रूप अनूप मुनिवर भूपवत राजत सदा।
रतिनाथ जित नित मद रहित सु सकल हितकारक सदा।।
भव भरम नासन अडिग आसन भक्ति सासन दिममनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी।।1।।

पर्वत सिलावत द्रव्य जाको नागिनी सी नारि है।
सतमुख चतुर्मुख लोक सम्पति डाकिनी सी विचारि है।।
सब सिद्धि ठगिनी सी गिनत विष सम जगत माया बनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी।। 2।।

अक्षोभ लोभ बिहीन हरिपद लीन नित्य अदीन हैं।
पर दीन जन के दुःख हारक अरि विदारक पीन हैं।।
सतसंग मौंहि प्रवीन युक्ति नवीन कहहिं अतिहि घनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी।।3।।

मन शान्त इन्द्रीजीत आप अभीत नीतिहिं नहिं तजैं।
सब संत माहि सुविदित जन पर प्रीति रीति सदा भजैं।।
अविपक्ष दक्ष सुलक्ष जो प्रत्यक्ष दिन अरु जामिनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी।। 4।।

भवपूर जलनिधि भूरि ते काढ़त निकट करि दूर हैं।
तम-पुञ्ज नासन सूरवत सब बिस्व में भरपूर हैं।

Scanned by CamScanner

यह हैं वसिष्ठमुनी किधौं अवतार और लियो पुनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी।। 5।।

यह काल अति विकराल लखि जम जाल ते जो छुड़ावने।
प्रतिपालने यह तन धर्‌यो किधौं धर्‌यो भक्त उधारने।।
जो तेजवान पुमान सो भी अंस हरि को कहि गुनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी।। 6।।

अभिमान मान न जानहीं जेहि कीर्ति लोग बखानहीं।
रघुनाथ साथ अनन्य भाव अखंड मन में आनहीं।।
उपमेय रिषिगन पूर्व में उपमान मानत अब जनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी।। 7।।

केते कहौं मुख एक ते गुन बहुत अवगुन नाहिं हैं।
दर्शन करत अघ करत दूरि निज धर्ममय तन जाहि हैं।।
नित ध्यान तिन को धरो हित सो करो सुस्तव मुख भनी।
पद युगल युगलानन्य सरन नमामि स्वामि सिरोमनी।। 8।।

रसाचार्य प्रवर्य्याय लक्ष्मणदुर्ग वासिने।
श्रीमद्युगलानन्याय नित्यं भूयात् सुमंगलम्।।
त्याग वैराग्य रूपाय ज्ञानविज्ञान मूर्त्तये।
युग्म भाव प्रसक्ताय नित्यं भूयात् सुमंगलम्।।

इति श्री युगलाष्टकम्

Scanned by CamScanner

श्री युगलानन्यशरण जी की

# जन्मोत्सव बधाई

## प्रकट कालीन स्तुति

श्रीगुरु प्रगटाने छवि रस साने लखि माता सुख फूली।
सद चिद मुद मूला जन अनुकूला उपमा अपर न तूली।।
रवि ससि सदजोती अगिन समोती जगमग किरण पसारी।
नख सिख लों सुन्दर रूप मनोहर मन भावन सुखकारी।।
जन कुलहि सु मंडन खल कुल खंडन कारक मंत्र प्रचारी।
अति दीन उबारन भवनिधि तारन बिनु कारन उपकारी।।
तिहुँ तनहिं सुनाशक भाव प्रकाशक तुरिया तन अविनाशी।
त्रय रहस अकास मन वच पारा अर्थ अलौकिक रासी।
कलि कलुष निवासी प्रेम प्रकासी सुख कारन दुखहारी।
प्रभु इच्छाचारी स्वबस बिहारी जग जीवन प्रियकारी।।
रक्षक श्रुति सेतुं सतकुल केतुं वन्दित सदा अमानम्।
निगमादि सुगीतं चरित पुनीतं भवभय शमन निदानम्।।
सेवित वर चरणं आश्रम वरणं शरनद कृपा निधानम्।
आश्रित सब लायक तद्गुण छायक प्रेम भक्ति वरदानम्।।

Scanned by CamScanner

यह चरित जो गावहि सब सुख पावहि 'प्रेममोद' मन भावै।
पिय पुर चलि जावै बहुरि न आवै रूप समीप रहावै।।

## दोहा

अघ घालक गो संत द्विज, पालक कृपा अगार।
बालक बपु रोवन लगे, मंगल मोद प्रचार।।

## पद – 2

आज महा मंगल रसिकन घर आनन्द उर उमगायो।।
बरषगाँठ रसिकाचारज की उत्सव साज सजायो।।
कातिक मास पुनीत सीत पख तिथि सतमी मन भायो।।
नखत लगन ग्रह बार मुहूरत शुभद योग जुरि आयो।।
ईशरामपुर पावन द्विज कुल-जनमि जगत जस छायो।
हेमलता सिय सखि धरि नरतन युगल अनन्य कहायो।।
रसिक राज शिरताज अवध में अचल सुवास सजायो।
रसिक पीठ वर थापि लखन को किला सु नाम धरायो।।
ग्रंथ रतन वर विरचि शताधिक एक ते एक सवायो।
ज्ञान बलित वैराग भगति की, वेनी ललित बहायो।।
मधुर मंजु माला रचि-रचि कै रसिकन गर पहिरायो।
युगल विनोद विलास लखावन रहस सु ग्रन्थ रचायो।।
निष्ठा नाम रटन लय लावन ग्रंथन विरचि दृढ़ायो।।

Scanned by CamScanner

को कहि सकै एक मुख इनके गुन अनन्त सरसायो।
मधुर भगति वरदान लहन को उत्सव 'कान्ति' मनायो।।

## सोहर पद –3

हेमलता गुन आगरि रूप उजागरि हो।
ललना, प्रीनन परम प्रबीन ललन नवनागरि हो।।
सिय आयसु धरि सीस जीव जगतारन हो।।
ललना, प्रगट भये भुवि लोक भगति विस्तारन हो।
कातिक मास पुनीत पाख सित सातहिं हो।
ललना, लगन नखत शुभ योग बनेउ सब भाँतिहिं हो।।
रसिकन हिय उमगावन पंथ लखावन हो।
ललना, आचारज जग जनमि सुजन मन भावन हो।।
कबहुँ घृताची कुंड चित्र कल कूटहिं हो।
ललना, नाम रटेउ भरि जनम अवध सुख लूटहिं हो।।
युगल अनन्य सुशरन नाम बड़ पायउ हो।
ललना, धाम अवध सजि वास युगल जस गायउ हो।।
रसाचार्य अस पाइ सुभाग मनावहिं हो।
ललना, कान्तिलता भरि मोद सुयश कल गावहिं हो।।

Scanned by CamScanner

## पद - 4

चलो सखि सोहिलो गावैं। मधुर आनन्द रस पावैं।।
बरस की गाँठ गुरुवर की। युगल सु अनन्य धुर धर की।।
मास यह कल्प कातिक को। नखत चातक के स्यातिक को।।
पक्ष है शुक्ल सोहन को। तिथी सतमी विमोहन को।।
अवध आनन्द अधिकाने। सु उत्सव रसिक गुरु ठाने।।
रसाचारज जनम दिन को। लहै सुख भाग है जिनको।।
बढ़ैं अभिमान आचारज। लहै रस पंथ तब आरज।
बधाई गान करि नाचै। मधुर रस कान्ति मुद माचै।।

## पद - 5

दिवस यह परम सुहावन री।
ईशरामपुर विप्र भवन में बजत बधावन री।।
मंगल कातिक मास पक्ष सित, शुभ सतमी को उदित-
मुदित हित विप्र बधू जायो सुत अद्भुत, सुख उपजावन री।।
विप्र भवन में मंगल माचैं, सुघर सुआसिनी गावैं नाचैं,
दिव्यानन्द नकल दिसि माचैं, हिय सरसावन री।।
सुनि सिसु जनम प्रीति अति बाढी, ढाढ़िन युत चलि आयो-
ढाढ़ी, गान करन लागे सप्रेम कल कीरति पावन री।
जनम-कुंडली आगम भावैं, गनक शोधि कै जो गुनि राखैं।।
होइहहिं रसिकाचार्य शिरोमनि तत्त्व लखावन री।

Scanned by CamScanner

सुनि–सुनि मातु पिता सुख फूलैं, जगत अमंगल मिटैं समूलैं।
आचारज भनि जनम कांति हिय रस उमगावत री।।

## पद – 6

चलो री सब देखि आवैं बाजत बधैया।
ईशरामपुर घर–घर मंगल आनन्द रस उमगैया।
रसिकाचारज प्रगट भयो है मनहु सुजन सुर गैया।। 1।।
कातिक मास सुहावन पावन शुक्ल पक्ष सित छैया।
सतमी तिथि को जनम लियो है रसिक जनन सुखदैया।। 2।।
पुन्य ग्राम की सुघर सुआसिनि मंगल साज सजैया।
द्विज आँगन में नाचहिं गावहिं सोहर ता–ता–थैया।। 3।।
नभ सुर पुर द्वारन पर बाजै जंत्र विविध सहनैया।
आचारज के जन्मोत्सव सुख कान्ति मोद मगनैया।। 4।।

## पद – 7

श्रवन सुखदाई बजत बधाई।
ईशरामपुर नागरि सुनि–सुनि पुलकि बधावन लाई।
मंगल घट पूजन बहु माला बन्दनवार बँधाई।
अच्छत रोरी पान सुपारी धूप अरु दीप मिठाई।।
स्वस्ति वचन सानन्द विप्र कहि गनपति गौरि पुजाई।
कुलाचार व्यवहार सविधि कर परिजन जन हरषाई।।
सब मिलि राग सोहिलो गावैं नाचैं द्विज अँगनाई।
राई लोन उतारति 'मधुरी' नटकट नजर बराई।

Scanned by CamScanner

## पद – 8

माई विशद बधाई लाई।
विधि लोचन लाभ लखाई।।
हेमलता श्रीसिया सहचरी कली भली विकसाई।
लोग लुगाई ईशरामपुर फूली सुख न समाई।।
देत निछावर द्विज मनभाई वसन सु द्रव्य लुटाई।
सियवल्लभ को होय दुलारी देत अशीष अघाई।
'मधुरी' प्रेमा परा प्रवर्द्धक प्रेम प्रीति पद पाई।।

## पद – 9

जयति–जयति हेमलते रसिक रंजनी।
रसिकाचारज अनूप, संतत थिक निज स्वरूप,
ज्ञानवर विराग मधुर, भक्ति कंदनी।।
नाम अमित पान करत, युग बिहार भाव भरत,
जन मन कलि-कलुष मोह, सतत भंजनी।
सरजू तट बास सजत; जगत जाल सहज तजत,
धाम सुरस छाकि भये, जगत वंदनी।।
कथनी करनी अमोल, जनमन बिनु बिकत मोल,
आश्रित बलिहार होत, सुचित चंदनी।
गुरुवर पद कमल ध्यान, धरत हरत मोह मान,
गौरव आचार्य कांति, मल निकंदनी।।

Scanned by CamScanner

# परिशिष्ट

## पद – 1

आजु पुर प्रगटे हैं रघुराज।
आनन्द भयो अखिल भुवननि में निर्तत देव समाज।।
नरपति सफल भये द्रुम देखियत पय घृत सरिता बाढ़ी।
त्रिविध प्रकार समीर संचर्‌यो अष्टसिद्धि द्वारे ठाढ़ी।।
मंगलचार बधाई घर–घर वेद घोष जय बोलत।
दधि अरु दूब बँधावत नृप कौ मुदित भये मुनि डोलत।।
कहँ परस्पर तत्त्व – वेत्ता पुन्य पुराकृत पायो।
दितिसुत काल दयाल अदितिसुत सो दशरथ गृह आयो।।
अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष गति जो जाचे सोंई पावत।
'अग्रअली' अनुराग सहित अति रामजन्म गुन गावत।।

## पद – 2

गावो री हिलि मिलि नागरिया।
रामलला को जन्म सोहिलो रहसि–रहसि गुन आगरिया।।
लेउँ बधाई जो मन भाई महरानी संग झागरिया।
भूषण बसन बाजि गज बाहन दशस्यन्दन शिर पागरिया।।
झुण्ड–झुण्ड गायक गुण रमनी गजगमनी छवि सागरिया।
'ज्ञानाअलि' गर्बीली नागरि मन्द–मन्द गति बागरिया।।

Scanned by CamScanner

## पद – 3

आज नृपति उर सुख न समाई।
रूप अूप देखि सुत सुन्दर जन्म दरिद्र मनहुँ निधि पाई ।।
सिंह पौरि पर नौबति बाजै सरस राग बाजै सहनाई।
बन्दनवार पताका जहँ–तहँ गजमोतिन की चौक पुराई ।।
अलिगन गान करैं पंचम स्वर सुनत कोकिला कण्ठ लजाई।
महल मध्य आनँद अति सरसत बरसत सुमन देव समुदाई ।।
याचक पाय अघाय सराहत दै अशीष निज–निज गृह जाई।
'मधुरअली' लै गोद खेलावत मुदित मातु सुत कण्ठ लगाई ।।

## पद – 4

आजु दशरथ के आँगन भीर।
ये भू–भार उतारन कारन प्रगटे श्याम शरीर ।। 1 ।।
फूले फिरत अयोध्यावासी गनत न त्यागतचीर।
परिरंभन हँसि देत परस्पर आनन्द नैनहिं नीर ।। 2 ।।
त्रिदस नृपति रिषि व्यौम विमाननि देखत रह्यो न धीर।
त्रिभुवन नाथ दयालु दरस दै हरी सबनि की पीर ।। 3 ।।
देत दान राख्यो न भूप कछु महा बड़े नग हीर।
भये निहाल 'सूर' सब जाचक जे जाँचे रघुबीर ।। 4 ।।

## पद – 5

आज अनूठी बजी बधाई।
देवलोक विधि लोक मगन जन नाचत गावत सुधि विसराई ।।

Scanned by CamScanner

को हम कहाँ लोक हम को हैं अस आनन्द कबहुँ नहिं पाई।
जस महराज कुमार जन्म सखि रसिकन हिये सुरस बरसाई।।

## पद – 6

आई हौं सुनि सुख सोहिलो।
देखोंगी मुखचन्द लाल को बहुत दिनन मग जोहिलो।।
लाई हौं शिशु खेल खिलौना छवि छौना मन मोहिलो।
शुक सारिका मोर मुनियाँ बर हँस कबूतर कोइलो।।
लाख लखेरिनि राजमहल की वचन सुधा रस बोहिलो।
'ज्ञानाअली' कौशिल्या सुत यश सुमति सूत वर पोहिलो।।

## पद – 7

आवो–आवो री बधाई गावो सोहनी।
बहुत बयस पर ऐस समै भई अली–भली भाँति सु जोहनी।।
श्याम महा सुखधाम राम अभिराम काम बहु पोहनी।
परमानन्द अवध वीथिन प्रति दस दिसि भरि रहि छोहनी।।
हिलत मिलत ह्यि खिलत कमल भल छवि रस भरि दृग दोहनी।
'युगल विहारिनि' मुदित असीसत ऐहैं प्रिय सिय मोहिनी।।

## पद – 8

क्या अनूठी रस भरी सुनिये बधाई बज रही।
मोर घन शुक सारिका कल कोकिला भी लज रही।।
भाट–नट बहुरूपिये ढाढ़िन मजा ए मच रहीं।
नारियाँ रँग–रंग की पोशाक पहिरे नचि रहीं।।

Scanned by CamScanner

अवध में हरतरफ मंगलमय कनातें खचि रहीं।
किसी को सुधि–बुधि नहीं उत्साह रँग मति रचि रहीं।।
दीजिये लुटवाय सर्वस आज जो कुछ सँचि रही।
'युग्म' दिल अन्दर हमारे शौक सम्पत्ति बचि रहीं।।

## पद – 9

क्या मजा मुझको चखाती है, बधाई लाल की।
क्या करूँ तारीफ दरसाती है छवि वर बाल की।।
गावतीं गुनगन रँगी सखियाँ सजी सब आल की।
देती निछावर महा मनिगन आभरन दुति जाल की।।
हो रही बकशीश चारों तरफ घोड़ा पालकी।
कौन कवि वर्णन करे पुरवासियाँ खुशहाल की।।
खुशी खातिर में समाती है नहीं नरपाल की।
'युग्म' जागी ज्योति सबहीं तौर मेरे भाल की।।

## पद – 10

खेलावत आज नृप श्रीराम शिशु को लैके निज कनियाँ।
बनै सो निरखते ही सुभग अनुपम अमित छवि बनियाँ।।
दुहूँ काँधे से पदनख जोति ऐसी जगमाती है।
प्रगट जनु अर्ध शशि दस साथ उदयाचल से सुखदनियाँ।।
कनक पद पैजनी कटि किंकिणी कर शुभ कड़े भुजवर।
रतनमय पदक हरिनख युत लसै कलकण्ठ गजमनियाँ।।

Scanned by CamScanner

शरद शशिपूर्ण मुख मसिबिन्दु माथे बाल घुँघरारे।
श्रवण कुण्डल दृगन अंजन है नासा ललित लटकनियाँ।।
तड़ित पट पीत केहरि कटि में काछी काछनी सुन्दर।
झिंगुलिया झीन जरतारी दिये शिर लाल चौतनियाँ।।
कबहुँ भूपाल काँधे पर खड़े कर देते हैं अपने।
उछलते नाचते हलते हैं लै-लै कलित किलकनियाँ।।
जननि चुचुकारि निज चुटकी बजाकर जब बोलाती हैं।
तो 'हरिजन' मन को हर लेती हैं हरि की मन्द मुसकनियाँ।।

## पद - 11

**दोहा-** घर-घर अवध बधावने, मंगल साज समाज।
सगुन सोहावन मुदित मन, कर सब निज-निज काज।।
**छन्द-** निज काज सजत सँवारि पुर नर-नारि रचना अनगनी।
गृह अजिर अटनि बजार वीथिन्ह चारु चौकें विधि घनी।।
चामर पताक वितान तोरन कलस दीपावलि बनी।
सुख सुकृत सोभामय पुरी विधि सुमति जननी ज़नु जनी।। 1।।
**दोहा-** चैत चतुरदसि चाँदनी, अमल उदित निसिराज।
उडुगन अवलि प्रकासहीं उमगत आनन्द आज।।
**छन्द-** आनन्द उमगत आज विबुध विमान विपुल बनाइकै।
गावत बजावत नटत हरषत सुमन बरसत आइकै।।
नर निरखि नभ सुर पेखि पुर छबि परसपर सचु पाइकै।
रघुराज साज सराहि लोचन लाहु लेत अघाइकै।। 2।।

Scanned by CamScanner

**दोहा–** जागिय राम छठी सजनि, रजनी रुचिर निहारि।
मंगल मूरति मोद मय, नृप के बालक चारि।।
**छन्द–** मूरति मनोहर चारि विरचि विरंचि परमारथमई।
अनुरूप भूपति जानि पूजन जोग विधि संकर दई।।
तिन्हकी छठी मंजुल मठी जग सरस जिन्हकी सरसई।
किए नींद भामिनि जागरन अभिरामिनी जामिनि भई।। 3।।

**दोहा–** सेवक सजग भये समय, साधन सचिव सुजान।
मुनिवर सिखये लौकिकौ बैदिक विविध विधान।।
**छन्द–** बैदिक विधान अनेक लौकिक्क आचरत सुनि जानि कै।
बलिदान पूजा मूल कामिनि साधि राखी आनिकै।।
जे देव देबी सेइयत हित लागि चित सनमानिकै।
ते जंत्र–मंत्र सिखाइ राखत सबनि सों पहिचानिकै।। 4।।

**दोहा–** सकल सुआसिनि गुरजन, पुरजन पाहुन लोग।
विबुध बिलासिनि सुर मुनि, जाचक जो जेहि जोग।।
**छन्द–** जेहि जोग जे तेहि भाँति ते पहिराइ परिपूरन किये।
जय कहत देत असीस तुलसीदास ज्यों हुलसत हिये।।
ज्यों आजु कालिहु परहुँ जागन होहिंगे नेवते दिये।
ते धन्य पुन्य पयोधि जे तेहि समै सुख जीवन जिये।। 5।।

**दोहा–** भूप त भाग सुरवर बली, नाग सराहि सिहाहिं।
तिय बर वेष अली रमा, सिधि अनिमादि कमाहिं।।

Scanned by CamScanner

छन्द– अनिमादि सारद सैलनन्दिनि बाल लालहिं पालहीं।
भरि जनम ते पाए न जे परितोष उमा रमा लही।।
निज लोक बिसरे लोकपति घर की न चरचा चालहीं।
'तुलसी' तपत तिहुँ पाप जग जनु प्रभु छठी छाया लही।। 6।।

## पद – 12

ढाढ़ी मिथिलापुर ते आयौ।
दशरथ नृप के पुत्र जनम सुनि, ढाढ़िन प्रेरि पठायो।। 1।।
दिव्य सभा देखी भूभुज की, चकाचौंधि सी लागी।
परम विनीत सुहृद सुचि सुखकर, सब मारग श्रम भागी।। 2।।
निमि कै बंश विदेहन कौ जस, कौशलपति सुन्यौ कान।
कुश–शीरध्वज कुशल पूछि कै, बहुत कियौ सनमान।। 3।।
हय गय रथ भूषन पट दीने, राजवर्य वर दानि।
भोजन सींवर करी सुश्रूषा, बड़ी ठौर को जानि।। 4।।
बरषत विभव अयोध्यावासी, जैसे बरषत इन्द्र।
ढाढ़ी देखि पन्थ में पन्थी, मानी चल्यौ नरिन्द्र।। 5।।
'अग्र' अशीष चिरंजिव रघुबर, युग–युग जस अघटी।
देख्यौं जनम ब्याह पुनि देखौं, ढाढ़ी ठटनि ठटी।। 6।।

## पद – 13

देखौ द्वार आजु दशरथ को, कहत न कछु कहि आवै री।
मूरतिवन्त मुकुति सिधि उझकत, भीतर जात लजावै री।।

Scanned by CamScanner

मनिमय अजिर अनूप अधिक छवि, तहँ खेलत सुत चारी री।
कोटि भानु विधु कोटि काम दुति, अमित तेज तनुधारी री।।
घूँघरवारे केश वदन पर चञ्चल अधिक सुहाते री।
मनो मंदार तजत नहिं अलिकुल, मधु रस घूमत माते री।।
बरनौं कहा विशाल नयन अति, तिहि उपमा कछु नाहीं री।
इंदीवर पर उझकि परै छै, लोल मीन की नाईं री।।
उज्ज्वल भाल सचिक्कन ऊपर, श्याम चखौड़ा साज्यौ री।
रघुपति मुख पूरन शशि निरखत, तिमिर सकुचि मनो लाज्यौ री।।
अरुण अधर पर मुकुतावर सखि, नासा अग्र दई तौ री।
सकल लोक की शोभा हरि शुक, कमल कोष मनो बैठी री।।
कर्णफूल मणि जटित मनोहर, तर कपोल झलकाई री।
दिग जीतन कौ इन्द्र उदय लै, सविता उभय सुहाई री।।
बघनख कण्ठ विराजमान अति, उर पर सुभ्र निकाई री।
दुतिया चन्द अनन्द जनक जस, घन में देत दिखाई री।।
अरुन पीत सित हरित करधनी, श्याम सुभग कटि सोहैं री।
जलद घटा पर मनहुँ प्रगट भयौ, इन्द्र धनुष मन मोहैं री।।
कौशल्या की कोख कल्पतरु, रामचन्द्र फल लाग्यौ री।
पुनि प्रभाव ते अगम अगोचर, कौन सुकृत यह जाग्यौ री।।
ब्रह्मा शेष महेश शारदा, निज सरूप नहिं जानैं री।
ताके गुण 'अलि अग्रदास' कछु मति अनुमान बखानै री।।

Scanned by CamScanner

## पद - 14

देखिये आज क्या छटी की छटा छाई है।
जाग है हो रही घर-घर में मनोहर सजनी।।
खुश लसौ रंग की रजनी सु ललित भाई है।
गावतीं रानियाँ महलों के अटा पर प्यारी।।
रागिनी रूपवती वाम रहस गाई है।
भाल में रेख छठी राति को विधना ने लिखी।।
मिटि गई सहज हीं दिन आज युगल पाई है।।

## पद - 15

धनि जननी जिन जायो री बालक, धनि जननी जिन जायो री।
श्यामल गौर मनोहर जोरी, चारि चतुर मन भायो री।। 1।।
आरति हरन करनि सुख मंगल, भरनि धरनि, प्रगटायो री।
अपनी भाग-भाग जग सिगरे, नृप सुत वेदन गायो री।। 2।।
ये अविनासी घट-घट वासी, कारण कारण आयो री।
फणि शंकर विधि मतिहुँ अगम तिन्ह रानिन गोद खेलायो री।। 3।।
अवध नगर सुख अवधि बढ़ी अब, अवधि शाल गुन छायो री।
'कृपानिवास' विराट गुसाईं, सिसु तन लगत सुहायो री।। 4।।

## पद - 16

धनि-धनि चैत महिनवाँ की सुघर समैया हो।
रामा प्रगट भये रघुरैया परम सुखदैया हो।। 1।।

Scanned by CamScanner

धनि–धनि अवध नृपति वर प्रभु प्रगटावहिं हो।
रामा धनि–धनि अम्ब कौशल्या ई दिवस दिखावहिं हो।। 2।।

जो सुख दुर्लभ ब्रह्मा आदि सब देवहिं हो।
रामा, अवध नगर के बसैया सहजहि में पावहिं हो।। 3।।

द्वारे बाजे बधावा महल बिच सोहर हो।
रामा, सोभित रानीजू के गोद ललनजू मनोहर हो।। 4।।

आरति करहिं युवतिजन मंगल गावहिं हो।
रामा 'सियाअली' जीवन धन लखि सुख पावहिं हो।। 5।।

## पद – 17

निज कर से पिय को कर गहि, ढाढ़िनियाँ सु छवि छकी।
श्री नृप सुवन जनम मंगल मुद देखत झझकि जकी।
नाना भाँति निछावर मनिगन तरफ न तनक तकी।
'युगल अनन्य' लाल उत्सव बिच अग जग नरद पकी।।

## पद – 18

नृप द्वार दुन्दुभी बाजि रही।
रामजन्म सुनि के अजनन्दन, हिय में हर्ष न जात कही।।
भूषन वसन धेनु मणि मानिक, माँगै द्विज सोइ देत वही।
आनन्द अवध दकार है घर–घर, कहूँ नकार को खोज नहीं।।
अलिगन आय गाय क्या सोहिलो, सुनि रानिन सब मोद लही।
'मधुरअली' ब्रह्मादि देव सब, सुमन बरषि जो समय चही।।

Scanned by CamScanner

## पद – 19

प्रेम रस भीनी बधाई आज ही मैंने सुनी।
सुख सुधा परिपूरिनी मन मोहनी मन में गुनी।।
भूपमनि अनमोल गुनगन राय दशरथ सम दुनी।
कौन तीकों लोक में पाये सुवन त्रिभुवन धनी।।
गाइये अनुराग बिशद समेत जस कीरति घनी।
फिर नहीं ऐसा मोबारक समय सुख शोभा सनी।।
जेते जगत में थे भिखारी हो गये सो सब गनी।
'युग्म' निवछावर लला तुझको मिलेगी छवि छनी।।

## पद – 20

बढ़ैया पाल्यो मोर चकोरा।
दशरथ मन्दिर जन्म कुँवर को सबहुन के चित चोरा।
सुनरा छवि सोना के हाथी अरु अद्भुत इक घोरा।।
माली बन्दनवार ले आयो बिच-बिच राखे छोरा।।
सूजी सुबास वारे सुन्दर पोइ पाट के डोरी।
लाखी लायो लाख की लटकन मनो कंचन के तोरी।।
कुम्हरा कल कलशा लै आयो परत सबन मन भोरी।
दई विदा नृप बहु आनन्द भरि दिन-दिन कोरिन तोरी।।
दै आसीस चले 'जनगोविन्द' अब अपने गृह जोरी।
चिरजीवो नृप कुँवर सलोने गौर स्याम द्वै जोरी।।

Scanned by CamScanner

## पद – 21

फूले फिरत अयोध्यावासी
सुन्दर सुत जायो कौशिल्या, रामचन्द सुख रासी।।
घर–घर बन्दनमाल साथियाँ, मोतिन चौक पुराये।
नाचत गावत देत बधाई, मनो घर–घर सुत जाये।।
गरी–गरी गज बाजि जहाँ तहँ, हलकन दिये तबेले।
दान बहुत याचकगन थोरे, कापै जात सकेले।।
दशरथ भूप भण्डार मूक किये, बन्दी अभर भरे।
सकट सली तोहि सोहू मालिनि ढोय–ढोय ढेर धरे।।
सन्त कमल सुखदेन काज रवि, राघव उदय कर्यौ।
मुदित देव दुन्दुभी बजावत, निशिचर तिमिर हर्यौ।।
देत अशीश नगर नारी नर, चिरजीवो रघुबीर।
'अग्रअली' आनन्द अखिलपुर, मिटी ताप तन पीर।।

## पद – 22

बधाई अवधेश के धामैं। बजाती गावती वामैं।।
नगर की नारियाँ वृन्दैं, लजावैं दुति सरद चन्दै।।
चली गति करन गज मन्दै। लिए दधि दूब अरविन्दै।।
ललन मुख निरखि सुखकन्दै। सुफल निज जानि पद बन्दै।।
निछावरि करत तन–मन–धन। गगन वरषै सुमन सुरगन।।
नचैं कमला–शिवा बानी। लखै प्रिय वदन मुद दानी।।
रसिक मन मीन भा पीना। श्याम छवि सिन्धु विधि दीना।।

Scanned by CamScanner

मिटी अब पाँच की आँचैं। मिल्यो महबूब वर साँचै ।।
'जुगलसुविहारिनी' जाँचे। बरद वर भक्ति लहि नाचैं ।।

## पद – 23

बधाई प्यारी बाजै आज।
सुनत श्रवन सुख सरस सौगुनो सुमन सुमति तरताज।
पुर घर बन बीथी बिच जहँ–तहँ हुलसि रह्यो रसराज ।।
रसिक सनेह सुधा साने मनु मधुकर रस सुख साज ।।
नृप रानिन उत्साह चाह चय अकथ गिरा गनराज।
'युगल अनन्य' विपुल जाचकगन करैं कुतूहल छाज ।।

## पद – 24

बाजती वर विशद बधाई।
सुनत श्रवण सुख सरस परसमनि मनो रंक अति पाई ।।
श्री दशस्यन्दन सुकृत सुतरु फल अमल प्रगट भए आई।
पुर घर–घर मुद मोद उदय उर रंग बूँद्र बरषाई ।।
परम प्रकाश हुलास चराचर प्रीति दमक दरसाई।
'युगलअनन्यशरण' सब उर अनुराग चमक चमकाई ।।

## पद – 25

बाजे अवध नृप द्वार, बधाई शुभ घरी।
घर–घर मंगलचार, निछावरि मन झरी ।।
छं.– मणि वसन भूषण बारि तन–मन नारि नर आनन्द महा।
बरषहिं सुमन सुर सूत मागध भाट नट गायक जहाँ ।।

Scanned by CamScanner

मध्य दिवसगत भानु, विमानन सुर बरी।
नाचहिं गावहिं सुमुखि, मगन गति मति हरी।।

छं. –गति हरी हिय हरषि निरखहिं नगर रचना छवि सनी।
कहि सकहिं नहिं सुख सुयश सुखमा उमा रति वाणी गनी।।
तिथि नवमी मधुमास, पुनर्वसु सुख भरी।
योग लगन ग्रह बार, सुविधि दाहिनि करी।।

छं. – सुन्दरी कौशल्या रामजननी प्रगटि सुवन सु श्याम हैं।
कैकयी सुमित्रा सुवन चारौं चतुर सुखमा धाम हैं।।
नित नव मंगलचार, गाय, किन्नर नरी।
ज्ञानाअलि बड़ भाग, सुयश बाँटे परी।।

छं. –जग विदित तिहुँपुर चारि युग श्री जन्मभूमि सुहावनी।
सुख अवधि वर कारनि रमापुर भाविकन मन भावनी।।
झूलत मातु उछंग, कबहुँ वर पालने।
कबहुँ पिता की गोद, फँसे सुख जालने।।

छं. – गहि पद अंगुष्ठ मयंक नखद्युति कंज मुख पीवत छके।
सुरतरु सुभग नृपरानि शिशु फल पाय जनु सुन्दर पके।।
नित नव बाल बिनोद, मोद भरि राजहीं।
मातु कौशिल्या आदि, मनहिं मन गाजहीं।।

छं. – भरि भाग अचल सोहाग मातु नृपाल लालहिं पालहीं।
पय प्रेम प्याय लगाय उर प्रमुदित सुवन नित लालहीं।।
ज्ञानाअलि पुरनारि, सु सोहिलो गावहीं।
तन मन धन निवछावरि, करि सुख पावहीं।।

Scanned by CamScanner

## पद – 26

बाजे बाजे बधाई आछियाँ।
कौशलेश जू के पुत्र भये सुनि नभ बिच सुरतिय नाचियाँ।
घर–घर मंगल साज अवधपुर ध्वजा पताका साचियाँ।।
जहँ–तहँ गान करत पुरवासिनि गलियाँ अरगजे माचियाँ।
विप्र वेद उच्चार चहूँ दिशि याचक आशिरवाचियाँ।।
नभ ते सुमन वृष्टि बहु रंजन पुर गलि चौहट गालियाँ।
'रसिकअली' महामोद सबन के असुरन के उर आँचियाँ।।

## पद – 27

बाजे–बाजे री बधाई आजु बाजै।
सकल भुवनपति राम सुवन भये चक्रवर्ती महराजै।।
रचना विविध अवध घर–घर प्रति मंगलप्रद रितुराजै।
छिति नभ मोद प्रमोद विनोदहिं सुखमय साज समाजै।।
सुरनर मुनि सचराचर हर्षित जय–जय होत अवाजै।
अंगहि अंग उमंग रँग रँगे नैन ऐन छवि छाजै।।
श्री सतगुरु महराज प्रणत हित सफल कियौ मन काजै।
'युगलविहार' बहार लखन नित धाम नाम प्रभु ब्याजै।।

## पद – 28

विविध विनोद प्रमोद सु बासर, मगन अवध नर नारी।
कौशिल्या नभ हृदय प्रगट ससि, राम प्रमोद निहारी।। 1।।

Scanned by CamScanner

आनन्द अंबुधि हरषि बीचि मानो, उमगि चली सरिता री।
मुनिजन वृन्द चकोर मुदित मन, निरखि बदन श्रमहारी ।। 2 ।।

मंगल सुधा श्रवै दस आसनि, ताप शोक भय टारी।
पंकज दनुज चक्कि चकवा दे, मुरुझि लजे तावारी ।। 3 ।।

यूथ–यूथ बनिता बनि सुन्दरि, लिये मंगल कर थारी।
मानो बिपुल भारती गावति, राम जनम सुखकारी ।। 4 ।।

निसरि प्रवेश द्वार भूपति के, भीर कुतूहल भारी।
जनु सजि चन्द रूप मन्दिर में, आवत जात अपारी ।। 5 ।।

मणिमय चौक साथियाँ पूरति, नागरि नव सुकुमारी।
मनो दशरथ नृप भाग प्रशंसा लिखत अमित विधि प्यारी ।। 6 ।।

गृह–गृह बन्दनवार बँधावति, मालिन छबि मतवारी।
मनो सचिपति निज चाँप करनि ते, धरत, सुधारि–सुधारी ।। 7 ।।

ध्वजा पताका तोरनि कोरनि, नागरि नरन बनाई।
मनो सिंगार बाग कुंजनि के, कदली मूँग सोहाई ।। 8 ।।

कलश भवन पर दीप मनो नभ, कोटिन दिनमणि छाई।
विपुल वितान तने मणिगन युत, मन्म्‍ विधु उरग बसाई ।। 9 ।।

पट चामर छाये चौहट बट, रटत न उपमा आई।
केशरि मलय अरगजा सौंधे, वीथिन कीच मचाई ।।10।।

धूप धूम नभ पावस मानो, गरज़ि निशान बजाई।
दादुर मोर विप्र बंदीजन, बरषा सुख बिपुलाई ।। 11 ।।

Scanned by CamScanner

बिबुध–बधू नाचैं चपला घन, सुमन माल बगपाँती।
बहुरँग बंदनवार महल पर, जनु मघवा धनु काँती।। 12।।

नटवा भाट सूत मागध जन, दूब बँधाइ असीसैं।
मानो पुण्य देव चूड़ामणि, पूजत अमर बरीसैं।। 13।।

हय गय स्यन्दन धेनु महिषि महि, भूषण बसन लुटावैं।।
दशरथ कोटि धनद की माया, लखि वरदान लजावैं।। 14।।

शीश नमत चतुरानन आये, भव नारद गुण वरनैं।
मनहुँ भाग मणि चारि पदारथ, अनइच्छित सुख सरनैं।। 15।।

रानी सब निज मन्दिर सुन्दर, फली परमआनन्दम्।
मनहुँ हरषि उपवन छवि वेली, सुधा पोषि मकरन्दम्।। 16।।

पुत्र उछंग सुमाय विराजैं को उपमा सब कहिये।
जनु दसधा धरि सर्वसु मूरति, ज्ञान योग ललचइये।। 17।।

ललना गण ललकार सुहेलरा, गावत प्रेम छई है।
आरज लाज विगत पट भूषण, तन मन बिसरि गई है।। 18।।

कमला सची गिरा भव पत्नी, रती आदि सुर वामा।
गाय प्रसंसि हंस कुल रानी, दासीवत कृत कामा।। 19।।

कर कमलनि वर थार सौज भरि, करति आरती हरषी।
वारति राई लोन सुतनि पर, गुरतिय बड़री घर की।। 20।।

धनमणि बोल सुप्राण अलंकृत, निवछावरि सब करहीं।
परमानन्द बिबस पुर परिजन, परम मनोरथ भरहीं।। 21।।

Scanned by CamScanner

गुरु भूसुर मिलि राय भाव बस, आय सुललन निहारी।
मुदित सकल जनु पाय अमल फल, तापस श्रम भ्रम हारी ।। 22 ।।

जातकर्म श्रुति रीति बिबिध विधि, नन्दीमुख व्यवहारा।
करि प्रमोद दक्षिणा दयो बहु, हाटक मणिगण भारा ।। 23 ।।

राज उमंग उछंग धरे सुत, सो उप चुप कवि वाणी।
मिस परब्रह्म सुधर्म गोद में, मूरति परमति सानी ।। 24 ।।

यह सुख सुभग सुरस सुचि दुर्लभ, पंक्तीरथ सु निकेता।
सुर दुहितादिक बाँछत दुर्गम, बावन विधि लहि वेता ।। 25 ।।

रघुकुल कंज पुंज मंजुल रबि, प्रगटे अज सुखदाई।
'कृपानिवास' बलैया छबि, की, पाय अघाय बधाई ।। 26 ।।

## पद – 29

मेरे रघुबर परम दयाल, लिहारो ढाढ़ी आयो।
नृप दशरथ जग वेद उजागर, जस बितान जग छायो ।। 1 ।।

इक्ष्वाकु नाम राजा अति सुन्दर, परम पुनीत प्रधान।
जिन यह नगरी निर्मित कीन्हों को करि सकै बखान ।। 2 ।।

तामधि नृपति उदार भये बहु, धृत मरजाद प्रमान।
सगर दिलीप भगीरथ कहिये, रघु अज परम सुजान ।। 3 ।।

रबिकुल आदि अन्त को बरनै, गुण प्रकाश को जानै।
अतिहिं पुनीत धर्म धुजि भये सब, दान मान सनमानै ।। 4 ।।

Scanned by CamScanner

मैं तो तिहारी घर की ढाढ़ी, सब जग में सरनाम।
तुमहीं जाँचि और नहिं जाँचौं, सब विधि पूरन काम।। 5।।

गज रथ बाजि बाहिनी वाहन, अठसिधि नव निधि धाम।
तुम्हरी कृपा अजाँची कीन्हों, गुन गाऊँ बसुयाम।। 6।।

चतुर पुत्र प्रगटे गृह तुम्हरे, नारायण निज मान।
प्रभु की लीला कवि को वरनै, श्रुति स्मृति कर गान।। 7।।

लाख देउ तौ धर्‌यो रहैगो, दरशन ही को काम।
मैं तो तिहारे घर की ढाढ़ी, अग्रअली मेरो नाम।। 8।।

## पद – 30

रघुपति बालकेलि अति भावत।
पग घुँघरू रुनकार श्रवण सुनि चकित घुटुरुवनि धावत।
मणिमय अजिर निरखि निज आभा पकरै हू नहि पावत।
लोटत लोचन मूँदि रुदन करि मानत नाहिं मनावत।।
श्याम गात कटि लाल करधनी बघनख उर बनि आवत।
कुंचित केश कमल मुख मानौ मधुपावलि लपटावत।।
पण्डित गिरा वदन वामा जब माता मोद मनावत।
बालक चरित विश्वमोहन वपु 'अग्रअली' गुन गावत।।

## पद – 31

रघुवर बाल छबि कहौं बरनि।
सकल सुख की सींव कोटि मनोज सोभा हरनि।। 1।।

Scanned by CamScanner

बसी मानहुँ चरन कमलनि अरुनता तजि तरनि।
रुचिर नूपुर किंकिनी मन हरति रुनझुनु करनि।। 2।।

मंजु मेचक मृदुल तनु अनुहरति भूषन भरनि।
जनु सुभग सिंगार सिसु तरु फर्‍यो अदभुत फरनि।। 3।।

भुजनि भुजग सरोज नयननि बदन बिधु जित्यो लरनि।
रहे कुहरनि सलिल नभ उपमा अपर दुरि डरनि।। 4।।

लसत कर प्रतिबिंबु मनि आँगन घुटुरुवनि चरनि।
जनु जलज संपुट सुछबि भरि–भरि धरति उर धरनि।। 5।।

पुन्य फल अनुभवति सुतहिं बिलोकि दशरथ–घरनि।
बसति 'तुलसी' हृदय प्रभु किलकनि ललित लरखरनि।। 6।।

## पद – 32

रघुकुल प्रगटे हैं रघुबीर।
देश–देश ते टीकौ आयौ रतन कनकमणि हीर।। 1।।

घर–घर मंगल होत बधाई अति पुरवासिनि भीर।
आनन्द मगन भये सब डोलत कछु सुधि नाहिं शरीर।। 2।।

मागध बन्दी सूत लुटाए गो गयन्द हय चीर।
देत असीस 'सूर' चिरजीवौ रामचन्द रनधीर।। 3।।

## पद – 33

रामजनम रबि उदय जगत महि, तिहूँ लोक को तिमिर नसावत।
लम्पट चोर निसाचर कुल बिन, सबहिन को आनंद बढ़ावत।।

Scanned by CamScanner

दिनमनि राम संत सरसीरुह, प्रफुलित हृदय बहुत सुख पावत।
जातुधान सँग सदृश कुमुदिनी, तस्कर विपट समूल बिलावत।।
पूरब दिशा कोखि कौशल्या, प्रगट हंस कवि कीरति गावत।
दुष्टन कौ वृष राज मिहर मानौ, 'अग्र' भक्ति प्राबिट बरसावत।।

## पद – 34

राम बधाई सुनि मन हरनी घर की ढाढ़िनि आई।
महरानी तुम जाये बालक, मेरे उर की भाई।। 1।।

करि सनमान दान अब दीजै, कीजै आज सवाई।
मेरी ढाढ़ी राय निवाजो, हम तुम पै जु पठाई।। 2।।

हम सों पति सों होड़ परी हैं, ल्याउँगी अधिकाई।
घर सों धार चली प्रण मन सों, तुम सों आइ सुनाई।। 3।।

प्रफुल बदन बोली कौशिल्या, माँगो क्यों न अघाई।
तेरे पति सों सौगुन लीजै, मेरे नाहिं घटाई।। 4।।

उन पाये नृप बागौ पगिया, तुम लहँगा सो सारी।
उन पाये पाटम्बर कम्बर, तुम लो मनि जरितारी।। 5।।

उन पाये हीरा अरु मोती, बाजू बन्दन नीको।
पायल कंकण किंकिनि बेसरि, करन फूल ले टीको।। 6।।

उन पाई रतनन की माला, मोल सुन्यो शत सौ की।
मोल तोल सों सौगुन लीजै, चन्द्रहार अरु चौकी।। 7।।

उन पाये गज घोड़ा पायक, स्यन्दन कंचन चाँदी।
तुम डोला सुखपाल महामणि, लीजै अनगिन बाँदी।। 8।।

Scanned by CamScanner

उन देख्यौ मुख मेरे लला को, तूँ क्यों न गोद खिलावै।
इतनी कही भई मतवारी, सो सुख को कवि गावै।। 9।।

फूली तन मन अंग न मावति, मन वाँछित फल पाई।
'कृपा निवास' अवध पटरानी, ढाढ़िन अधिक जिताई।। 10।।

## पद – 35

लखि सुत नृपति रानि सुख पावैं।
रतन चौक खेलत चारिउ भैया, कहुँ दृग मूँदि हँसत पनि धावैं।।
कहुँ पग पटकि मचलि फिरि मुसकत, करि किलकार मातु ढिग आवै।
तब मुख चूमि गोद जननी लै, कहि लालन पय पान करावैं।।
बाल विनोद महल मधि माँच्यो, अलिगण आय हरषि उर गावैं।
'मधुरअली' ब्रह्मादि देव सब, बैठि विमान सुमन बरसावैं।।

## पद – 36

ले आई सजि सुमन डाली, मलिनियाँ मान भरी।
श्रीदशस्यन्दन सुवन विभूषण लघु–लघु ललित लरी।।
सुन्दर सुत सुगंध मोहित मति-रहि गई थकित खरी।
'युगलअनन्यशरण' लालन उत्सव घन प्रेम झरी।।

## पद – 37

सजनी सहेली रसभरी गावो बधाई प्यार से।
देखो दरस पंग परसि के मोहन मनोरम मार से।।
सु घरी सकल निधि सोहनी समुझो सुमति सुख सार से।
दश दिशि सुमंगल घन मनो बरसत सुधा रस धार से।।

Scanned by CamScanner

महाराज महरानी मुदित दें दान–मान उदार से।
बड़भाग सुमन 'अनन्यअली' फूली ललित गुलजार से।।

## पद – 38

सुन्दर राम पालने झूलैं कौशल्या सुन गावैं।
बलि अवतार देव मुनि बंदत राजिव लोचन भावैं।।
दशरथ पलना चारि गढ़ाये सब संदन के साजू।।
हीरा खचित पाट की डोरी रतन जराये बाजू।।
राते चरण कमल कर राते जलद श्याम तन सोहैं।
घूँघुरवारी अलक बदन पर मधुर हास मन मोहैं।।
घर–घर मंगलचार अयोध्या राघौ जन्म निवास।
गावत सुनत होत कृतारथ बलि 'परमानन्द दास'।।

## पद – 39

सुवन कौशिला गोद खेलावत।
मुख छबि निरखत हिय अति हरषत बरषत सुमन प्रमोद बढ़ावत।।
कबहूँ सुकर चिबुक पर परसति लखि रुचि सुचि मुसकावत।
फैल रही पर प्रभा भवन बिच जिय कल कमल खिलावत।।
अवध निवासी भाग्य विभव लखि सुर ब्रह्मादि सिहावत।
इन सम यह कहि–कहि मुद लहि–लहि सुमन वृन्द झरिलावत।।
पुर वासिनी सुवासिनि आवत श्री गुरुदेव मनावत।
होय विवाह लेहिं लोचन सुख युगल विहारिणी गावत।।

Scanned by CamScanner

## पद - 40

हरित बधाई रंग भरी ।।
हरित कुँज घन लता हरित है तरुवर हरित फरी।
हरित भूमि नभ हरित डार पर पंछी हरी-हरी ।।
हरित वसन भूषण हरियाली चामर हरित ढुरी।
हरित सखी मन मुदित बिलोकहिं अतिसय प्यार करी ।।
हरित लाल दशरथ के राजत धनि-धनि आज घरी।
रसिक जनन के सफल मनोरथ हरित हुलास भरी ।।

## पद - 41

हुई अब मेहर पीरों दी। फुरी दुवा फकीरों दी ।।
हुआ अवधेश के फरजन्। नकारे की सुनी गरजन् ।।
फटी छाती मुए दुश्मन। हुए खुश दिल हँसे साजन ।।
शहर की औरतें गावैं। चली सब महल को जावैं ।।
रिकावी हाथ में लीये। मजा की मौजगी हीये ।।
जुरी आई तमाम आलम। हुई जहान में मालुम ।।
खजाने जे जवाहिर के। किये नृप आज बाहिर के ।।
दिये नट भाट बाँभन को। गुनी गायक गुलामन को ।।
भिखारी भूप से कीये। घने गज बाजि सजि दीये ।।
गिनो क्या तुरग ताजी को। दिये मंगल मिजाजी को ।।
गगन में नाचती परियाँ। लगाई फूल की झरियाँ ।।

Scanned by CamScanner

अरगजे सींचियाँ गलियाँ। घरे घर गावती अलियाँ।।
पताका केतु ध्वज सोहैं। कलश बिच बीच छवि गोहैं।।
अमित उरगारि उड़ि आये। नगर छवि देखि जनु छाये।।
अवध नर-नारि रस छाके। भूलि सुधि कौन कित काके।।
'रसिकअलि' सुकृति मित काके। कहत अहि शारदा थाके।।

## पद - 42

आँगन फिरत घुटुरुवनि धाए।
नीलजलद तनु स्याम राम सिसु जननि निरखि मुख निकट बोलाए।
बंधुक सुमन अरुन पद पंकज अंकुस प्रमुख चिन्ह बनि आए।
नूपुर जनु मुनिवर कलहंसनि रचे नीड़ दै बाँह बसाए।।
कटि मेखल बर हार ग्रीव दर रुचिर बाँह भूषन पहिराए।
उर श्रीवत्स मनोहर हरिनख हेम मध्य मनिगन बहु लाये।।
सुभग चिबुक द्विज अधर नासिका श्रवन कपोल मोहिं अति भाए।
भ्रू सुन्दर करुनारस पूरन लोचन मनहुँ जुगल जल जाये।।
भाल बिसाल ललित लटकन वर बाल-दसा के चिकुर सोहाए।
मनु दोउ गुरु सनिकुज आगे करि ससिहि मिलन तम के गन आए।।
उपमा एक अभूत भई तब जब जननी पट पीत ओढ़ाए।
नील जलद पर उडुगन निरखत तजि सुभाव मनो तड़ित छपाये।।
अंग-अंग पर मार निकर मिलि छवि समूह लै-लै जनु छाए।
'तुलसिदास' रघुनाथ रूप गुन तौ कहौं जो बिधि होहिं बनाए।।

Scanned by CamScanner

# श्री जानकी-जन्म बधाई।

## पद - 43

### श्री जानकी जन्म-बधाई

आज श्री मिथिला नगरिया में नौबति बाजत री।।
रामा, घर-घर आनन्द बधैया परम सुख छाजत री।
श्री महराज जनक जी के भाग्य उदित भई री।।
रामा, त्रिभुवन की सुख सीवाँ सिया जू प्रगट भई री।
शिव ब्रह्मादिक तरसत जाकी चरण-रज की।।
रामा, धनि-धनि मिथिला नगरिया सुभाग्य नारी नर की।
निरखत भरि-भरि नैन ललीजू को शोभा री।
रामा, सरसत सुख हिय बीच चरण चित लोभा री।।
'सियाअली' कर जोरि निछावरि माँगति री।
रामा, हिय बिच राखौं ललीजू के छवि मोहि भावत री।।

## पद - 44

आज जनकपुर मंगल माई, शोभा अति सरसाई।
माधव मास शुक्ल नौमी तिथि प्रगटी कुँवरि सकल सुखदाई।।

देव नटी निरतत सुरपुर में बरसत सुमन देव हरषाई।
जय-जय-जय सुर नर मुनि उचरत उत्तम नारि बँधाई।। 2।।

करि असनान दान नृप दीन्हों गो गज बाजि भूमि समुदाई।
कनक वसन संख्या नहिं आवत याचक जन अभिलाष पुराई।। 3।।

Scanned by CamScanner

जो जेहि जाँच्यो सो तेहि पायो विदा किये सब भाँति बनाई।
जनकलली को वदन विलोकत 'तुलसिदास' दरबार रहाई ।। 4 ।।

## पद – 45

आजु रंगीली बजत बधाई।
रंग महल की पवरि बधाई रंग भरी सहनाई ।। 1 ।।

रँग की मूरति कुँवरि प्रगट भइ रँग सो मिथिला छाई।
'कृपानिवास' रँगीली सखियाँ रँग भरि मंगल गाई ।। 2 ।।

## पद – 46

आजु उमग्यौ आनन्द जनकपुर, सुता सुनैना जाई।
कुल की कीरति प्रगटी की धौं, कामलता घर आई ।। 1 ।।

किधौं देवता रिधि सिधि सबकी, मंगल सुख उमताई।
की धौं सकल सुकृत की परतम, सिद्धि विरंचि दिखाई ।। 2 ।।

किधौं अमित लोकनि की सुखमा, मूरति एक बनाई।
ब्रह्मानन्द सिन्धु की कमला, श्री मिथिलापति पाई ।। 3 ।।

किधौं ईशता ईशन की, परमेश्वर की प्रभुताई।
घर आई मिथिलापति के लखि, सकल भाँति समताई ।। 4 ।।

देत दान सनमान परस्पर, देखि धनद सकुचाई।
'रसिकअली' मिथिलेश प्रजा सह, सुरमुनि करत बड़ाई ।। 5 ।।

## पद – 47

आजु बधाई आनन्द छाई, श्री मिथिलापुर सुख सरसाई।
रानी राय सुकृत निधि मथि अति, चन्द्राननि सीता प्रगटाई ।।

Scanned by CamScanner

राजकिशोर चकोर राम दृग, रहस विवस अनुपम रस पाई।
श्रीरसराज रसिक सखि भावहिं, कुमुदिनि नित प्रमुदित विकसाई।।
अलि अवली भलि भाँति कांति लहि, मोद प्रमोद विनोद बड़ाई।
बरस-बरस पर सरस परस्पर, गावत गीत सु प्रीति बड़ाई।।
जड़ चेतन की गाँठि खुलन हित, बरस गाँठि उत्सव अधिकाई।
'युगल बिहारिनि' धनि श्रीसतगुरु, जिन करुना स्वामिनि सिय पाई।।

## पद - 48

आजु तौ बधाई बाजै तिरहुति राय कै।।
उमा रमा जाकी चेरी, आगम निगम टेरी,
सुता सो सुनयना केरी, जनमी है आय कै।
ब्यौम में विमान छाये, देव देखिबे को आये,
फूल बरसाये निज दुन्दुभी बजाय कै।।
धनि-धनि राजा रानी, सकल सुकृत खानी,
बदन विमल बानी, सुयश सुनाय कै।
दुनी में न देखे दुखी, अग-जग जीव सुखी,
हुलसत 'सुधामुखी' गुन गन गाय कै।।

## पद - 49

जनक भवन की शोभा रानी फूले अंगन माई री।
गृह-गृह ते सब सखी सयानी मंगल कलश बनाई री।।
चित्र-विचित्र सुदेश परसपर शोभा बरनि न जाई री।
सजि-सजि चलीं भीर भई वीथिन गजगामिनि अति राजै री।।
अतिहिं छबीली सहज रंगीली पग नूपुर धुनि बाजै री।
सखिन सहित सब सुर पुर नारी शिवा सहित ब्रह्मानी री।।

Scanned by CamScanner

लतनि सहित सोभित भूदेवी बैठी हैं राजदुआरी री।।
सुरबनिता अरु नर की नारी 'अग्रअली' बलिहारी री।।

## पद – 50

जनक नृप रानि सयानी, सिय जनमी जग जानी।
श्रीनिमिवंश चन्द चाँदनि सी, सुधा सुयश बरसानी।।
नाम सुनैना सुभग सोहागिनि, बड़ भागिनि दरशानी।
जाई सुता सलोनी सुन्दरि, रूप गुननि की खानी।।
जाके चरण रेनु को तरसत, उमा रमा ब्रह्मानी।।
सोइ मिथिलापुर गलिन अलिन सँग, खेलि रही मनमानी।।
निज नव बाल कलोल लोल चित, सुखमा सरि सरसानी।
बढ़ी अवध नृप राज सुवन हित, ज्यों शशि कला सोहानी।।
शिशु विनोद सिय जन्म सोहिलो, गावत हृदय जुड़ानी।
'ज्ञानाअलि' मति सालि फूलि फरि, पाय सुयश वर पानी।।

## पद – 51

जनकपुर बाजत रंग बधाई।
मंगल गान वितान तान छवि, निरखि विमान लजाई।।
सुता शिरध्वज कुशध्वज पाई, मन्दिर ध्वज फहराई।
'कृपानिवास' विलास भरे जन, मन की आस पुराई।।

## पद – 52

जनक दुलारी पालने झूलैं।
निरखि बदन सुख सदन लली को अली मातु मन फूलैं।।

Scanned by CamScanner

विधि प्रपंच रचना यह नाहीं इनकी को उपमा सम तूलैं।
जिनके गुण गावत 'नारायण' राम अधिक अनुकूलैं।।

## पद – 53

जनमी जानकी जग जानी।
विमुख विपिन जनु पावक भासी, रसिक सालि हित पानी।।
मातु पिता कीरति सुख सागरि, फल कवि कोविद बानी।
'कृपानिवास अली' की जीवनि, राम रसिक पटरानी।।

## पद – 54

जुग–जुग जीवें साहेबजादियाँ।।
विधि हरि हर प्रसाद मंगल मुद हर हमेश आबादियाँ।
विमल विनोद विलास राज गृह बिन दुख दरद विषादियाँ।।
मनमोहिनी सुता सुठि सोहनि रूप रमन अहलादियाँ।
'युगलअनन्यअली' जीवन धर पुर पद प्रिय नर मादियाँ।।

## पद – 55

जुग–जुग जीवै तेरी बेटी सुनैना रानी।
बड़भागिनि तेरे घर प्रगटी सकल गुणन खानी।।
अचल सोहाग भाग यश भाजन भाविक जन जानी।
जेहि सेवत तजि लोक लाज गृह करम बचन बानी।।
श्री मिथिलापुर नारि निहोरत वचन सुधा सानी।
'ज्ञानाअली' सिय जनम सोहिलो त्रिभुवन सुखदानी।।

Scanned by CamScanner

## पद - 56

ढाढ़ी आयो द्वार रायजू को, ढाढ़ी आयो द्वारि।
बदत बंश बिरदावलि अविचल, गावत वेद पुकारि।। 1।।

नाचत गावत यश अति निर्मल, लावत उक्ति विचारि।
वंश विदित कीन्हों तिहुँ लोका, जनकराज सिरदारि।। 2।।

आगम कथा कहत राजा सो, ढाढ़ी गुननि अपार।
कुँवरि भई सुख सागरि नागरि, वेद स्मृति को सारि।। 3।।

या बालकि गुन सुनो सुनाऊँ, अचरज बात बिचारि।
उद्‌भव स्थिति पालन जाको, भृकुटी विषै निहार।। 4।।

ब्रह्मा शेष महेश आदि बसु, सुर मुनि प्रेम प्रचारि।
सब मिलि सेवत चरन सरोरुह, पावत ना सो पारि।। 5।।

रसिक जननि को रस पावत सुख, अवर अवनि भव टारि।
संत उधारनि पालनि सरनी, लीन मनुज अवतारि।। 6।।

पूरन चन्द्रकला सुख नभ में, दुःख को तिमिर निवारि।
रसिक चकोर नैन फल चाखैं, जाके भाग उदारि।। 7।।

भगति कुमुदिनी घट-घट बिगसैं, निशचर कमल तुसारि।
कोक अधर्म धर्म सब तरसैं, काम कोह छल छारि।। 8।।

सुकृत रावरो सुफल भयो अब, जनमी राजकुमारि।
दाँव हमारी दान तुम्हारो, आजु लेहु फल सारि।। 9।।

बैन मूढ़ मति सुनि ढाढ़ी के, हरषि सहित परिवारि।
जो भावे सो लीने मन भरि धेनु वसन महि भारि।।10।।

Scanned by CamScanner

'कृपानिवास' दास दासिन को, याचक जनक तुम्हारी।
कुँवरि छबीली को मुख देखूँ, नाशै सकल विकारी।। 1।।

## पद – 57

नित नई–नई आनन्द बधाई।
बड़े भाग नृप भवन भले दिन, सुता भई सुखदाई।। 1।।
निमिकुल सुधा–समुद्र रमा सी, प्रगट भई सुषमा गुणरासी।
असुरन मारि सुरन की जीवन, विश्व विशद यश छाई।। 2।।
जीवन जरी जगत की स्वामिनि, अंग–अंग छविद्युति बहु दामिनि।
उमा रमा रति देखि लली छवि, तन–मन–धन बलि जाई।। 3।।
सुन्दरि सब गुण खानि सलोनी, ऐसी कहूँ भई नहिं होनी।
नवषट् चारि अठारह चौदह 'ज्ञानाअलि' यश गाई।। 4।।

## पद – 58

नौमी तिथि दिन मंगल मंजुल माधवमास सुहायो।
मध्य सुवासर लगन महूरत योग नखत सुभ आयो।। 1।।
अतुलित आनन्द जनकसुता को जन्म सुअवसर पायो।
सुफल मनोरथ जानि सखीजन उमगि सुमंगल गायो।। 2।।
चन्दनि बन्दनि लीपि सुआँगनि गजमनि चौक पुरायो।
रचित साथिये नवल नागरी तोरन धुज पुर छायो।। 3।।
बन्दनमाल वितान तने नव सोंधे नगर सिंचायो।
हरषित पुरवासी नर–नारी आनन्द उर न समायो।। 4।

Scanned by CamScanner

रानी राय भये मतवारे विप्र कुटुम्ब बुलायो।
निगम लोक कुल रीति कर्म करि द्विजमुख वेद पढ़ायो।। 5।।

मागध सूत गायक बन्दीजन बंश प्रशंस सुनायो।
देन लगे नृप दान मगन मन देखि धनद मुरझायो।। 6।।

द्वय शत कोटि बाजि गज कोटिक स्यन्दन कोटि सवायो।
अर्बनि खर्बनि धेनु सुमहिषी गिनत गनप सकुचायो।। 7।।

भावत भूषण वसन अमोलक सकल विश्व पहिरायो।
हीरा रतन कनक मनि मुकुता सकल भंडार लुटायो।। 8।।

याचकगन गुन गाय बिरदावलि यथा योग्य सुख पायो।
दशरथ दान सराहत अब लों जनक करनि अधिकायो।। 9।।

पुर के नर-नारी गुरु भूसुर कुल को नेग चुकायो।
करत कुतूहल घुरत निशानन सुर प्रसून झरि लायो।। 10।।

राय वदन फूल्यो जनु पंकज सुख सविता प्रगटायो।
जाति सचिव सेवक जनु मधुकर निकर सुगंध लुभायो।। 11।।

को कहि सकै मोद मन जननी पूरन भाग सुहायो।
जनु उडुगनपति अवलि विलोकत सिन्धु लहर उमगायो।। 12।।

शिव विरंचि सनकादिक नारद वांछित समय सदायो।
'कृपानिवास' विलास जन्म सिय गाय-गाय मन भायो।। 13।।

## पद - 59

**परी यह नौबत की झनकारि, बाजत काके द्वारि।**
**चौंकि-चौंकि चाहत चायन सों, भायनि भरि-भरि नारि।।**

Scanned by CamScanner

नाइन आइ जनाय सुनैना, जाई सिय सुकुमारि।
'कृपानिवास' चली सब आतुर, बिसरी तन सिंगारि।।

## पद – 60

पालने झूलति जनक दुलारी।
कंचन नगन जटिल अति सुन्दर जगमग जोति अपारी।।
मुक्ता झालरि कलित किंकिणी झूमक फबि छवि भारी।
मातु सुकृत फल मुख निरखति अति 'नारायण' बलिहारी।।

## पद – 61

फूल माल लै मालिन आई।
रूप भरी रसमाती गावत मंगल मोद बधाई।।
मैं मालिन हों रावरे घर की बन्दनवार बँधाऊँ री माई।
रानी सुनैना कुँवरि मनोहरि नर–नारिन निज नैन जुड़ाई।।
फूल चमेली लिये अलबेली जनकलली के उर पहिराई।
दान–मान बहु विधि सौं पाई 'सरजूसखी' की मन हरषाई।।

## पद – 62

बज़त बधाई आजु जनकपुर, गृह–गृह मंगल मोदमई।
आदि शक्ति अभेद रघुवर वपु, अलख अगोचर प्रगट भई।।
त्रिगुण रूप त्रैशक्ति हेतु सोइ, करुणा मय जन शोक हई।
अमित लोक कारिणि विस्तारनि, पालनि नासति तेज तई।।
गो द्विज धरणि देव भक्तन हित, दिन प्रति कीरति कलित नई।
जगत जननि पितु जनक तनय सोइ धरणि सुता छवि अतुल छई।

Scanned by CamScanner

अमित भानुभा प्रभा प्रभाकरि, अमित इन्दु सम सौम्य चई।
यह छवि श्री रघुनाथ सहित उर, सब सुख 'जन' वर माँगि लई।।
छिन–छिन नव अनुराग निरन्तर, देखहुँ दृगन सुभक्ति सई।

## पद – 63

बरष गाँठ सियजू की आई, सदन सुनयना बजत बधाई।
मृगनयनी कलकोकिल बयनी, हिलि मिलि गावत हिय उमगाई।।
माधव मास नौमि मंगल प्रद, मोद विनोद मघा झर लाई।
'युगलविहारिनि' पियतमाल लसि, प्रेमलता अभिमत फलपाई।।

## पद – 64

बधाई माई आज री।
कान परी धुनि चौंकि परी सुनि, मानो घन लो गाज री।।
नाचि उठे मन बरहा लोवन, मगन भई गई लाज री।
'कृपानिवास' सिया जननी को, अविचल रहो सुख राज री।।

## पद – 65

बधाई नृप सदन बजन लागी री।।
भई है सिय प्यारी सो सुनि मृदु भारी,
मंगल कर थारी सजन लागी री।।
चली हैं वर भामिनि निरखि छवि स्वामिनि,
छमकि अभिरामिनि छजन लागी री।।
रसिक दृग कुंजै श्याम अली गुंजै,
कृपा गुरु पुंजै जनन लागी री।।

Scanned by CamScanner

'युगलसुविहारिनि' सु तन मन वारिनि,
नाम सुखकारिनि भजन लागी री ।।

## पद – 66

भले दिन जन्म लियो सुखदानी।
निरखि वदन सुख सदन कुँवरि को, मगन भये राय रानी ।।
सकल सिद्धि सम्पदा पदारथ, मुक्ति द्वार अरुझानी।
जनकपुरी में कोइ न सम्हारत, मुक्ति द्वार अरुझानी।
सकल सराहत भाग्य जनक के, जीवन सुफल प्रमानी।
'कृपानिवासअली' की स्वामिनि, शोभा नैन समानी ।।

## पद – 67

माधव मुकुता शुभ दिन नौमी जनम लियो है जनकलली।
जनकराय के द्वारे गावैं नारि सबै आनन्द रली ।।1 ।।
माधवमास शुक्ल पक्ष नौमी योग नखत शुभ वार।
भूतल ते मानो भानु उदय भयो जगमग ज्योति अपार ।। 2 ।।
दिव्य सिंहासन रूप अनूपम धरे सकल शृंगार।
चामर छत्र व्यजन पट भूषन सखी करत विधिचार ।। 3 ।।
धूप दीप नैवेद्य निराजन पूजि नृपति करवाई।
वानी विमल प्रशंसति पुलकित पुनि-पुनि लेत बलाई ।। 4 ।।
जब भयो कन्या कुँवरि सोम रतिं मानुष तन अनुभाई।
भयो सफल जग जानि मुदित मन बोधत मुनिवर राई ।। 5 ।।

Scanned by CamScanner

मुनि देख चरननि के चिन्हनि कहत निगम अवतारी।
अठसिधि नवनिधि चारि पदारथ जनकराज के द्वारी।। 6।।

घुरै निशान नगर नभ जै धुनि हरषै बरषै फूल।
बद विप्र गुरु सुनि-सुनि सुकृत विधि भै सब अनुकूल।। 7।।

करे कुतूहल मंगल गावैं वृद्ध युवा नर नारी।
तोरन कलश वितान पताका मोतियन बन्दनवारी।। 8।।

मिले ब्रह्मऋषि राज सभा सुर सादर शेष-महेश।
बुझि गई ताप सकल जीवन के सुफल भयो सब देश।।9।।

पुर परिजनगन याचकजन जे भई नृप मन्दिर भीर।
चन्दन चारु अगरजा छिरकें बरसैं कुमकुम नीर।। 10।।

गुनि गंधर्व अपछरा नाचत करैं नटी-नट गान।
उघटैं गति नव वेद सप्त स्वर रागिनि तान बँधान।। 11।।

धेनु रतन मनि वसन बाजि गज कहैं नृपति दोउ देहु।
दान मान सनमान सबै मानो बरसन लागे मेहु।। 12।।

बड़ी भई सुख सम्पति नृप के सुखी भयो संसार।
भुवन चतुर्दश के दुख दारिद गये एकहीं बार।। 13।।

तिरहुत देश जनकपुर शुभ गृह आदि शक्ति अवतार।
'सूरकिशोर' करन जग मंगल हरन सकल भव-भार।। 14।।

## पद - 68

मातु सुनयना भाग्य बड़ाई, कोउ न पार कहि पाई।
राम सकल जिय जान कहत श्रुति, राम जान सिय जाई।। 1।।

Scanned by CamScanner

कोटिन चन्द्रप्रभा निवछावरि, कोटिन रतिन लजाई।
किलकनि हँसनि लसनि जननी को, गोद विनोद बढ़ाई।। 2।।

श्री विदेह को सुकृत कल्पतरु सीता फल प्रगटाई।
जो रस रसिक रसीले रघुबर, रहस विवश सरसाई।। 3।।

निर्हेतुकी कृपाकर प्रिय सम, दूजो कहुँ न लखाई।
'युगलविहारिनि' सियस्वामिनि जस उमगि–उमगि सखि गाई।। 4।।

## पद – 69

मालिनि आई रावरे घर की।
कुँवरि सुनैना जाई सुनिकै, नाचत गावत हरषी–हरषी।
कर डलरी हुलरी सी डोलति, फुलरी–फुलरी प्रेम सुवर की।। 1।।

बाँधति बन्दन माल मनोहर, माँगति नेग सुवेगि झगर की।
मानहुँ बेचि शचीपति चापन, दान चुकावति माननि भर की।। 2।।

सुमन विभूषण विविध बनाये, महरानी पहिराय अगर की।
आजु सु दाँव बन्यो मैं धाई, लेउँ बधाई राजकुँवरि की।। 3।।

माँगु सखी मन चाह जो तेरे, मेरे खुले हैं भण्डार कवर की।
'कृपानिवास' कहैं सब पायो, नित गहनो पहिराय हलर की।। 4।।

## पद – 70

रावल रंग बधाई छै।
मंगलमणि महरानि सुनैना सुन्दरि कन्या जाई छै।।
सखियन हिय सरसाई छै मंगल गावत आई छै।
'सियासखी' शोभा त्रिभुवन की जनक नगर पर छाई छै।।

Scanned by CamScanner

## पद - 71

ललो चिरजीयनी तेरी
सुखमय बढ़ो शुक्ल पक्ष शशि ज्यों प्रगट भई येरी ।।
मिथिला मंगल भयो माई री सब विधि सब केरी।
रघुबर प्राण पियारी होइहैं सुनु अशीश मेरी ।।
हौंहू मचलि रहों एहि आँगनि मुख निरखौं ए री।
'जयरामहित' कौ यह दीजै लली चरण चेरी ।।

## पद - 72

लखेरिनि खूब खिलौना ल्याई।
मेरी भेंट लेउ मिथिलेशी मोद भरी हौं आई ।।
चिरजीवौ या बेटी सलौनी भाग बड़े घर आई।
दैहों मैं नित नयो खिलौना जौ लौं खेल सुहाई ।।
दई निछावरि राखि खिलौना भूषण पट पहिराई।
'रसिकअली' घर चली मुदित मन लै बहुबार बलाई ।।

## पद - 73

सहेलिनि गावो बधाई आज ।।
प्रगट भई सर्वेश्वरि सीता, शक्तिन के सिरताज।
देव बन्दिता मुनिगन गीता, भक्ति दायिका राज ।।
सब सुख वरषनि निमिकुल भूषनि रूप अनुपम भ्राज।
'चित्रनिधी' की स्वामिनि सियजू बधू रघुकुल महराज ।।

Scanned by CamScanner

## पद – 74

सिय छबि प्यारी लागै, अतिहिं सलोनी।
कर पल्लव पद गहि मुख मेलति, पालन सुख सरसोनी।।
शुक सारिका मोर मुनियाँ गण, बोलत सुनि किलकोनी।
उचकि–उचकि रहिजात न पावति, तब थकि मृदु स्वर रोनी।।
मातु उछंग गोय फणि मणि ज्यों, बालकेलि दरशोनी।
कबहुँ निरखि शशि वरण अजिर वर, चरण घुटुरुवन गोनी।।
कबहुँ मातु पय प्याय लाय उर, गाय–गाय गुण लोनी।
मुख शशि किरणि सुधा छवि पूरति, पियत दृगन भरि दोनी।।
शुक्ल पक्ष शशिकला बढ़त ज्यों, त्यों नित नव छबि होनी।
'ज्ञानाअलि' यह शिशु विनोद उर, बसत कहै मति कोनी।।

## पद – 75

सुनैना रानी गोद खेलावैं प्यारी जानकी।
मुख चूमति अरु बदन विलोकति, पय प्यावत दे मान की।।
प्राणप्रिया होइहैं सबही की, पटरानी कुल भानु की।
'हरिसहचरी' की प्राण जीवन धन, मूरति मोद निधान की।।

## पद – 76

सुनयना माई सिय सब गुनन भरी।
उमा रमा ब्रह्माणि अंशजा, निगम परत्व करी।।
श्री मनु मननशील अति तप करि, सेयो परम हरी।
सोइ दशरथ नृप अवध ललन भये, सोइ प्रभु इनहिं बरी।।

Scanned by CamScanner

इन्हके नाम अनन्त सन्त कहैं सीता राम अरी।
अति मृदुतर चित नित हित हुलसत, प्रीतम स्ववश करी।।
सत्य–सत्य यह सत्य कहत हौं, जेहि प्रिया दृष्टि परी।
सोइ भव तरिहि सु 'युगलविहारिनि' मिलि गुरु सुफल फरी।।

## पद – 77

सुनैना माई धनि–धनि तेरे सुनैन ।।
जाके वेद भेद नहिं पावत, सोइ सिय प्रगटी एन।
रती–रती भरि लक्ष्मी लव भरि, यह समता कोइ है न।।
रूपराशि तोरी प्रिया लाड़िली, गुन विधि वरनि सकैन।
'युगलबिहारिनि' हिय उमगत लखि, विहँसनि छवि सुनि बैन।।

## पद – 78

सुनैना माई लाड़िली युग–युग जीजै।
गोद प्रमोद विनोद विनोदित अति हित पय पीजै।।
मूरति प्रीति प्रतीति सु पूरित भव भय दुःख छीजै।
'युगलविहारिनि' गावैं सोहिलो सुता सपद रति दीजै।।

## पद – 79

सुनो री बधाई नभ नगर सोहाई भई,
सुभग सलोनी बेटी रानीजू ने जाई है।
सुभग सोहाग जाकी सुखमा अपार छाई,
नेति–नेति निगम अगम करि गाई है।।

Scanned by CamScanner

सोई मिथलेशजू के भवन प्रगट भई,

किये है सफल जाकी जैसी रुचि पाई है।

कबहूँ उछंग मातु पलना झुलावैं गावैं,

'ज्ञानाअलि' देवन बधूटी सुखदाई है।।

## पद – 80

हरषीं मिथिलापुर नारियाँ

बरष बधावन नवल सिया सुनि, महामोद उर धारियाँ।

मंगलपुर चहुँ पास रासि सुख, वीथी, नगर बजारियाँ।।

अति अनुराग जाग सबके हिय, रमा उमा मतवारियाँ।

'युगलअनन्य' बधाई सिय की,-गावत प्रीति प्रचारियाँ।।

## पद – 81

हो मेरी रूप सलोनी जानकी।।

प्रगट भई कुलदीप मनोहर, प्यारी जीवन प्रान की।

बाल मृगी सी बड़ि–बड़ि अँखियाँ, गति गयन्द गुमान की।।

देव दनुज मुनि नाग रमा कहुँ, बेटी न आन समान की।

'सूरकिसोर' बिचारत मुनिजन, होइहिं बधू कुलभान की।।

Scanned by CamScanner

# श्री हनुमज्जन्म बधाई

## पद - 82

आज बजत कहँ आनन्द बधाई श्रवण नवल धुनि आई।
जानि परत अंजनी सुवन भे दसहूँ दिसि मुद छाई।।

ताहि समय नाउनि पावनि मति नेवता नीति सुभाई।
तुरत उठी अति हरष हिये मधि मंगल साज सजाई।।

मंगल थार कनक कर विरचित मनिमय दीप सोहाई।
गजगामिनि कामिनि दामिनि हर निरखि बाल बलि जाई।।

कार्तिक मास सनी चौदस तिथि लगन घरी सुखदाई।
'युगलविहारिनि' सिय सियपिय प्रिय उमँगि-उमँगि यश गाई।।

## पद - 83

आजु जन्म श्री हनुमत जी को श्री कपिवर कवि टीको।
अंजनि गर्भ प्रभंजन नन्दन भ्रम भँजन जननी को।।

पिंगल नैन मैन मद मरदन ऐन सुमोद मही को।
वैन चैनप्रद किलकि सु बोलत खोलत बन्धन जी को।।

मंगल दिन ऋतु शरद सु-मंगल-मंगल कातिक लीको।
मंगल तिथि ग्रह लगन सु स्वाती अशुभ हरन सबही को।।

भक्त शिरोमनि श्री सियबर के दुःख दवन अवनी को।
जासु कृपा लवलेस पाय जन लागत जग सुख फीको।।

Scanned by CamScanner

वरदानी वर वरद प्रेम पर रास निवास थली को।
युगल विहार अपार प्यार प्रद युगल विहारिनि पी को।।

## पद - 84

आवो-आवो री बधाई गावो आज री।
प्रगट भये श्री अञ्जनिनन्दन सुर नर मुनि हित काज री।।
महाशम्भु अवतार परात्पर धार्‌यो वपु कपि ब्याज री।
ब्रह्मादिक आयो मारुत घर जय-जय करत अवाज री।।
रमा आदि गावति कल कीरति सजि सु मनोहर साज री।
बाल विनोद प्रमोद विलोकत गोद लै रतिपति लाज ली।।
प्रबल प्रताप ताप जन नासक डरत दिवाकर आज री।
'रामवल्लभाशरण' करन मुद प्रियवर सिय रघुराज री।।

## पद - 85

आजु तौ बधाई माई अञ्जनी सुवनजू की,
गावत बजावत उमा रमादि नागरी।
कलित कलापै सु अलापैं थापैं दै दै अलि,
भली कली खिली हिय सुछवि उजागरी।।
अनुपम बालक निहारि वारि-वारि निज,
अङ्ग-अङ्ग उमँग सु भरि अनुराग री।
'युगलविहारिनि' विहार सुखसार प्रद,
प्रगटे उदार गुरु रसिक अदाग री।।

Scanned by CamScanner

## पद – 86

आजु मुदित नरदेव मुनी सब सुभग पुत्र अंजनि जायो।।
कार्तिक कृष्ण भूत कुज स्वाती मेष लग्न शुभ भायो।
ब्रह्मादिक सुर पन्नग लोकप सब उर सुख सरसायो।।
वरषत सुमन विबुधगण संकुल अस्तुति करि जै जै धुनि छायो।
मुदित केशरी जन्म हनुमत के 'रसिकअली' यश गायो।।

## पद – 87

अंजनि नन्दन तुम पर वारी रूप शिरोमणि गुन रस भारी।
रसिक जनन को रस बरसायो, जनम लियो सुन्दर सुखकारी।।
कपिकुल मुनिकुल सुरकुल आनन्द गावत मंगल नर अरु नारी।
'कृपानिवास' हनुमत छवि ऊपर कोटि मदन शोभा बलिहारी।।

## पद – 88

अंजनिनन्दन असुर निकंदन जन रंजन हितकारी।
मातु गर्भ अंभोदि चन्द जिमि संत चकोर सुखारी।।
केशरि कश्यप सुकृति प्रभव जनु भक्त कमल सुत मारी।
निश दिन उदय रहत संतन हित खल तम कुम्भ बिदारी।।
ब्रह्मचर्य व्रत उर्द्धरेत गति कपि केहरि बल भारी।
जन्म प्रात रवि अरुण वरण लखि फल भक्षणहि विचारी।।
जाके चिबुक चोट चूरन भयो कुलिसहुँ रद मद हारी।
विकल विलोक प्रकोपि प्रभंजन आपन वेग निवारी।।

Scanned by CamScanner

लोकपाल जम काल पुरन्दर सब अस्तुति अनुसारी।
निज–निज अस्त्रन अभय कियो तब अजर अमर वपु धारी।
'लालमणी' हनुमान कृपा की नित उठि पंथ निहारी।।

## पद –98

अञ्जनी लालन गोद खेलावैं।
निरखि–निरखि माधुरी वदन सिसु हरषित दूध पिलावैं।।
हलरावैं लावैं हिय पुनि–पुनि कलित–ललित गुन गावैं।
मुदित होय पालने झुलावैं आनन्द उर न समावैं।।
मन भावती निवछावरि लै–लैं सबै असीस सुनावैं।।
करिहैं सुजन मनोरथ पूरन खलगन मद सु नसावैं।।
बढ़हु वेगि प्रिय पवन सुवन हम नेग़ लेब मन भावैं।
प्रेम भक्ति आसक्त रहै मन 'युगलविहार' लखावैं।।

## पद 90

चलो नाचो री आली अञ्जनी अँगना।।
श्री सियाराम प्रेम की मूरति प्रगटे श्री हनुमत ललना।
अब दुख दूरि भये सबही को रस आनन्द झरत झरना।।
सुर नर मुनि सब मगन भये हैं बरसत सुमन बजत गहना।
'सियाअली' कपिपति निवछावरि माँगो प्रेम भक्ति गहना।।

## पद – 91

नौबत नगर नये–नये कौतुक, नागरि मंगलचार उचारति।
नेह नयो नर नारिन के उर, नव सुख भरि घर सर बस वारति।।

Scanned by CamScanner

नव–नव चौक पुराय गाय शुभ, नवल वितान कलश रस धारति।
'कृपानिवास' अली हनुमत पर हर्षित आरति मुदित उतारति।।

## पद – 92

श्रीहनुमत अवतार अखिल पति, जग तारक सुर सन्त सहायक।
प्रगट भये गोलोक धाम ते, गुह्य महारस रसिकन दायक।।
गौतम दुहिता प्रण प्रतिपालक, बालक भाव चराचर नायक।
भुव अवतार जिते भुज आश्रित, भूरि भार हर भजबे लायक।।
त्रिगुण ईशवर ईश गुणाकर, गुणातीत, परतीत, बढ़ायक।
ज्ञान योग व्रत परा भक्ति प्रद काल कर्म माया मद मायक।।
अष्टादश षट् चार भारती, सुयश उचारत विपुल विनायक।
श्रीरघुपति चतुरांश पायुसी, निगम संस खलबंशनि घायक।।
पर तें पर परतत्त्व जनकपुर, जनकसुता वर बसति सुबायक।
उज्ज्वल रस सु विलास लसत मृदु, हास दयाकर बास बसायक।।
मुक्ति जिती जे भुक्ति नाक भुव, ऋद्धि–सिद्धि सुख सर्व सुपायक।
आचारज आरज गुरु गौरव विद्या मूल अविद्या हायक।।
चन्द्र सूर ग्रह अनिल अनल जल आयसुवर्ती बसुधा धायक।
अमल अदोष अजन्म अगोचर राम हितारथ जन्मो जायक।।
षड् भगवान भाग्य भर भय हर भाव विनोदी भक्तन भायक।
'कृपानिवास' उपासक गायक करुणाकर कवि कोविद गायक।।

Scanned by CamScanner

## पद – 93

हनुमत झूलैं पालनवाँ।
केशरि कपि के कनक शिखर पर रतनन जटिल झुलनवाँ।।
अञ्जनि हरषि झुलावति गावति प्रेम पयोधि मगनवाँ।
'लालमणी' वह समय सुरति करि सुधि बुधि रही न अपनवाँ।।

## पद – 94

हिय उमगि–उमगि हरषाय बधाई गावो री।
श्री अंजनि गृह जन्म लियो है श्री कविवर कपिराय।।
मंगल दिन ग्रह लगन सुस्वाती मंगल गृह–गृह छाय।
मंगल कातिक मास रास रस मंगल चौदसि भाय।।
मंगल मूरति आप प्रगट भई श्री सियबर हित आय।
मिट्यो अंगल मूल सूल जन लंक संक अकुलाय।।
सुर सुरतिय हिय हरषि सुमन चय गगन–मगन झरिलाय।
'युगलविहारिनि' अवध महल सिय बाजत आनन्द बधाय।।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

# श्री लक्ष्मणकिलाधीशजी द्वारा लिखित एवम् प्रकाशित पुस्तकों की सूची

| | |
|---|---|
| श्री वसन्त विहार पदावली | 20/- |
| श्री मैथिली विवाह पदावली | 30/- |
| श्री झूलन विहार पदावली | 20/- |
| श्री सीतातत्व मीमांसा | 15/- |
| श्री हनुमदुपदेश | 20/- |
| अजामिलोपाख्यान | 20/- |
| भ्रमरगीत | 15/- |
| गोपीगीत | 25/- |
| श्री वैष्णव दर्शन | 15/- |
| श्री रसिक प्रकाश भक्तमाल | 15/- |
| गीता तात्पर्य | 15/- |
| श्रीनाम कान्ति | 30/- |
| श्रीधाम कान्ति | 15/- |
| श्रीमद्वाल्मीकि रामायण : एक मीमांसा | 100/- |
| रघुवर गुण दर्पण | 15/- |
| वाल्मीकि रामायण : तात्पर्य निर्णय | 20/- |

* पुस्तक प्राप्ति स्थान *

**श्री सीताराम सन्देश कार्यालय**

श्रीलक्ष्मणकिला, श्रीअयोध्याजी

जिला-फैजाबाद (उ.प्र.)

* प्रकाशक *

**स्वामी सीतारामशरण सेवा संस्थान**

श्री हनुमान धाम, श्रीकृष्णबलराम हॉल, आरियाना मेन रोड, पटना, बिहार

मो. : 09431651405

Printed At : Deepak Press Gwalior : 09425113555

Scanned by CamScanner